भूतडामर तन्त्रम्

(मूल एवं हिन्दी अनुवाद सहित)

सम्पादक एवं हिन्दी अनुवादक
कृष्ण कुमार राय



प्राच्य प्रकाशन, वाराणसी

तन्त्र ग्रन्थमाला नं० १९

भूतडामर तन्त्रम्

(मूल एवं हिन्दी अनुवाद सहित)

सम्पादक एवं हिन्दी अनुवादक

कृष्ण कुमार राय

प्राच्य प्रकाशन, वाराणसी

संस्करण १९९३

प्रकाशक :

प्राच्य प्रकाशन

पोस्ट बाक्स नं० २०३७

७४-ए, जगतगंज

वाराणसी - २२१००२ (भारत)

मूल्य ४०.०० रुपये

प्रदीप कुमार राय, प्राच्य प्रकाशन, वाराणसी द्वारा प्रकाशित
एवं अनूप प्रिंटिंग वर्क्स, जगतगंज, वाराणसी द्वारा मुद्रित।

भूमिका

hhgjgg

मन्त्रशास्त्र भारतीय विद्याओं की एक अनुपम निधि है। सर्वभूतेश्वर देवाधिदेवमहादेव इसकी प्रेरणा के मूल श्रोत हैं। कलियुग में समस्त प्राणियों के अल्प ज्ञान एवं सामर्थ्य का उन्हें पूर्वाभास था। अतः कम परिश्रम से ही भक्तों की कार्य-सिद्धि के लिए उन्होने तन्त्रशास्त्र का उपदेश दिया। इसी कारण वश तन्त्रशास्त्र की महिमा का सर्वत्र उल्लेख मिलता है। जब कालचक्र के प्रभाव से यह शास्त्र लगभग लुप्त सा हो गया तब महर्षियों, सिद्ध योगियों एवं महात्माओं ने तपोबल द्वारा मन्त्रों तथा यन्त्रों को अर्जित करके उसमें दैवी शक्तियों को स्थापित कर सामान्य-जन के उपकारार्थ उपलब्ध कराया।

भूतडामर तन्त्र प्रथम बार नागरीलिपि में भाषा-अनुवाद सहित प्रस्तुत किया जा रहा है। भूतडामर तन्त्र में पाठों का क्रम इस प्रकार है: सम्पूर्ण ग्रन्थ सोलह पटलों में है। प्रथम पटल उन्मत्त भैरवी एवं उन्मत्त भैरव के सम्वाद के रूप में आरम्भ होता है जिसमें यक्ष, मनुष्य, भुजग, किन्नर, प्रथम, नापिकादि के सिद्धि लाभ तथा रक्षा के प्रकरण मिलते हैं। द्वितीय पटल में समस्त देवताओं एवं भूतादिगणों के मारण का विस्तुत उल्लेख है। तृतीय पटल में सुन्दरी साधना, चतुर्थ पटल में पिशाचिनी चेटिका साधना, पंचम पटल में अष्टकात्यायनी साधना, षष्ठ पटल में प्रथमाधिपक्रोधराज साधना, सप्तम पटल में कैङ्करी साधना, अष्टम पटल में चेटिका साधना, नवम पटल में भूतिनी साधना, दशम पटल में अप्सरा साधना, एकादश पटल में यक्षिणी साधना, द्वादश पटल में अष्टनागिनी सिद्धि साधना, त्रयोदश पटल में किन्नरी सिद्धि साधना, चतुर्थदश पटल में परिषन्मण्डल क्रोध ध्यान विधि, पंचमदश पटल में अपराजितादिमुख यक्षसिद्धि साधना तथा षोडश पटल में योगिनी साधना के सन्दर्भ में क्रमशः विस्तृत विधियों का उल्लेख मिलता है। इस प्रकार भूतडामर तन्त्र समाप्त होता है। इसमें

उल्लिखित सभी पद्धतियाँ सरल तथा रचनात्मक हैं। इनके प्रयोग सम्भव तथा मानव मात्र के लिये कल्याणकारी सिद्ध हो सकते हैं, यह निर्णय सुधी पाठकों पर निर्भर करता है।

इस भूतडामर तन्त्र के अतिरिक्त एक भूतडामर तन्त्र की पाण्डुलिपि और प्राप्त हुई है। उसकी विषय वस्तु इससे बिलकुल भिन्न है। सम्पूर्ण पुस्तक शिव और रावण सम्वाद पर आधारित है। कालान्तर में उसे भी प्रकाशित करने का संकल्प मन में है। यह भूतडामर तन्त्र प्रथम उल्लास से अट्ठाईस उल्लास तक है।

इस अत्यन्त दुर्लभ तन्त्र को आपके सम्मुख प्रस्तुत कर रहा हूँ। इस ग्रन्थ में यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो सुधी पाठकों से निवेदन है कि मुझे अवगत कराने की कृपा करें। अगले संस्करण में उसका समाधान या परिमार्जन करने का प्रयास किया जायगा।

कृष्ण कुमार राय
अध्यक्ष
प्रेमचन्द महताब राय शोध संस्थान
लमही, वाराणसी

विषय सूची

ਮੂਲ ਛਾਸਰ
ਲਨਭਸ

भूतडामर तन्त्रम्

प्रथमः पटलः

॥ ॐ नमः क्रोध भैरवाय ॥

व्योमवक्त्रं महाकायं प्रलयाग्निसमप्रभम् ।
अभेद्य भेदकं स्तौमि भूतडामरनामकम् ॥ १ ॥

आकाशवदन, विशालकाय, प्रलयकाय, अनलसम, विभासम्पन्न तथा अभेद्यभेदकारी भूतडामर नामक उन्मत्तभैरव का स्तवन कर रहा हूँ ॥ १ ॥

त्रैलोक्याधिपतिं रौद्रं सुरसिद्ध नमस्कृतम् ।
उन्मत्त भैरवं नत्वा पृच्छत्युन्मत्तभैरवी ॥ २ ॥

उन्मत्त भैरवी त्रिभुवनाधीश्वर देवसिद्धसेव्य रुद्ररूपी उन्मत्त भैरव को नमस्कार करके उनसे पूछ रही हैं ॥ २ ॥

भैरव्युवाच ।

कथं यक्षा नरा नागाः किन्नराः प्रमथादयः ।
जम्बुद्वीपे कलौ सिद्धिं यच्छन्त्येता वराङ्गनाः ॥ ३ ॥

भैरवी कह रही हैं—

हे भैरव ! कलिकाल में जम्बुद्वीप में यक्ष, मनुष्य, भुजग, किन्नर, प्रमथ, नायिकादि सभी किस प्रकार सिद्धि लाभ कर सकते हैं ॥ ३ ॥

येऽन्ये पापरता मिथ्यावादिनः शीलवर्ज्जिताः ।
सालस्या ये नरास्तेभ्यः साहाय्यं कुरु त्वं स्वयम् ॥४॥

जो मनुष्य पापिष्ठ, मिथ्यावादी, दुःखशील एवं आलसी हैं। वे सकल मानव अपनी रक्षा किस प्रकार कर सकते हैं ॥ ४ ॥

केनोपायेन नश्यन्ति कलौ दुष्टाघराशयः ।
लभ्यन्ते सिद्धयः सर्वा मोक्षपद्धतयः शुभाः ॥

सिद्धयोऽप्यनिमाद्याश्च महापातक-नाशिकाः ॥ ५ ॥

इस कलि से दुष्ट पापराशि किस प्रकार विनष्ट हो। सर्वप्रकार मङ्गलदायक और अभिलषित मोक्ष पद्धति क्या है जिससे महापापराशि नष्ट हो और किस प्रकार अणिमादि अष्ट सिद्धियों का लाभ प्राप्त किया जाय ॥५॥

अन्यान्नाशनतः पापमन्यस्त्री गमनादिजम्।
कथं नश्यन्ति देवेश हेलया नरकं तमः ॥ ६ ॥

हे देवदेवेश ! अपर जाति के अन्न भोजन और अपर जातिके स्त्रीगमन से उत्पन्न पापसमूह किस प्रकार नष्ट हो ? किस प्रकार तमिस्र नरक की यन्त्रणा का नाश हो ? ॥ ६ ॥

चन्द्र-सूर्य-प्रभो भूत्वा तिष्ठे द्रुद्रपुरे चिरम्।
सुर-सिद्ध-सर्प-भूत-यक्ष-गुह्यक-नायिका ॥ ७ ॥

किस प्रकार देव, सिद्ध, सर्प, भूत, यक्ष, गुह्यक तथा नायिका सभी चन्द्रसूर्यवत् तेजः समन्वित होकर रुद्रपुर में चिरकाल तक अवस्थान कर सकते हैं ॥ ७ ॥

दूरादागत्य कामार्त्ता वलादालिङ्गयन्तिकम्।
ब्रह्मेशशत्रुप्रमुखा मारिता वा कथं प्रभो।
पुनः केन प्रकारेण मृताजीवन्ति निर्ज्जराः ॥ ८ ॥

किस प्रकार से कामातुरा स्त्रीगण दूर से आकर बलपूर्वक आलिङ्गन करती है ? प्रभो ! किस उपाय से ब्रह्मा शिव-इन्द्र प्रमुख देवगणों को भी विनष्ट किया जा सकता है ? किस प्रकार से मृत व्यक्ति पुनर्जिवीत होकर अजरामर होता है ? यह सब कृपा करके मुझे बतायें ॥ ८ ॥

श्रुत्वैतद्वल्लभावाक्यमुन्मत्तभैरवोऽसकृत्।
सन्तुष्टो भैरवीं प्राह सर्वं विनयपूर्वकम् ॥ ९ ॥

उन्मत्त भैरव प्रिया के इन सब वाक्य को बार बार सुनकर प्रशन्तचित्त होकर भैरवी से विनयपूर्वक समुदय कहने लगे ॥ ९ ॥

उन्मत्तभैरव उवाच।

क्रोधाधिपं व्योमवक्त्रं वज्रपाणिं सुरान्तकम्।
वक्ष्ये नत्वा ततस्तत्र भूपतिं भूतडामरम् ॥
सर्वपाप-क्षयकरं दुःख-दारिद्र्यघातकम्।
सर्वरोग-क्षयकरं सर्वविघ्न विनाशनम् ॥
महाप्रभाव जननं दमनं दुष्टचेतसाम्।

महाचमत्कारकरं स्थित्युपत्तिलयात्मकम् ॥
ज्ञान मात्रेण देवेशि ! भुक्तिमुक्तिफलप्रदम् ॥ १० ॥

उन्मत्त भैरव कहने लगे—भैरवी ! मैं नमस्कार करके क्रोधपति, गगनमुख, वज्रहस्त, देवगणों के विनाशक, भूपति भूतडामर को विस्तृत रूप से बताऊँगा इससे सभी पाप नष्ट होते हैं, दुःख तथा दारिद्रय दूर होता है, सभी प्रकार का रोग नष्ट होता है। सभी प्रकार के विघ्न का विनाश होता है, महाप्रभाव की वृद्धि होती है तथा दुष्ट चित्त समूहों का दमन होता है। यह भूतडामर अत्यन्त चमत्कार जनक है, इसके शक्ति से सृष्टि, स्थिति तथा प्रलय हो सकता है। इस भूतडामर के ज्ञानमात्र से ही इस लोक में विविध प्रकार भोग तथा परकाल में मुक्तिलाभ होता है ॥ ११ ॥

तव स्नेहान्महादेवि ! कथ्यतेऽकथ्यमद्भुतम् ।
यत् सुरै दुर्लभं स्वर्गे मर्त्ये मर्त्यैर्मुमुक्षुभिः ॥
नागलोके तथा नागैस्तच्छृणुष्व मम प्रिये।
यस्य ज्ञानं विना क्वापि नारीणां निग्रहो भवेत्।
यक्षिण्यो नैव गच्छन्ति सिद्धिमिष्टां शृणुष्व तत् ॥ ११ ॥

महादेवि ! मैं तुम्हारे स्नेह के वशीभूत होकर यह अत्यन्त गोपनीय और अद्भुत विषय कह रहा हूँ, जो स्वर्ग के देवगणों, मृत्युलोक के मुमुक्षु मानव गण और नागलोक समूहों के लिये भी दुर्लभ है। हे प्रिये ! तुम इसको श्रवण करो क्योंकि इसके ज्ञान के बिना नारियों के निकट निग्रह एवं यक्षिणियों को अभिलषित सिद्धि लाभ नहीं होता है ॥ ११ ॥

इति भूतडामरे महातन्त्रे प्रथमः पटलः ॥ १ ॥

द्वितीयः पटलः

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि सुगोप्यं मनुमुत्तमम् ।
सुराणामथ भूतानां मारणं येन सिध्यति ॥ १ ॥

मैं अत्यन्त गोपनीय उत्तम मन्त्र कह रहा हूँ। जिसके द्वारा देवता एवं भूतगणों का भी मारण कार्य सिद्ध होता है ॥ १ ॥

विषं वज्रज्वालेन हनयुग्मं ततः परम् ।
सर्वभूतान ततः कूर्चमस्त्रान्तं मनुमीरितम् ।
अस्य विज्ञानमात्रेण क्रोधेशाद्रोमकूपतः ।
वज्रज्वालाः प्रजायन्ते शुष्यन्ति प्रमथादयः ।
ब्रह्मेशशक्रप्रमुखा नीताः स्युर्यमशासनम् ॥ २-३ ॥

"ॐ वज्र-ज्वालेन हन हन सर्वभूतान् हूँ फट्"—इस मन्त्र के चैतन्य होने मात्र से क्रोध भैरव के रोम कूपों से वज्रज्वाला जन्म लेता है और प्रमथादि भूतगण विशुक होते हैं। इससे ब्रह्मा, शिव, इन्द्र सदृश देवगण भी यम-शासन के आधीन हो जाते है ॥ २-३ ॥

ततः सविस्मयं प्राहु रुद्राद्याः क्रोधभूपतिम् ।
पश्चिमे समये काले नामीषां निग्रहं कुरु ।
सर्वे भूताश्च भूतिन्यः करिष्यन्ति भवद्वचः ॥ ४ ॥

क्रोध-भैरव के उन्मत्त भैरवी से इस प्रकार कहने पर, रुद्रादि देवगण विस्मित होकर क्रोध भैरव से कहने लगे, भैरव। इस समय आप इन लोगों का निग्रह मत कीजिए। सभी भूत तथा भूतिनी आपके वाक्य का प्रतिपालन करेंगे ॥ ४ ॥

विज्ञानाकर्षिणी मन्त्रं भाषतेऽतोऽतिविस्मिता ।
तारं ब्रह्ममुखे प्रोक्त्वा शरयुग्मान्तमोरितम् ॥
अस्य भाषितमात्रेण वज्रज्वाला विनिःसृताः ।
मृतसञ्जीवनी विद्या मृतप्राणप्रदायिनी ।
भूतानां दुरितध्वं सो भवेदस्य प्रभावतः ॥ ५-६ ॥

अब अत्यन्त विस्मय जनक विज्ञानाकर्षिण नामक मन्त्र कह रहा हूँ: "ॐवज्रमुखे सर सर फट्"—इस मन्त्र के उच्चारण करते ही वज्र-भय का

निवारण होता है। यही मृत सञ्जीवनी विद्या है, इसी मन्त्र के द्वारा मृत व्यक्ति जीवित होता है, और इसी के प्रभाव से भूतादि विनष्ट होते हैं ॥५-६॥

अथापराजितानाथो नाशपादौ प्रगृह्य च।
शिरसा वन्दयित्वा च त्राता त्वं भगवान् परः॥
त्राहि मां भूतनिचयं जम्बुद्वीपे कलौ युगे ॥ ७ ॥

इसके पश्चात भूतनाथ, उन्मत्त भैरव का पादग्रहण एवं नमस्कार करके कहने लगे, आप परित्राता षडैश्वर्यशाली पुरुष प्रधान हैं। जम्बुद्वीप में, कलियुग में समस्त प्राणिवर्गों को तथा मुझे परित्राण कीजिए ॥ ७ ॥

रसं रसायनं सौस्थं स्वर्ण-वैदुर्य-मौक्तिकम्।
हंसेन्दुकान्तादिमणिगन्धवस्त्रञ्च काञ्चनम्।
भोजनं कुसुमं क्षेमं वरं दास्याम ईप्सितम् ॥ ८ ॥

उन्मत्त भैरव कहने लगे—रस, रसायन (महोषधि) सुखभोग, सुवर्ण, विदूरपर्वतजात मणि (नीलकान्त) मुक्ता उत्कृष्ट वस्तु चन्द्रकान्तमणि आदि मणि, गन्ध द्रव्य, वसन, (वस्त्र) आहार्य (खाने का वस्तु), पुष्प, मोक्ष आदि अभीष्ट वर मैं तुम्हें प्रदान करूँगा ॥ ८ ॥

भूतिन्यश्चेटिकाः क्रोधजापिनां चेटका वयम्।
राजा हि तस्करभयं जरानिष्टाघसम्भवम्॥
भूतप्रेतपिशाचादीन्नाशयामः प्रत्यनतः ॥ ९ ॥

क्रोधभैरव मन्त्र का जो लोग जप करते हैं, हम लोग उन लोगों का भृत्य एवं भूतिनीगण दास हो जाते हैं। जरा, अनिष्ट तथा पाप से सम्भूत भय, राजा एवं तस्कर भय, भूत, प्रेत पिशाच आदि सभी अशुभ को हम अति यत्नपूर्वक विनष्ट करूँगा ॥ ९ ॥

यदि सिद्धिं न यच्छन्ति भूतिन्यः साधकं प्रति।
स्फोटयामि तदा नूनं क्रोधवज्रेण मूर्द्धनि।
क्वचिदग्नौ महाघोरं नरके पातयामि च ॥ १० ॥

यदि भूतिनी, यक्षिणी, पिशाचादि साधकों के प्रति सिद्धि प्रदान नहीं करते हैं, तब निश्चय ही तत्क्षणात् उन लोगों का मस्तक क्रोधवज्र के द्वारा स्फाटित करता हूँ अथवा अग्नि में अथवा महाघोर नरक में निक्षेप करता हूँ ॥ १० ॥

एवमस्त्वति ताः प्राहुर्विस्मिताः क्रोधभूपतिम् ॥ ११ ॥

महादेवादि देवगण विस्मित होकर क्रोधभैरव से कहने लगे—आप जो कह रहें हैं, वही हो ॥ ११ ॥

ततो नृणां हितार्थाय प्रथमाद्युपकारकम्।
क्रोधराजः पुनः प्राह मृतसञ्जीवनीमनुम् ॥ १२ ॥

तदुपरान्त क्रोधभैरव मनुष्यों के हितकारक एवं प्रमथादि के उपकारक मृतसञ्जीवनी मन्त्र को बोलते हैं ॥ १२ ॥

पञ्चरश्मिं समुद्धृत्य संघट्टेतिद्विधा पदम्।
अस्य भाषितमात्रेण मूर्च्छिता भूतदेवताः।
स्तम्भिता वेपमानाश्च उत्तिष्ठन्त्यति विह्वलाः ॥ १३ ॥

"ॐ संघट्ट-संघट्ट मृतान् जीवय स्वाहा"—इस मन्त्र के उच्चारण करने मात्र से भूतादि समस्त देवता मूर्च्छित हो जाते हैं और जब उठते हैं तो स्तम्भित, कम्पित एवं विह्वल होते हैं ॥ १३ ॥

अथ प्राह महादेवो भूपतिं तं मुहुर्मुहुः।
क्रोधाधिपं वज्रपाणिं हित्वा त्राता न विद्यते ॥ १४ ॥

इसके पश्चात महादेव, क्रोधभैरव से बार-बार कहने लगे। वज्रपाणि क्रोधभैरव आप के अलावा दूसरा त्राणकर्ता और कोई भी नहीं है ॥ १४ ॥

अथोवाचाशनिधरो माभैर्माभैर्महेश्वरम्।
तवान्येष्याञ्च देवानां हितार्थं भूतनिग्रहम्।
करिष्यामि कलौ जम्बुद्वीपस्थानां नृणामपि ॥ १५ ॥

इसके बाद वज्रपाणि क्रोधभैरव, महादेवजी से कहने लगे, भयभीत मत होना; तुम्हारा तथा अन्य सभी देवगणों का तथा जम्बुद्वीपस्थ मनुष्यों के हितों के लिये कलियुग में भूतनिग्रह करूंगा ॥ १५ ॥

रक्षास्मानसकृत प्राहुः प्रमथाश्चाप्सरोऽङ्गनाः।
नागिन्यो यक्षकामिन्यः क्रोधेशं प्रणिपत्य च ॥ १६ ॥

प्रमथगण, अप्सरागण, नागिनी, यक्षिणी आदि अङ्गनागण क्रोधभैरव को प्रणाम करके पुनः कहने लगे—अब हम लोगों की रक्षा कीजिये ॥ १६ ॥

अथ वज्रधर प्राह भैरवो रोमहर्षणः।
सुन्दरी त्रिपुरे भद्रकालि भैरवचण्डिके।
मज्जापिनां नृणां यूयमुपस्थापनं करिष्यथ।
स्वर्णाद्याकाङ्क्षितान्नानि जापिनेऽपि प्रदास्यथ ॥ १७ ॥

इसके पश्चात कुलीशपाणि लोमहर्षण क्रोधभैरव कहने लगे—सुन्दरि ! त्रिपुरे ! भद्रकालि ! भैरवचण्डिके ! तुम सभी मेरे जापक नरगणों की उपासना करो तथा उन सबों को काञ्चन, अभिलषित भक्ष्य द्रव्य वस्तु आदि प्रदान करो ॥ १७ ॥

यक्षिण्योऽप्सरो देवकन्यका नागकन्यकाः ।
दास्यामो देवदेवेश निश्चितं क्रोधजापिनः ।
करिष्याम उपस्थानं दास्यामः प्रार्थितं धनम् ॥
यदि कूर्मोऽन्यथा नष्टाः भवामः सकुलं प्रभो ।
सर्वकर्म करिष्यामो दासत्वं क्रोध जाविनाम् ।
यद्यन्यथा करिष्यामो भगवान् मूर्ध्नि दारयेत् ।
शतधा क्रोधवज्रेण नरके वा निपातयेत् ॥१८-२०॥

यक्षिणी, अप्सरा, देवकन्या तथा नागकन्याए कहने लगीं—हे देवदेवेश ! हम सभी आपके उपासक वर्गों की उपासना करेंगे एवं उन सभी को प्रार्थित धन भी प्रदान करेंगे। हे प्रभो ! यदि हम सभी आपके वचन का अन्यथा करते है तो कुल समेत हम लोग नष्ट हो जाय। जो लोग क्रोधभैरव मन्त्र की उपासना करते हैं। हम सब उन सभी के दासी होकर सभी कार्य साधन करेंगे। हम यदि आपके वचन का अन्यथा आचरण करते हैं, तो आप हम सभी के मस्तक क्रोधवज्र के द्वारा शतधा विदीर्ण कर दें। अथवा हम सबको नरक में निपातित कर दें ॥ १८-२० ॥

साध्वित्युक्त्वा वज्रपाणिः पुनः प्राह सुरानिति ।
करिष्यथेत्युपस्थानं नराणां क्रोधजपिनाम् ।
वैदूर्यादिमणीन् स्वर्णमुक्ता द्रव्याणि दास्यथ ॥ २१ ॥

अशनिधर क्रोधभैरव देवगणों के प्रति कहने लगे, तुम सब साधु, नायिकागण ! जो सब मनुष्य क्रोधभैरव का मन्त्र जप करते हैं तुम सब उन सबों की उपासना करो एवं नीलकान्तादि मणि तथा कनकमौक्तिक इत्यादि द्रव्य सभी द्रव्य उन सभी को अर्पण करो ॥ २१ ॥

एवमस्त्विति तं नत्वा क्रोधराज सुरान्तकम् ।
गता आज्ञां शिरः कृत्वा स्वस्थानं यक्षनायिकाः ॥ २२ ॥

यक्षिगण 'इसी प्रकार हो' कहकर सुरासुरादिध्वंसकारी क्रोधभैरव को नमस्कार करके उनके आदेश मस्तक में धारण करके स्वस्थान में प्रस्थान करने लगे ॥ २२ ॥

तेनेष्टासिद्धिदाः सर्वा जम्बुद्वीपे कलौ युगे ॥ २३ ॥

इस प्रकार कलिकाल में जम्बुद्वीद में नायिकागण अष्टसिद्धि प्रदायिनी हुये हैं ॥ २३ ॥

इति भूतडामरे महातन्त्रे द्वितीयः पटलः ॥ २ ॥

तृतीयः पटलः

उन्मत्त भैरव्युवाच । भगवान् !

सुन्दरी मन्त्रसाधनं वद मे प्रभो ।
मन्त्रोद्धारं तथा मुद्रामर्च्चनं जप पद्धतिम् ॥ १ ॥

उन्मत्त भैरवी कहने लगी—भगवन् ! सुन्दरी देवी का मन्त्र साधना, मन्त्रोद्धार, मुद्रा तथा अर्चना-पद्धति मुझे बताईये ॥ १ ॥

उन्मत्तभैरव उवाच ।

एकवृक्षे देवगेहे वने वज्रधरालये ।
निम्नगासङ्गमे वापि पितृभूमावथापि वा ।
सिध्यन्ति भूतभूतिन्यां नृणामिष्टफलप्रदाः ॥ २ ॥

उन्मत्त भैरव कहने लगे—

किसी वृक्ष के नीचे, देवालय में, वन में, शिव मन्दिर में, नदी के सङ्गम पर अथवा श्मशान में बैठकर उपासना करने से भूत-भूतिनी इत्यादि की सिद्धि होती है, और मनुष्य आदि को इष्ट फल प्राप्त होता है ॥ २ ॥

मन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि यथावदवधारय ।
आदिबीजं समुद्धृत्य महापदमनन्तरम् ।
भूतशब्दात् कुलपदं सुन्दरीकूर्च्चं संयुतम् । (१)
अनादि बीजमुच्चार्य ततो विजयसुन्दरी ।
ततो रुद्रवधूबीजं कलायुक्तं द्वितीयकम् । (२)
आदि बीजं समुद्धृत्य विमलेति पदन्ततः ।
सुन्दरीति पदं पाशः सविसर्गस्तृतीयकः । (३)
ब्रह्मबीजं समुद्धृत्य सुन्दरीपदमुद्धरेत् ।
षडक्षरो मनुः प्रोक्तः सकूर्च्चं युगलो मतः । (४)
हालाहलं समुद्धृत्य मनोहरी पदन्ततः ।
सुन्दरीधीः समायुक्तः पञ्चमोऽयं महामनुः । (५)
बहुरूपिण माभाष्य भूषणेति पदन्ततः ।
सुन्दरीपद माभाष्य कामबीजं परो मनुः । (६)

हालाहलं समादाय ततो धवलसुन्दरी।
ततः प्राथमिकं बीजं सविसर्गन्तु सप्तमः। (७)
विषाच्चक्षुमघुपदं ततो मत्तपदं लिखेत्।
सुन्दरी पदतो वह्निजाया चण्डिकयात्विता। (८) ॥३॥

अनन्तर यथावत् मन्त्रोद्धार कहूँगा, मनः संयोग करके श्रवण करो। ॐ महाभूतकुलसुन्दरी हुं (१) ॐ विजयसुन्दरी ह्रीं अं (२) ॐ विमलसुन्दरी आः (३) ॐ सुन्दरी हुं हुं (४) ॐ नमोहरी सुन्दरी धीः (५) ॐ भूषणसुन्दरी क्लीं (६) ॐ धवल सुन्दरी ह्रीं (७) ॐ मधुमत्तसुन्दरी स्वाहा ह्रीं, इन सब मन्त्रों के कार्य बाद में कथित होगा (८) ॥ ३ ॥

एवमष्टो महाभूतराज्ञो वज्रधरोदिताः।
एषां ग्रहणमात्रेण सर्वसिद्धिप्रदायकाः ॥ ४ ॥

यह आठ प्रकार का महामन्त्र नृनति वज्रहस्त उन्मत्त, भैरव ने कहा है। यह सभी महामन्त्र के ग्रहण मात्र में ही सभी कार्य सिद्ध होते हैं ॥ ४ ॥

इष्टसिद्धि प्रयच्छामो भूतिनीसहिता वयम्।
इत्याहु र्यक्षगन्धर्वापराजित पुरःसराः ॥ ५ ॥

यक्ष, गन्धर्व, अपराजिता (भैरव) आदि सभी को कहने लगे—हम भूतिनी के साथ साधक को इष्टसिद्धि प्रदान करूँगा ॥ ५ ॥

भैरव उवाच।

यदि कालमति क्रम्य यूयं स्थास्यथ निर्भयाः।
तदा सकुलगोत्रं वा घातयामि न संशयः ॥ ६ ॥

भैरव कहने लगे—यदि काल वृथा यापन (नष्ट) करके तुम सब निर्भय होते हो, तो निश्चय ही तुम सभी को सवंश से नाश करूँगा ॥ ६ ॥

अथापराजितः प्राह भूतवृन्द समन्वितः।
मुद्रामन्त्राभिधानेन सुसिद्धिं क्रोधजापिने।
यदि नाहं प्रयच्छामि भवामि कुलनाशकः।
दारयिष्यथ मां मूर्ध्नि नरके पातयिष्यथ ॥ ७ ॥

इसके पश्चात भूतगणों से परिवृत (घिरे हुये) होकर भूतनाथ अपराजित कहने लगे—क्रोधभैरव के उपासकों को मुद्रामन्त्रादि के द्वारा यदि मैं सुसिद्धि प्रदान नहीं करता हूँ, तो, मैं कुलनाशक होउँगा एवं आप मेरा मस्तक विदीर्ण करेंगे तथा नरक में पतित करेंगे ॥ ७ ॥

मुद्राविधि ।

अथ मुद्राविधिं वक्ष्ये भूतिनीमन्त्रसाधनम् ।
वाममुष्टिं दृढं बद्धा मध्यमान्तु प्रसारयेत् ।
आवाह्य पूजनी मुद्रा उत्तमांगुलिसाधिनी ॥ ८ ॥

इसके पश्चात–भूतिनीमन्त्र साधनार्थ मुद्राविधि कह रहा हूँ। बाये हाथ में दृढ़रूप से मुट्ठि बाँधकर मध्यमांगुलि प्रसारित करें। इसका नाम है पूजनीमुद्रा इस मुद्रा में अंगुलि की उत्तमता होती है ॥ ८ ॥

अन्योऽन्यमुष्टि संयुक्ता तर्जनीन्तु प्रसारयेत् ।
सिद्धयते तत्क्षणादेव भूतिनी सत्यपालिनी ॥ ९ ॥

दोनों हाथ के मुट्ठि परस्पर संयुक्त करके दोनों हाथ के तर्जनी अंगुलि प्रसारित करें। इस मुद्रा से तत्क्षणात् भूतिनी सिद्धि होती है ॥ ९ ॥

वामहस्ते दृढां मुष्टिं कनिष्ठान्तु प्रसारयेत् ।
भूतिन्याकर्षिणी मुद्रा सान्निध्याकर्षिणी स्मृता ॥ १० ॥

बायें हाथ में दृढ़मुट्ठि बाँधकर कनिष्ठांगुलि प्रसारित करें, इसका नाम आकर्षणीमुद्रा है। इस मुद्रा से देवताओं का सन्निधान होता है ॥ १० ॥

प्रसार्य वामहस्तन्तु तर्जनीं कुटिलाकृतिम् ।
ज्येष्ठयांगुलिना बद्धा भूतिनी वशकारिणी ॥ ११ ॥

बायें हाथ की सभी अंगुलि प्रसारित करें, केवल मात्र कनिष्ठांगुलि कुण्डलाकृति करके वृद्धांगुलि के द्वारा बद्ध करके रक्खें, इस मुद्रा से भूतिनी वशीभूता होती है ॥ ११ ॥

वाममुष्टिं दृढां कृत्वा नामिकान्तु प्रसारयेत् ।
भूतिन्या कर्षिणी मुद्रा सर्वविघ्नविघातिनी ॥ १२ ॥

बायें हाथ में दृढ़मुट्ठि बाँधकर अनामिकांगुलि को प्रसारित करें। यह भूतिनी आकर्षणी मुद्रा सर्वविघ्न निवारण करती हैं ॥ १२ ॥

वामहस्ते दृढां मुष्टिं ज्येष्ठांगुलीं प्रसारयेत् ।
सम्मुखीकरणमुद्रेयं सर्वदुष्ट भयङ्करी ॥ १३ ॥

बायें हाथ को दृढ़िमुट्ठि बाँधकर वृद्धांगुलि को प्रसारित करें। यह सम्मुखी करण मुद्रा सर्वदुष्टों का भय उत्पादन करती हैं ॥ १३ ॥

वामहस्ते दृढां मुष्टिं कनिष्ठान्तु प्रसारयेत् ।
भूतिनी समयो मुद्रा शीघ्रानयनकारिणी ॥ १४ ॥

बायें हाथ की दृढ़मुष्टि बाँधकर कनिष्ठांगुलि को प्रसारित करें, इसका नाम भूतिनी मुद्रा है। यह मुद्रा प्रदर्शित करने से देवता शीघ्र ही आगमन करते हैं ॥ १४ ॥

यदि शीघ्रं न चायाति म्रियते शुष्यति ध्रुवम् ।
चक्षुः स्फुटति भूतिन्याः शिरः स्फुटति निश्चितम् ॥
तथापि यदि नायाति भूतिनी कालमाक्रमेत् ।
क्रोधोनानेन चाकृष्य जपेदष्टसहस्रकम् ॥ १५ ॥

पूर्वोक्त सभी मुद्रा करने पर भी यदि भूतिनी आगमन नहीं करती है, तो निश्चय भूतिनी के चक्षु तथा शिर स्फुटित होता है, तथापि भी आगमन न करके यदि काल अतिक्रम करते हैं, तो क्रोधभैरव मन्त्र से आकर्षण करके अष्टाधिक सहस्रबार मन्त्र जप करें ॥ १५ ॥

आदिबीज द्विधा चास्त्रं कूर्चं लज्जामतः परम् ।
अमुक भूतिनी कूर्चास्त्र-द्विठसंपुटितो मनुः ।
अक्षिन मूर्ध्नि स्फुटत्येव यदि नायाति सत्वरम् ।
शुष्यते म्रियते वापि नरके पतति ध्रुवम् ॥ १६ ॥

क्रोधमन्त्र इस प्रकार है :

ॐ फट् फट् हुं ह्रीं अमुक भूतिनी हुं फट् स्वाहा । इस मन्त्र के जप करने पर भी यदि शीघ्र आगमन न करते हैं, तब चक्षु तथा मस्तक स्फुटित होता है, (फट जाता है) शरीर शुष्क होता है, प्राणवियोग होता है, तथा नरक में गति होती है ॥ १६ ॥

अथातः संप्रवक्ष्यामि भूतिनीसिद्धि साधनम् ।
नदीसङ्गममासाद्य मण्डलं चन्दनात्मकम् ॥
कृत्वा पुष्पैः समभ्यर्च्य गुग्गुलुना प्रधूपयेत् ।
जपेदष्टसहस्रन्तु सिद्धा स्यात् कुलसुन्दरी ॥ १७ ॥

इसके पश्चात भूतिनीसिद्धि प्रकरण कहूँगा। किसी नदी सङ्गमस्थल पर गमन करके रक्तचन्दन (लालचन्दन) के द्वारा मण्डल बनाकर उस पर गन्धपुष्पादि के द्वारा उनकी अर्चना करके गुग्गुलु द्वारा धूप दे। उसके बाद अष्टसहस्र बार जप करने से कुलसुन्दरी सिद्ध होगी। मन्त्र इसके पहले कहा गया है ॥ १७ ॥

ततः क्रोधमनुं स्मृत्वा सहस्रं प्रजपेन्निशि ।
आयाति निश्चितं दद्यादर्घ्यं जम्बूदकेन च ।
ततः कामयितव्या सा भार्या भवति निश्चितम् ।
त्यक्त्वा स्वर्णपलं याति प्रभाते च दिने दिने ।
मासाभ्यन्तर एवन्तु सिध्यते कुलसुन्दरी ॥ १८ ॥

इसके पश्चात क्रोधमन्त्र स्मरण करके रात्रि में सहस्रबार जप करें। इस प्रकार करने पर कुलसुन्दरी निश्चय ही आगमन करेंगी, तदनन्तर जाती फलोदक के द्वारा (जायफल से धोये हुए जल के द्वारा) अर्घ्य प्रदान करें। इससे कुलसुन्दरी तुष्टा होकर निश्चय ही भार्या होती है। सम्पूर्ण रात्रि भार्यारूप में साधक के पास रहकर प्रातःकाल में एक पल (८ तोला) स्वर्ण प्रदान कर गमन करती है। इस प्रकार एक मास व्यवहार करने पर ही कुलसुन्दरी सिद्धा होती है ॥ १८ ॥

नीचगासङ्गमं गत्वा चन्दनेन च मण्डलम् ।
दधि भक्ति निवेद्याथ जपेदष्टसहस्रकम् ॥
यावत् सप्तदिनान्येव आयाति दिवसेऽष्टमे ।
चन्दनेन निवेद्यार्घं वदेत्तुष्टा वरं वृणु ।
साधकेन तु वक्तव्यं राज्यं मे देहि सुन्दरि ।
राज्यं ददाति सा नित्यं वस्त्रलङ्कार भोजनम् ।
स्वयं यच्छति देवीयं तुष्टा विजयसुन्दरी ॥ १९ ॥

किसी नदी के सङ्गमस्थल पर जाकर चन्दन के द्वारा मण्डल बनाकर एवं उस पर दधि और अन्न के द्वारा अर्चना करके अष्टाधिक सहस्र मन्त्र जप करे।

इस प्रकार सात दिन अर्चना और जप करने पर आठवें दिन देवी आगमन करेगी। तब चन्दन के द्वारा अर्घ्य प्रदान करने से देवी तुष्टा होकर वर ग्रहण करने को कहेगी। साधक उस समय कहे, हे देवी ! मुझे राज्य प्रदान कीजिए। देवी तत्क्षणात् राज्य प्रदान करती है, एवं प्रतिदिन वस्त्र तथा अलङ्कार प्रदान करती है, विजयसुन्दरी सिद्ध होने पर स्वयं राज्यादि प्रदान करती है ॥ १९ ॥

वज्रपाणिगृहं प्राप्य शुभ्रचन्दनमण्डले ।
हयमार-प्रसूनैश्च सम्पूज्य धूपयेत्ततः ।
गुग्गुलुना जपेदष्टसहस्रं सिद्धिमाप्नुयात् ।

सहस्रं हि जपेद्रात्रौ पुनरागच्छति ध्रुवम् ।
दत्त्वा पुष्पाणि वक्तव्यं स्वागतं हृष्टमानसः ।
तुष्टा भवति सा भार्या दिव्याम्बररसायनम् ।
धनं ददाति शत्रूणां करोति निधनं ध्रुवम् ।
त्रिदिवं पृष्ठमारोप्य नयतीष्टं प्रयच्छति ।
दशवर्षसहस्राणि सुन्दरी प्रीतिसाधकम् ॥ २० ॥

किसी शिवमन्दिर में जाकर श्वेतचन्दन के द्वारा मण्डल बनाकर उस पर पीपल के फूल द्वारा पूजा करके गुग्गुलु से धूप दे, तथा एक हजार आठबार मन्त्र का जप करके देवी की सिद्धि करना चाहिए। पुनः रात को एक हजार बार जप करने पर देवी आगमन करेगी। उसी समय पुष्पाञ्जलि प्रदान करके हृष्टमन से स्वागत जिज्ञासा करेंगे। इस प्रकार करने पर देवी सन्तुष्टा होकर उनकी भार्या होती है एवं दिव्यवस्त्र तथा धनादि दान करती है तथा शत्रु विनाश करती है। साधक को स्वर्गपुर में ले जाकर उनको अभीष्ट वस्तु अर्पण करती है। सुन्दरी देवी इस प्रकार से दश सहस्र वर्ष प्रसन्न रहती है ॥ २० ॥

गत्वा नदीतटं कृत्वा मण्डलं गन्धवारिणा ।
गन्धेन सितपुष्पेण अर्घ्यं गुग्गुलुना पुनः ॥
धूपयित्वा जपेदष्टसहस्रं सिद्धिमाप्नुयात् ।
सहस्रं हि पुनारात्रौ जपेदागच्छति ध्रुवम् ।
दत्त्वा पुष्पोदकेनार्घ्यं वक्तव्या भगिनी भव ।
भूत्वा तु भगिनी नित्यमिष्ट द्रव्याणि यच्छति ।
रसं रसायनं काम्यं स्वयं यच्छति सुन्दरी ॥ २१ ॥

नदी के किनारे जाकर गन्धोदक (सुगन्धित जल) के द्वारा मण्डल बनाकर उस पर, सफेद फूल तथा गन्ध चन्दन के द्वारा अर्घ्य प्रदान करें, एवं गुग्गुलु के द्वारा धूप देकर अष्टसहस्र जप करें, इस प्रकार करने से सुन्दरी सिद्धि होती है। पुनः रात को सहस्र (एक हजार) जप करने से ही सुन्दरी देवी आगमन करती है; तत्काल पुष्पोदक (फूल से पानी के छींटे द्वारा अर्घ्य प्रदान करके कहें—देवी! तुम मेरी बहन हो जाओ' देवी तत्क्षणात् बहन (भगिनी) के तरह होकर विविध द्रव्य प्रदान करती रहती है। नानाप्रकार के रस तथा अभिलषित वस्तु देवी स्वयं अर्पण करती है ॥ २१ ॥

शून्यं देवालयं गत्वा बलिं दत्वा यथोचितम् ।
जपेदष्ट सहस्रन्तु सिद्धा गच्छति सन्निधिम् ।
कामिता सा भवेदभार्या राज्यं यच्छति वाञ्छितम् ।
स्वर्गं नयति सा तुष्टा पृष्टमारोप्य दुर्लभम् ।
राजकन्यां समादाय नियच्छति दिने दिने ।
दीनांरार्णा: सहस्रन्तु प्रददाति मनोहरा ।
पञ्चवर्ष सहस्राणि भुक्त्वा भोगं महीतले ।
मृते राजकुले जन्म पुनर्भवति निश्चितम् ॥ २२ ॥

निर्जन देवालय में गमन करके यथा योग्य बलि प्रदान करे तथा पूजा करके अष्टाधिक सहस्र (एक हजार आठ) जप करने पर सुन्दरी देवी सिद्धा होकर निकट आगमन करती है तथा साधक की भार्या होकर राज्य तथा वाञ्छित वस्तु प्रदान करके स्वीय (अपने) पीठ में लेकर साधक को स्वर्ग में ले जाती है एवं प्रतिदिन शत (सौ सौ) राजकन्या लाकर देती है । तथा प्रतिदिन एक एक स्वर्ण मुद्रा प्रदान करती है । साधक इस प्रकार पृथ्वी पर पाँच हजार वर्ष तक नानाप्रकार के भोग करके मरणान्तर के पश्चात राजकुल में जन्म ग्रहण करता है ॥ २२ ॥

नीचगासङ्गमं प्राप्य मण्डलं परिकल्पयेत् ।
दत्वामिषोपहारञ्च करवीर प्रसूनकम् ।
धूपञ्च गुग्गुलं दत्वा जपेदष्टसहस्रकम् ।
सिद्धा भवति कामिन्यां पुनः पूजां समाचरेत् ।
प्रज्वाल्य घृतदीपञ्च सहस्रं प्रजपेन्मनुम् ।
भूपुरस्य तु शब्देन देवी भूवनसुन्दरी ।
सहस्रार्द्धपरिवारैर्युक्ता गच्छति सन्निधिम् ।
कामिता तुष्टि भावेन भार्या भवति नान्यथा ।
भार्यात्वे च परिहारे अरिनाशो भवेद् ध्रुवम् ।
प्रत्यहं पृष्ठमारोप्य सूर्यलोकं नयत्यपि ।
पञ्चवर्ष सहस्राणि भुक्त्वा भोगमनुत्तमम् ।
मृत राजकुले जन्म भवतीति न संशयः ॥ २३ ॥

किसी नदी सङ्गम स्थान पर जाकर मण्डल बनाकर मांसोपहार से तथा करवीर पुष्प के द्वारा पूजन करे । बाद में गुग्गुलु के द्वारा धूप प्रदान करके अष्टाधिक सहस्रमन्त्र का जप करने से देवी भूषणसुन्दरी सिद्धा

होगी। इस प्रकार मन्त्रसिद्धि होने पर दूसरी बार रात में नाना प्रकार के उपहार द्वारा देवी की पूजा करे एवं घृत प्रदीप प्रज्वलित करके सहस्रबार मन्त्र का जप करे। इस प्रकार करने पर देवी भूषणसुन्दरी सहस्रार्द्ध (पाँच सौ) परिवार समभिव्याहार से नुपुर ध्वनि करके पास में उपस्थित होती है। तुष्टि भाव में कामना पूर्ण करने पर तत्क्षणात् (तत्काल ही) साधक की पत्नी होकर रहती है, एवं प्रतिदिन पीठ में लेकर सूर्यलोक को ले जाती है। इस प्रकार साधक पञ्च सहस्र वर्ष (पाँच हजार वर्ष तक) पर्यन्त विविध प्रकार के भोग करता है मारणान्तर के पश्चात भूपतिकुल में (राजकुल में) जन्म ग्रहण करता इसमें संदेह नहीं है ॥ २३ ॥

कुंकुमेन विधायाथ मण्डलं नीचगातटे।
धूपश्चात्ताऽगुरुं दत्त्वा बलिं दद्याद् यथोचितम् ॥
जपेनदष्ट सहस्रन्तु पुनरात्तावतन्द्रितः।
प्राग्वत् पूजां विधायाथस हस्रं प्रजयेन्मनुम्।
आगता चेत्ततो दद्यादर्घं चन्दनवारिणा।
हृष्टा ब्रूते वरं ब्रूहि स्वयं धवलसुन्दरी।
साधकेन तु वक्तव्यं मातृवत् परिपालत।
सहस्रार्द्धं परिवारं वस्त्रालङ्कार भोजनैः।
नित्यं तोषयते देवी वाञ्छितार्थं प्रयच्छति।
दशवर्षसहस्राणि भोग्यं भुक्त्वा मृतो भवेत्।
पुर्नाविप्र कुलेजन्म भवतीति न संशयः ॥ २४ ॥

किसी नदी के किनारे बैठकर कुंकुम के द्वारा मण्डल बनाकर, तत्पश्चात् अगुरु के द्वारा धूप एवं यथाविधि बलिप्रदान करके अष्टाधिक सहस्रबार (एक हजार आठ बार) मन्त्र का जप करने पर पुनर्वार रजनीयोग में पूर्ववत् पूजा बलि प्रदान करके सहस्रवार मन्त्र का जप करे। देवी के आगमन करने पर चन्दन जल द्वारा अर्घ्य दे, इस प्रकार देवी धवलसुन्दरी सन्तुष्ट होकर स्वयं वर ग्रहण करने का आदेश देती है। तब साधक कहे, हे देवी ! मुझे मातृवत् माता के समान प्रतिपालन करिये। इस प्रकार सिद्ध होने पर सहस्रार्द्ध परिवार के साथ साधक को प्रतिदिन वस्त्र, अलङ्कार, भोजन द्रव्य तथा अभिलषित अर्थ प्रदान करके सन्तुष्ट करती है। इस प्रकार दशसहस्र वर्ष पर्यन्त विविध प्रकार के भोग करके मरने के बाद ब्राह्मण कुल में जन्म ग्रहण करता है, इसमें संदेह नहीं है ॥२४॥

नीचगासङ्गमं गत्वा कृत्वा पूजामनुत्तमाम्। प्रज्वाल्य घृत-दीपञ्च बलिं दत्वा प्रयत्नतः। प्रजपेत् सकलां रात्रिं एकचित्तो भयोज्झीतः ततोऽर्धरात्रसमये समागच्छति सन्निधिम्। कर्त्तव्यं किं मया धीर वद त्वं निजवाञ्छितम्। साधकेन च वक्तव्यं राज्यं मे देहि सुन्दरी राज्यं यच्छति सा तुष्टा दीनाराणां सहस्रकम्। दिने दिनेऽपि वा लक्षं ददाति म्रियते यदि। सार्वभौमकुले जन्म वज्रपाणिप्रसादतः। एता अष्टौ महाभूतराज्ञोऽभीष्टफलप्रदाः। क्रोधाधिपभयात् सिद्धिं प्रयच्छन्ति कलौ युगे ॥ २५ ॥

नदी संगम स्थल पर बैठकर उत्तम प्रकार से पूजा करके। बाद में धृत प्रदीप प्रज्वलित करके यत्न के साथ समस्त रात्रि भय रहित चित्त से जप करे। इस प्रकार जप करने पर रात्रि के अन्त में देवी आगमन कर साधक से जिज्ञासा करती हैं कि तुम्हारा क्या अभीष्ट कार्य करना है बोलो। तब साधक बोले—हे सुन्दरी ! मुझे राज्य प्रदान कर। देवी सन्तुष्ट होकर राज्य व सहस्र स्वर्णमुद्रा तत्क्षणात् प्रदान करती हैं। इस प्रकार प्रतिदिन लाख स्वर्णमुद्रा प्रदान करती रहती हैं। इससे साधक ब्रजपाणि क्रोधभैरव के अनुग्रह से ससागरा पृथ्वी के अधिपति राजकुल में जन्म ग्रहण करते हैं। पूर्व-कथित आठ प्रकार के महाभूत कलियुग में क्रोधभैरव के भय से साधक के सभी प्रकार के अभीष्ट फल प्रदान करती रहती हैं ॥ २५ ॥

इति भूतडामरे महातन्त्रे सुन्दीर साधनं तृतीयः पटलः ॥ ३ ॥

चतुर्थः पटलः

उन्मत्त भैरव्युवाच ।

भगवन् देबदेवेश सुरासुरभमप्रदा ।
श्मशानवासिनीं ब्रूहि यदि तुष्टोऽसि भैरव ॥ १ ॥

उन्मत्त भैरवी कह रही हैं, हे देवदेवेश्वर ! आप सुरासुर सभी को भय प्रदान करते हैं, इस समय यदि आप मुझसे सन्तुष्ट हों, तब श्मशानबासिनी का मन्त्र मेरे समक्ष मुझसे कहें ॥ १ ॥

भैरव उवाच ।
अथातः सम्प्रवक्ष्यामि वितृभूवासिनीमनुम् ।
दीनानामुपकाराय नत्वाग्रे क्रोधभूपतिम् ॥ २ ॥

भैरव कहने लगे, मैं क्रोधभूपति को नमस्कार करके दीन व्यक्तियों के उपकारार्थ श्मशानवासिनी का मन्त्र कह रहा हूँ ॥ २ ॥

विषं प्राथमिकं कालबीजं द्विगुणमीरितम् ।
प्रालेयमथ भूतेशबीजं कटुद्वयं पुनः ॥
ततः सर्वभूतिनीनां पदं भगवतः पदम् ।
वज्रधरस्य समयमनु पालय संलिखेत् ।
हनवधाक्रमगदं समुद्धृत्य द्वयं द्वयम् ।
भो भो रात्राविति पदात् श्मशान वासिनीपदम् ।
आगच्छ शीघ्रं कूर्च्चास्त्रं भूतिन्या ह्वानिकृन्मनुः ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं हूँ हूँ ॐ ह्रीं कटु कटु सर्वभूतिनीनां भगवतो वज्रधरस्य समय मनुपालय हन हन वध वध आक्रम आक्रम भो भो रात्री श्मशानबासिनी आगच्छ शीघ्रं हुं फट् यह मन्त्र भूतिनी के आवाहन कारक है ॥ ३ ॥

तारं ज्वलयुगं पश्चाद् विधूनैव चलद्वयम् ।
चालय प्रविशो प्राग्वज्ज्वलतिष्ठ-द्वयं द्वयम् ॥
समयमनुपालय पदं भो भो रात्रावुदारयेत् ।
श्मशानबासिनी काल द्वयादस्त्रद्वयं द्विठः ।

असौ श्मशानवासिन्या मनुः समयसंज्ञकः।
श्मशानवासिनी मन्त्रमतो वक्ष्ये यथाक्रमम् ॥ ४ ॥

ॐ ज्वल ज्वल विधून चल चल चालय चालय प्रविश प्रविश ज्वल ज्वल तिष्ठ तिष्ठ समयमनूपालय भो भो रात्रौ श्मशानवासिनी हूँ हूँ फट् फट् स्वाहा, यह श्मशानवासिनी का समय संज्ञक मन्त्र कहा गया है ॥ ४ ॥

पञ्चरश्मिं समुद्धृत्य चलद्वय पठद्वयम्।
महापदमतो लेख्यं भूतिनों साधये ति च।
कुले प्रिये स्फुरयुगं तद्वद्विसुर कटु च।
ततः प्रतिहतपदं जयविजय-युग्मकम् ॥
तर्ज्जयुग्मं कालयुग्मं फट्युग्मश्च प्रथद्वयम्।
विषमग्नि प्रियान्तेयं प्रोक्ता दंष्ट्वाकरालिनी ॥ ५ ॥

ॐ चल चल पठ पठ महाभूतिनी साधय कुले प्रिये स्फुर स्फुर विसुर विसुर कटु कटु प्रतिहत जय जय विजय विजय तर्ज तर्ज हुं हुं फट् फट् प्रथ प्रथ ॐ स्वाहा। यह मन्त्र सर्वसिद्धिप्रद है ॥ ५ ॥

प्रालेयं प्रथमं गृह्य ततो घोरमुखीपदम्।
श्मशानवासिनी शब्दात् साधकानुपदात्ततः ॥
कूलेऽप्रतिहतपदं सिद्धिदायिक इत्यपि।
अनादिसृष्टित्रितयं नति ज्वलन वल्लभा।
इदं घोरमुखी मन्त्रमुक्तमिष्टार्थसाधकम् ॥ ६ ॥

ॐ घोरमुखी श्मशानवासिनी—साधकानु कुलेऽप्रतिहत सिद्धिदायिके ॐ ह्रीं ह्रीं नमः स्वाहा। यह मन्त्र सर्वसिद्धि प्रदान करता है एवं घोरमुखी मन्त्र से इष्टार्थ साधन होता है ॥ ६ ॥

ब्रह्मसूत्रं समुद्धृत्य तदन्ते तर्ज्जनीमुखी।
विषद्वयं समाभाष्य ततो विश्वचिताचिते ॥
सर्वशक्रपदादगृह्य भयङ्करिपदन्ततः।
हनद्वय दहयुगं पचमारय द्वयं द्वयम्।
ततो ममाकारपदं गृह्य मृत्युक्षयङ्करी।
सर्वनागपदाद यक्ष भय अट्टअट्टहासिनि।
सर्वभूतेश्वरी कूर्च्च हताद्विष शिखिप्रिया ॥ ७ ॥

ॐ तर्जनीमुखि ॐ ॐ विश्वचिताचिते सर्वशत्नु भयङ्करि हन हन दह दह पच मारय मारय, ममाकारस्य मृत्युक्षयङ्करि सर्वनाग यक्ष भक्ष अट्ट अट्ट हासिनी सर्वभूतेश्वरि हूँ हत स्वाहा ॥ ७ ॥

वेदादितोऽग्नेश्च प्रियान्ता तज्जननीमुखी ।
अनादिबीजमाभाष्य ततः कमललोचनि ॥
मनुष्यवत्सले सर्वं पदा दुःखविनाशिनि ।
साधकानुपदात् कुले प्रिये जय पद द्वयम् ।
द्वेगृह्य च कालबीज मन्त्रं गृह्यपदं नतिः ।
वह्निप्रियान्त युक्तेयं देवो कमललोचनो ॥ ८ ॥

ॐ कमललोचनि मनुष्यवत्सले सर्वदुःखविनाशिनि साधकानु कुले प्रिये जय जय हुं हुं फट् नमः स्वाहा । यह कमललोचनी मन्त्र सर्वसिद्धि प्रदायक है ॥ ८ ॥

विषाद्या विकटमुखि ततो दंष्ट्राकरालिनि ।
ज्वलद्वयपदाद्गृह्य सर्वक्षयभयङ्करि ।
धीरधीरपदं गृह्य गच्छ गच्छ पदं ततः ।
भोः भोः साधकपदं किमाज्ञा पयसोत्यपि ।
शिवोन्ता चेरिता देवि विकटास्येष्टसिद्धिदा ॥ ९ ॥

ॐ विकट मुखी दंष्ट्राकरालिनि ज्वल ज्वल सर्वयक्षभयङ्करि धीर धीर गच्छ गच्छ भो भोः साधक किमाज्ञापयसि हुं । यह विकटा मन्त्र इष्टसिद्धि को प्रदान करता है ॥ ९ ॥

विषं ध्रुविपदं कर्णपिशाचिनि ततः परम् ।
कटुद्वयं धूनयुगं महासुर पदं ततः ।
पूजिते भिन्दयुगलं महाकर्ण पिशाचिनि ।
भोः भोः साधकेति पदं किं करोम्यूद्धरेत्ततः ।
लज्जाबीजं विसर्गान्तं कालादस्त्रयुगं लिखेत् ।
वह्नि प्रियान्तमित्युक्त मुद्धरेन्मनु विग्रहम् ॥ १० ॥

ॐ ध्रुवि कर्णपिशाचिनि कटु कटु धून धून महासूत पूजिते भिन्द भिन्द महाकर्णपिशाचिनि भो भोः साधक किङ्करोमि ह्रीं अः हुं हुं फट् फट् स्वाहा : यह कर्णपिशाचिनी मन्त्र सर्वज्ञान प्रदान करता है ॥ १० ॥

विषं ध्रुविपदः लेख्यं सरुकटुद्वयं द्वयम् ।
स्तम्भयद्वयमाभाष्य चालयद्वयमीरयेत् ।
मोहयद्वयतो विद्युत् करालीपदमुद्धरेत् ।
अतिभूत चरस्याग्रे विलिखेत् सिद्धिदायिके ॥

हुं फें भयङ्करी बीजमन्त्राग्निदयितान्वितम् ।
इति विद्युत् करालयुक्ता वाञ्छितार्थ प्रदायिनी ॥ ११ ॥

ॐ ध्रुवि सरु सरु कटु कटु स्तम्भय स्तम्भय चालय चालय मोहय मोहय विद्युत् करालिनि अतिभूतचरस्य सिद्धिदायिके हुं फें भयङ्करि फट् स्वाहा । यह विद्युत् कराली मन्त्र वाञ्छितार्थ प्रदान करता है ॥ ११ ॥

विषं सौम्यमुखीं गृह्याकर्षयद्वयमुद्धरेत् ।
ततः सर्वभूतिनीनां जयद्वयमुदीरयेत् ।
भो भोस्ततः साधकेति पदं तिष्ठद्वयं ततः ।
समयमन्विति पदं पालयेति पदं ततः ।
साधु साधु ततो भोः भोः किमाज्ञापयसिद्वयम् ।
कलिद्वयाग्निजायन्तः प्रोक्तः सौम्यमुखीमनुः ॥ १२ ॥

ॐ सौम्यमुखि आकर्षय आकर्षय सर्वभूतिनीनां जय जय भो भोः साधक तिष्ठ तिष्ठ समयमनुपालय साधु साधु भो भोः किमाज्ञा पयसि किलिकिलि स्वाहा । यह सौम्यमुखीमन्त्र साधक को सिद्धि प्रदान करता है ॥ १२ ॥

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि पितृभूमि निवासिनीम् ।
कर्ण पौशाचिकीं मुद्रां यया सिद्धिरनुत्तमा ॥ १३ ॥

अनन्तर श्मशानवासिनी कर्णपिशाची देवी की मुद्रा कह रहा हूँ, इस मुद्रा के द्वारा साधक का सभी कार्य सिद्धि होता है ॥ १३ ॥

कृत्वा न्योन्यन्ततो मुष्टिं कनिष्ठे वेष्टयेदुभे ।
ततः प्रसार्य तर्ज्जन्यौ वक्त्रदेशे नियोजयेत् ।
द्रंष्ट्राकरालिनी मुद्रा कथिता सा महाप्रभा ॥ १४ ॥

दोनों हाथों की मुट्ठि बाँधकर दोनों हाथों के कनिष्ठांगुलि द्वय परस्पर वेष्टन करके, उसके बाद तर्ज्जनीद्वय प्रसारित (खोलकर) करके मुख में संयुक्त करें ॥ १४ ॥

कृत्वा वामकरे मुष्टिं मध्यमान्तु प्रसारयेत् ।
तर्ज्जन्यौ वा प्रसार्योभे मुद्रा घोरमुखीं मता ॥ १५ ॥

बायें हाथ की मुट्ठि बाँधकर मध्यमा तथा तर्जनी अंगुलि को प्रसारित करें, इसका नाम घोरमुखी मुद्रा है ॥ १५ ॥

बध्वान्योन्यं ततो मुष्टिं कनिष्ठे द्वे च वेष्टयेत् ।

ततः प्रसार्य तर्ज्जन्यो वक्त्रदेशे निवेशयेत्।
कथिता तर्ज्जनी मुद्रा सर्वसिद्धि प्रदायिनी ॥ १६ ॥

दोनों हाथों की मुट्ठि बाँधकर परस्पर कनिष्ठांगुलिद्वय का वेष्टन करें तथा तर्जनीद्वय प्रसारित करके मुख में संयुक्त करें। इसका नाम तर्जनीमुद्रा है, यह मुद्रा साधकों को सर्वसिद्धि प्रदान करता है ॥ १६ ॥

अस्या एव च मुद्राया भग्ना कार्या तु मध्यमा।
प्रसार्यानामिका मुद्रा प्रोक्ता कमललोचनी ॥ १७ ॥

तर्जनीमुद्रा में केवल मात्र मध्यमांगुलिद्वय को वक्र (टेढ़ा) रखकर अनामिकाद्वय को प्रसारित करने से कमललोचनी मुद्रा होती है ॥ १७ ॥

अस्या एव तु मुद्रायाः प्रवेश्यानामिका पुनः।
कनिष्ठान्तु प्रसार्यासौ विकटास्या प्रकीर्त्तिता ॥ १८ ॥

कमललोचनी मुद्रा में अनामिकाद्वय को मध्य में प्रवेशित करके कनिष्ठाद्वय को प्रसारित करें। इसका नाम विकटास्या मुद्रा है ॥ १८ ॥

दक्षपाणिकृता मुष्टिस्तर्ज्जनीन्तु प्रसारयेत्।
ख्यातैषारुन्धती मुद्रा सर्वाभीष्ट प्रदायिनी ॥ १९ ॥

दाहिने हाथ की मुट्ठी बाँधकर तर्जनी अंगुलि को प्रसारित करे इसका नाम अरुन्धतीमुद्रा है। इस मुद्रा से साधक को अभीष्ट साधन प्राप्त होता है ॥ १९ ॥

अस्या एव तु मुद्रायास्तर्ज्जन्याकृष्य मध्यमाम्।
प्रसार्य दर्शयेदेषा मुद्रा विद्युत् करालिनी ॥ २० ॥

अरुन्धती मुद्रा में तर्जनी के द्वारा मध्यमा को आकर्षण करके प्रसारित करने पर विद्युत् करालिनी मुद्रा होती है ॥ २० ॥

दक्षमुष्टिं विधायाथ कनिष्ठान्तु प्रसारयेत्।
प्रोक्ता सौम्यमुखी मुद्रा वाञ्छितार्थ फलप्रदा ॥ २१ ॥

दक्षिण हाथ की मुट्ठी बाँधकर कनिष्ठांगुलि प्रसारित करे, इसका नाम सौम्यमुखी मुद्रा है। यह मुद्रा साधक को वाञ्छितार्थ फल प्रदान करता है ॥ २१ ॥

अथासां साधनं वक्ष्ये दरिद्राणां हिताय च।
कुर्विरे चेटिकाकर्म देव्योऽमुः साधकस्य च ॥ २२ ॥

इसके पूर्व में जिन सब देवताओं का मन्त्र कहा गया है, अब उन सभी के साधन विधान कह रहा हूँ। इस प्रकार साधना करने पर देवीगण साधक का दासत्व स्वीकार करते हैं ॥ २२ ॥

गत्वा श्मशानं प्रजपेन्मनुमष्टसहस्रकम् ।
सर्वेषामेव मन्त्राणां पूर्वमेषां पुरस्क्रिया ॥
पितृभूमौ समास्थाय दधिक्षौद्रघृतान्वितं ।
हुनेदष्ट सहस्रन्तु खादिरं समिधं सुधीः ।
सिद्धे होमे समागत्य पितृभूवासिनी वदेत् ।
किं करोमि वद त्वं मे सन्तुष्टा साधकं प्रति ।
साधकेनापि वक्तव्यं किङ्करी चेटिका भव ।
यच्छतीह दीनारश्च क्षेत्रकर्म करोति च ।
मत्स्यमांसं बलिं क्षेत्रवाटिकायां प्रदापयेत् ।
यत्रैकविंशरात्रिश्च चेटीकर्म करोति च ॥ २३ ॥

श्मशान में जाकर उन उन देवता के मन्त्र अष्ट सहस्रबार जप करे। सभी प्रकार के मन्त्र सिद्धि में ही प्रथमतः इस प्रकार जप करना कर्त्तव्य है। उसके बाद उस स्थान में रहकर ही दधि (दही) घृत तथा मधु के साथ खदिर (खैर) काठ के द्वारा अष्ट सहस्र बार हवन करे। इस प्रकार से जप और हवन समाप्त होने पर श्मशानवासिनी देवी साधक के सम्मुख में साक्षात् उपस्थित होकर साधक से कहती है, मैं तुम्हारा क्या कार्य करूँगी वह मुझे कहो। मैं तुम्हारे प्रति सन्तुष्ट हुयी हूँ। तब साधक कहेंगे, तुम मेरी दासी होकर रहो। इस प्रकार से सिद्धि होने पर देवी साधक को सुवर्ण मुद्रा प्रदान करके उसका क्षेत्र कर्म करती है। उसके बाद साधक क्षेत्र स्थान पर मत्स्य मांस के द्वारा बलि प्रदान करें। इस प्रकार एकविंशति (इक्कीस) दिन तक साधना करने पर वह देवी गुप्तरूप से साधक का क्षेत्रकर्म करती रहती है ॥ २३ ॥

अथवा प्रजपेद्रात्रौ श्मशानेऽष्टसहस्रकम् ।
दशघ्नदिक् सहायाख्या भूतिन्यायाति वक्ति च ।
किं करोमीति तच्छ्रुत्वा साधको भाषते पुनः ।
किङ्करी भव दासीत्वं गृहकर्म कुरुष्व मे ॥ २४ ॥

अथवा रात में श्मशान में बैठकर अष्ट सहस्र (एक हजार आठ) बार मन्त्र का जप करे। इससे भूतिनी, लक्ष परिवारगणों के साथ आगमन करती है, एवं साधक से कहती है कि, तुम्हारा कौन सा कार्य करूँ ? साधक वह सुनकर कहेंगे, तुम मेरी किङ्करी होकर घर का कार्य करो ॥२४॥

पितृभूमौ तु यामिन्यां जपेदष्टसहस्रकम् ।
दिग्दशघ्न सहायाख्या भूतिन्यायाति सन्निधिम् ।
मत्स्यमांसौदनबलिं गृह्य हृष्टा प्रयच्छति ।
वासोयुग्ममलङ्कारं दीनारं प्रतिवासरम् ।
सहस्रयोजनाद्दिव्यनारोमानीय यच्छति ।
सुगुप्तं चेटिकाकर्म यावज्जीवं करोति च ॥ २५ ॥

रात्रि में श्मशान में बैठकर अष्टसहस्र बार जप करे। इस प्रकार साधन करने पर भूतिनी लक्षपरिवार गणों के साथ आगमन करती है, तत्काल साधक मत्स्य मांसादि उपहार के साथ अन्न भोग प्रदान करें, उससे देवी सन्तुष्ट होकर प्रतिदिन साधक को वस्त्र युग्म (एक जोड़ा कपड़ा) तथा सुवर्णमुद्रा प्रदान करती है । एवं सहस्र योजन दूर से दिव्य कामिनी लाकर साधक को देती है, वह कामिनी यावजीवन उसका दास्य कर्म करती है ॥२५॥

इति भूतडामरे महातन्त्रे पिशाचिनी चेटिका साधन
चतुर्थः पटलः सम्पूर्णः ॥ ४ ॥

पञ्चमः पटलः

उन्मत्तभैरव उवाच ।

भगवन् सर्वभूतेश प्रमथाद्यैर्नमस्कृत ।
यदि तुष्टोऽसि देवेश चण्डकात्यायनीं वद ॥
चण्डकात्यायनी रौद्री भूतिनी या प्रकीर्त्तिता ।
मनुं तस्याः प्रवक्ष्यामि नत्वा क्रोधाधिपं पुनः ॥
बीजं हालाहलं कूर्च्चनतिमस्त्र द्वयं शिवः ।
सुरकात्यायनीमन्त्रमीरितस्त्वाति दुर्लभम् ॥ १ ॥

उन्मत्तभैरवी कहने लगी, हे सर्वभूतेश्वर ! प्रमथगण में आपको सदा सर्वदा नमस्कार करते हैं। यदि आप मेरे प्रति सन्तुष्ट रहते हैं तब चण्डकात्यायनी का मन्त्र आदि मेरे समक्ष बोलें ॥ १ ॥

विषं कालं वदेद्बीजं ज्वालान्तं कूर्च्चसंज्ञितम् ।
अस्त्रान्तोऽयं मया प्रोक्तो महाकात्यायनीमनुः ॥ २ ॥

उन्मत्तभैरव कहने लगे—चण्डकात्यायनी, रौद्री तथा भूतिनी प्रभृति देवता कथित है कि मैं क्रोधभैरव को नमस्कार करके उन सब देवताओं का मन्त्र तुमसे कह रहा हूँ ॥ २ ॥

विषादोद्वयुगं कालयुग्मं हालाहलन्ततः ।
चामुण्डालिङ्गितं व्योमद्वयं मन्त्रद्वयं शिवः ।
रौद्रकात्यायनी प्रोक्तो सर्वसिद्धि प्रदायिनी ॥ ३ ॥

ॐ हुं नमो नमः ह्रीं यह कात्यायनी देवी का मन्त्र तुमसे कहा। वह मन्त्र अति दुर्लभ है। ॐ हुं ज्वाला हुं फट् यह महा कात्यायनी का मन्त्र मैं तुमसे कह रहा हूँ।

ॐ ह्रौं ह्रीं हुं हुं ॐ ह्रं लूं ह्रं फट् फट् स्वाहा। यह रौद्रा कात्यायनी मन्त्र सर्वसिद्धि प्रदान करता है ॥ ३ ॥

आदिबीजं समुद्धृत्य ततो रुद्रभयङ्करी ।
अट्टट्टहासिनि साधकप्रिये पदमुद्धरेत् ॥
महाविचित्ररूपकरि सुवर्णहस्त इत्यपि ।

यमनिकृन्तनिपदं सर्वदुःखपदन्ततः ॥
प्रशमनीपदमुच्चार्य त्रिविधं हुं चतुष्टयम् ।
ततः शीघ्रञ्च सिद्धि मे प्रयच्छेति पदं ततः ॥
रौद्रबीजं विसर्गाढ्यं ततश्च वह्निसुन्दरी ।
चण्डकात्यायनी प्रोक्ता महाभूतेश्वरीमनुः ।
प्रोक्ताभीष्ट प्रदा लोके जम्बुद्वीपे कलौयुगे ॥ ४ ॥

ॐ रुद्रभयङ्करी अट्टहासिनि साधक प्रिये महाविचित्ररूपकरि सुवर्ण हस्ते यमनिकृन्तनि सर्वदुःख प्रशमनि ॐ ॐ ॐ हुं हुं हुं हुं शीघ्रं सिद्धि मे प्रयच्छ ह्रौं अः स्वाहा । महाभूतेश्वरी चण्डकात्यायनी का यह मन्त्र कथित हुआ । यह मन्त्र कलियुग में जम्बुद्वीप में साधक को सर्वसिद्धि प्रदान करता है ॥ ४ ॥

हालाहालं समुद्धृत्य ततो यमनिकृन्तनि ।
अकाल मृत्युनाशिनीति खड्गत्रिशूलतः पुनः ॥
हस्ते शीघ्रपदं प्रोक्त्वा सिद्धि मे देहि भोः पदम् ।
साधकं समाज्ञापय बीजं प्राथमिकं ततः ।
द्विष्ठान्तोऽयं मया प्रोक्तो वज्रकात्यायनीमनुः ॥ ५ ॥

ॐ यमनिकृन्तनि अकालमृत्युनाशिनी खड्गत्रिशूलहस्ते शीघ्रं सिद्धि मे देहि भोः साधकं समाज्ञापय ह्रीं स्वाहा । यह वज्रकात्यायनी मन्त्र तुमसे कह रहा हूँ ॥ ५ ॥

पञ्चरश्मिं समुद्धृत्य हेमकुण्डलिनीपदम् ।
धीरद्वयं ज्वलयुगं ततो दिव्यमहापदम् ॥
कुण्डलविभूषितपदं वारणमथनीति च ।
भगवन्नाज्ञापयसि च शिवोऽन्तमनुमुद्धरेत् ।
इति कुण्डलपूर्वश्च प्रोक्तः कात्यायनीमनुः ॥ ६ ॥

ॐ हेमकुण्डलिनी धीर धीर ज्वल ज्वल दिव्यमहाकुण्डल विभूषिते वारणमथिनि भगवन्नाज्ञापयसि स्वाहा । यह कुण्डल कात्यायनी मन्त्र सर्वसिद्धिप्रद है ॥ ६ ॥

विषमुद्धृत्य द्विकुटीद्विठः कुट्टयुगं ततः ।
धीरयुग्मं ज्वलयुगं स्वाहा कुलमुखी ततः ॥
गच्छ वेताल उपरि अनिशम्पदतः पुनः ।
कुण्डल द्वयमतः पाशद्वयं भगवान् पदम् ॥

आज्ञापय ततो रौद्रं सविसर्गं समुद्धरेत् ।
वह्निप्रियान्तः कथितो जयकात्यायनीमनुः ॥ ७ ॥

ॐ कुटी कुटी स्वाहा कटु कटु धीर धीर ज्वल ज्वल स्वाहाशनिमुखि गच्छ वेताल उपरि अनिशं कुण्डल कुण्डल, आं आं आं भगवन् आज्ञापय अः स्वाहा । यह जयकात्यायनी मन्त्र कहा गया है ॥ ७ ॥

विषमुद्धृत्यापि सुरत प्रिये दिव्यलोचनि ।
कामेश्वरि जगन्मोहिनि ततश्च सुभगे पदम् ॥
ततः काञ्चनमालेति भूषणीति पदं वदेत् ।
ततो नुपूरशब्देन प्रविशद्वय मुद्धरेत् ॥
ततः पुरद्वयं साधक प्रिये पद मुद्धरेत् ।
आदि बीजं विसर्गाढ्यं शिवोऽन्तो भूतिनीमनुः ।
ॐ सुरतप्रिये दिव्यलोचनि कामेश्वरि जगन्मोहिनि ॥८॥

सुभगे काञ्चनमाले भूषणि नूपुरशब्देन प्रविश प्रविश पुरपुर साधक प्रिये ॐ अः स्वाहा । यह भूतिनीमन्त्र कहा गया है, इसके द्वारा सर्वकार्य सिद्धि होता है ॥ ८ ॥

विषं मातृपदात् भ्रातृमद् भगिनीपदमुद्धरेत् ।
ततः कटुद्वयं प्रोक्तं जययुग्मं समुद्धरेत् ॥
सर्वासुरपदात् प्रेतपूजिते समुदीरयेत् ।
हालाहलं व्योमवक्त्रं सविसर्गं समुद्धरेत् ।
वह्निजायान्त उक्तोऽसौ शुभकात्यायनो मनुः ॥ ९ ॥

ॐ मातृ भ्रातृ मद्भगिनी कटु कटु जय जय सर्वासुर प्रेत पूजिते ॐ हुं अः स्वाहा, यह शुभकात्यायनीमन्त्र है, इससे उक्त देवता सिद्धि होता है ॥ ९ ॥

इयं कात्यायनी विद्या स्मृता सिद्धि प्रदायिनी ।
अस्या मुद्राविधिं वक्ष्ये भूतिनीसिद्धिदायकम् ॥ १० ॥

यह कात्यायनी विद्या कहा गया, यह विद्या साधकों के सर्वकार्य में सिद्धि प्रदान करते हैं। अनन्तर यह कात्यायनी विद्या का मुद्राविधि कह रहा हूँ । इस मुद्रा से भूतिनी का सिद्धि होता है ॥ १० ॥

मुष्टिमन्योन्यमास्थायांगुलीनावेष्ट्य ततः परम् ।
प्रसार्याकुञ्चयेत्तत्र तर्जनीं सिद्धिमाप्नुयात् ॥

देहे मन्त्रे च सिद्धे च मनावाकर्षकर्मणि ।
भूतिनो माकर्षयेत् क्रोधमन्त्रयोग सहस्रकम् ॥
जुहुयाद्वश्यतां याति भूतिनी नात्र संशयः ।
श्रद्धाभक्तियुतोऽनेन मन्त्रेणावाहयेदमुम् ।
सुरकात्यायनी मुद्रा असाध्यार्थप्रदायिनी ॥ ११ ॥

उभयहस्ते (दोनों हाथों) से मुट्ठि बांधकर परस्पर अंगुलि समूह वेष्टन करके, उसके बाद तर्जनी अंगुलि दोनों प्रसारित करके किञ्चित् आकुञ्चित करे। इस मुद्रा से सिद्धि लाभ होता है। देहशोधन मन्त्रसिद्धि तथा आकर्षण आदि कार्य में यह मुद्रा प्रशस्त है। क्रोधमन्त्र सहस्र बार जप करके यह मुद्रा प्रदर्शन करने पर भूतिनी का आकर्षण सिद्धि होता है। उसके बाद होम आदि करने पर भूतिनी वशीभूता होती हैं। भक्तिश्रद्धायुक्त होकर क्रोधमन्त्र से भूतिनी का आवाहन करना होगा। अह सुरकात्यायनी मुद्रा से असाध्यार्थ साधन होता है ॥ ११ ॥

मुष्टि विधाय चान्योन्यं कुञ्चयेत्तर्जनीद्वयम् ।
इयं कात्यायनी मुद्रा भूतिनी सर्वसिद्धिदा ॥ १२ ॥

दोनों हाथों की परस्पर मुट्ठि बाँधकर तर्जनी द्वय को आकुञ्चित करके रखे, इसका नाम कात्यायनीमुद्रा है। इस मुद्रा से भूतिनी सर्वसिद्धि प्रदान करती है ॥ १२ ॥

अस्या एव तु मुद्राया मध्यमे मुखसङ्गते ।
कनिष्ठे द्वे निवेश्याथ निर्दिष्टा साधक प्रिया ॥
कुलभूतेश्वरी मुद्रा भूतिनी कुलवासिनी ।
अनया वद्धया शीघ्रं सिद्धिं यच्छति भूतिनी ॥ १३ ॥

उक्त कात्यायनी मुद्रा में मध्यमांगुलि द्वय (दोनों मध्यमांगुलि) संयुक्त करके कनिष्ठांगुलिद्वय निविष्ट करके रखना। यह मुद्रा साधक का अतिशय प्रियकार्य साधन करता है। इसका नाम कुलभूतेश्वरी मुद्रा है, यह मुद्रा बन्धन करने पर कुलवासिनी भूतिनी शीघ्र ही सिद्धि प्रदान करती है ॥१३॥

मुष्टि द्वयं पृथक् कृत्वा तर्जनीश्च प्रसारयेत् ।
भद्रकात्यायनी मुद्रा अभिप्रेत प्रदायिनी ॥ १४ ॥

दोनों हाथों की पृथक् पृथक् मुट्ठि बाँधकर दोनों तर्जनी को प्रसारित करे। यह भद्रकात्यायनी मुद्रा साधक को अभिलषित सिद्धि प्रदान करता है ॥ १४ ॥

उभे मुष्टि विद्यायाथ वेष्टयेत्तर्जनीद्वयम् ।
कुलकात्यायनी मुद्रा भूतिनीरक्षणक्षमा ॥
ख्यातेयं चण्डपूर्वाया जयमुख्यार्थ साधिनी ।
द्राविणी कुलगोत्राणां सर्वभूतभयङ्करी ॥ १५ ॥

दोनों हाँथों की मुट्ठि बाँधकर तर्जनी द्वय को परस्पर वेष्टन करे। इसका नाम कुलकात्यायनी मुद्रा है, इस मुद्रा से भूतिनी रक्षा करती है। चण्डकात्यायनी साधन में भी यह मुद्रा प्रशस्त है। यह सर्व शत्रु का कुलगोत्रादि का विद्रावण तथा सर्व भूतों का भयवर्द्धन करता है ॥ १५ ॥

वद्धा मुष्टि ततोऽन्योन्यं कनिष्ठे वेष्टयेदुभे ।
प्रसार्योभे च तर्जन्यौ प्रकुर्यात् कुण्डलाकृती ॥
त्रैलोक्यार्कार्षिणी मुद्रा सा रुद्रब्रह्मसाधिनी ।
किं पुनः सर्वभूतिन्याः सिद्धिरस्याः प्रसादतः ॥
शुभकात्यायनी मुद्रा प्रोक्तेयं वज्रपाणिना ।
पूजिता गन्धपुष्पाद्यैर्मत् स्यमांसादिभिस्तथा ॥
सिद्धि यास्यन्ति भूतिन्यो दास्यतां यान्ति तत्क्षणात् ॥१६॥

दोनों हाथों की मुट्ठि बाँधकर परस्पर कनिष्ठाद्वय को वेष्टन करे, उसके बाद तर्जनीद्वय प्रसारित करके कुण्डलाकृति करे। इस मुद्रा से त्रिभुवन को आकर्षण कर सकता है, एवं ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव तक सिद्ध होते हैं। इस मुद्रा के प्रसाद से भूतिनीसिद्धि होती है, इसका नाम शुभ-कात्यायनी मुद्रा है, यह मुद्रा देवराज वज्रपाणि ने कहा है। इस मुद्रा के द्वारा गन्ध, पुष्प, धूप, दीप मत्स्य तथा मांसादि उपहारों से पुजा करने पर तत्क्षणात् भूतिनी सिद्धि होकर दास्यता को स्वीकार करती है ॥ १६ ॥

अथ वक्ष्ये दरिद्राणां हिताय क्रोधभूपतिम् ।
भूतकात्यायनीसिद्धिसाधनं परमाद्भुतम् ॥
पितृभूमौ त्र्यहं स्थित्वा जपेदष्टसहस्रकम् ।
भूतकात्यायनी देवी शीघ्रमायाति सन्निधिम् ॥
रक्तपूर्णकपालेन भक्तितोऽर्घ्यं प्रदापयेत् ।
किङ्करोमि वदेत्तुष्टा भव मातेति साधकः ॥
राज्यं ददाति भोगयश्च सर्वाशाः पूरयत्यपि ।
पालयेन्मातृवत् पञ्चसहस्राब्दानि जीवति ।
मृते राजकुले जन्म नान्यथा क्रोधभाषित ॥ १७ ॥

अनन्तर दरिद्रदिगर के हितसाधन में निमित्त भूतकात्यान के परमात्भूत सिद्धि साधन बोल रही हैं। श्मशान स्थान में तीन दिवस तक वास कर आठ सहस्र मन्त्र जप करे। इस मुद्रा में त्रिभुवन आकर्षण करने पर ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव पर्यन्त सिद्ध होते हैं। इस रूप में करने पर देवी भूतकात्यायनी शीघ्र साधक के निकट आगमन करती हैं। तत्पर साधक रक्तपूर्ण मनुष्य के खोपड़ी में अर्घ्य प्रदान करें। इस पर देवी तुष्ट होकर साधक को बोलती हैं—कि तुम्हारा क्या कार्य सिद्ध करना है, वह बोलो। तब साधक बोलेगा—देवी ! हमको राज्य-भोग प्रदान करें एवं मेरी समस्त आशा पूरिपूर्ण हों। इस रूप में सिद्धि होने पर देवी साधक को मातृवत प्रतिपालन करती हैं एवं साधक पञ्चसहस्र वर्ष तक जीवित रहता है। तत्पश्चात मरने के बाद राजकुल में जन्म लेता है, इसके अलावा अन्य स्थान में नहीं। यह क्रोधभूपति ने कहा है ॥ १७ ॥

वज्रपाणिगृहं गत्वा जपेदष्टसहस्रकम् ।
क्रोधराजं नमस्कृत्य दिवा कुर्यात् पुरस्क्रियाम् ।
ततो रात्रावेकलिङ्गम् गत्वा सम्पूज्य भक्तितः ॥
जपेदष्टसहस्रन्त दिव्य पुष्पं प्रयच्छति ।
प्रार्थितं यच्छते देवी क्रोधभूप-प्रसादतः ॥ १८ ॥

वज्रपाणि के घर में गमन करके अष्ठ सहस्र जप करें। इस रूप में दिन में पूर्वकृत्य समाधान करके, रात को शिवलिङ्ग के समीप में जाकर क्रोधराज को नमस्कार करके अष्ट सहस्र जप करे एवं दिव्य पुष्प प्रदान करके देवी के समीप प्रार्थना करें। देवी क्रोधभूपति के प्रसाद से साधक को प्रार्थित वर प्रदान करती है ॥ १८ ॥

गत्वैकलिङ्गं यामिन्यां जपेदष्टसहस्रकम् ।
मञ्जीर शब्दितं तत्र श्रूयते प्रथमे दिने ॥
दृश्यते च द्वितीयेऽह्नि द्रष्टव्या न च भाषते ।
तृतीये यच्छते वाचं किमिच्छसि वद स्फुटम् ॥
भवोपस्थापिका यावजीवमित्याह साधकः ।
धनान्यानीय दिव्यां स्त्रीं कन्यां राजाङ्गनामपि ॥
सुमेरु शृङ्गं नयति पृष्ठमारोप्य जीवति ।
सहस्रार्द्धञ्च वर्षाणां जन्मराजकुले पुनः ॥ १९ ॥

रात काल में शिवलिङ्ग के निकट बैठकर अष्टसहस्र बार मन्त्र का जप करे। इस प्रकार जप करने पर प्रथम दिन साधक नूपुर शब्द सुनने लगेगा। दूसरे दिन, इस प्रकार जप करने से देवी का दर्शन पाता है, किन्तु देवी उस दिन कोई बात नहीं बोलती। तीसरे दिन पुनः इस प्रकार जप करने से देवी साधक को स्पष्टाक्षर से कहती है—हे साधक ! तुम क्या चाहते हो ? तब साधक कहें—तुम मेरी जीवन पर्यन्त परिचारिका होकर रहो। उससे देवी साधक के बाध्य होकर धनरत्नादि तथा दिव्य स्त्री लाकर साधक को देती है एवं पीठ पर चढ़ाकर, सुमेरुशृङ्ग पर ले जाती हैं। इस प्रकार सिद्धि होने पर साधक पञ्चशत वत्सर जीवित रहकर मरणान्तर राजकुल में जन्म ग्रहण करते हैं ॥ १९ ॥

नीचगासङ्गमं गत्वा जपेदष्टसहस्रकम् ।
परिवारान्विता दिव्यं भूतिन्यायाति सन्निधिम् ॥
आगता मन्त्रिता तु स्त्री भावेनापि च कामिता ।
उपस्थायी भवेन्नित्यं दीनारद्वय दायिनी ॥
गत्वोद्यानञ्च यामिन्यां जपेदष्टसहस्रकम् ।
दिनानि त्रीणि मञ्जीरशब्दस्य श्रवणं भवेत् ॥
चतुर्थे दृश्यते देवीं पञ्चमे दृश्यते पुनः ।
षष्ठ संख्यादिने पञ्चदीनाराणि प्रयच्छति ॥
सप्तमेऽह्नि शिवस्थाने विधाय मण्डलं शुभम् ।
धूपञ्च गुग्गुलुं दत्वा जपेदष्टसहस्रकम् ॥
भूतिनी कन्यकागत्य गृहं स्वागत माचरेत् ।
कामिता सा भवेद्भार्या प्रत्यहं रतिमाचरेत् ॥
मुक्ताहारं परित्यज्य शयने याति नित्यशः ।
गृहीतव्यं न तद्वारं ग्रहणाभावतोऽपि ॥
पञ्चविंशति दीनारं वस्त्रद्वयमनुत्तमम् ।
शक्रं नाशयते शीघ्रं सहस्रायुः करोति च ।
मृते राजकुले जन्म साधकस्य न संशयः ॥ २० ॥

किसी नदी तट पर जाकर आठ हजार जप करे, इस प्रकार करने पर परिवारगण वेष्टिता होकर भूतिनी देवी साधक के समीप आती है एवं स्त्री भाव से साधक की परिचारिका होकर प्रतिदिन दो स्वर्णमुद्रा प्रदान करती है।

किसी उद्यान के मध्य में जाकर यामिनीयोग से अष्टसहस्र जप करे।

इस प्रकार तीन रात जप करने पर नूपुर शब्द श्रुत होता है, चौथे दिन देवी का दर्शन होता है एवं पञ्चम दिवस में भी पुनर्वार देवी का दर्शन होता है एवं षष्ठ दिन देवी साधक को पञ्च स्वर्णमुद्रा प्रदान करती है। उसके बाद सातवें दिन शिवलिङ्ग के उपर दिव्य भूषणादि तथा धूप दीप स्थापन करके पुनर्वार अष्टसहस्र जप करे। इससे भूतिनी युवती वेश से घर आकर साधक का मङ्गलाचरण करती है। एवं साधक की भार्या होकर प्रतिदिन रात्रि में उनके साथ विविध विहार से कालयापन करती है।

प्रतिदिन प्रातः में विस्तरे पर मुक्ताहार परित्याग करके स्वस्थापन में प्रस्थान करती है। एवं प्रतिदिन इस प्रकार से देवी आगमन करती है। देवी प्रतिदिन साधक को २५ सुवर्णमुद्रा तथा एक जोड़ा कपड़ा प्रदान करती है, साधक के समस्त शत्रुओं का विनाश करती है। साधक इस प्रकार करने से सहस्रवर्ष जीवित रहकर मरणान्तर निःसंशय राजकुल में जन्म लेता है ॥ २० ॥

वज्रपाणि गृहं गत्वा जपेदष्टसहस्रकम्।
अन्यं देवालयं गत्वा जपेदष्टसहस्रकम् ॥
पुनारात्रौ जपेदष्टसहस्रं त्र्यहमेव च।
शताष्ट परिवाराढ्या शीघ्रमायाति भूतिनी ॥
सतोयचन्दनार्घ्येण तुष्टा यच्छति कामिकम्।
परिवारशतान्यष्ट वस्त्रलङ्कारभूषणैः ॥
रसै रसायनं पञ्च सहस्राब्दानि जीवति।
मृते राजकुले जन्म भवेत् क्रोधप्रसादतः ॥ २१ ॥

वज्रपाणि के घर में जाकर आठ हजार जप करके अन्य देवालय में आठ हजार जप करें, उसके बाद रजनीयोग से आठ हजार जप करें इस प्रकार तीन दिन साधक करे एवं एक सौ आठ परिवार के साथ भूतिनी आगमन करती है। साधक देवी को जल तथा चन्दन आदि के द्वारा अर्घ्य प्रदान करने पर देवी तुष्टा होकर शत शत परिवार के साथ वस्त्रालङ्कार द्वारा साधक की कामना परिपूर्ण करती है। साधक इस प्रकार पाँच हजार वर्ष पर्यन्त नानाविध रसकेलियों में सुख भोग करके जीवित रहकर एवं मरणान्तर राजकुल में जन्मग्रहण करते हैं ॥ २१ ॥

वज्रपाणिगृहं गत्वा जपेदष्टसहस्रकम्।
पूर्वसेवा भवेदस्याः पुरश्चरणपूर्विका ॥

द्वितीयायां समारभ्य चतुर्थ्यान्तु समापयेत् ।
रात्रि योगे च पञ्चम्यां हुनेदष्टसहस्रकम् ॥
करवीरभवैर्वह्नौ दधिक्षौक्ष घृतान्वितैः ।
मालतीकुसुमैरष्टसहस्रैकं शतद्वयम् ॥
सहस्रार्द्धसहायाढ्या महाभूतेश्वरी द्रुतम् ।
एते नूपुरशब्देन देयोऽर्घ्यः पुष्पवारिणा ॥
जननी भगिनी भार्या स्वेच्छया कामिता भवेत् ।
माता स्वर्णाद्यलङ्कारं भोजनञ्च प्रयच्छति ॥
भगिनी स्त्रियमानीय राज्यं यच्छति कामिकम् ।
दिव्यारूपा भवेद्भार्या सर्वाशाः पूरयत्यपि ॥
ददाति भोजनञ्चायुर्द्दशवर्षसहस्रकम् ।
मृते राजकुले जन्म वज्रपाणिप्रसादतः ॥
अयुतं हि जपेन्मन्त्रं पौर्णमास्यां पुरष्क्रिया ।
रात्रौ देवालयं गत्वा द्वारपूजां विधाय च ॥
सकलां प्रजपेद्रात्रिं प्रातरागच्छति ध्रुवम् ।
दत्त्वार्घ्यं रुधिरेणैवतुष्टा भवति किङ्करी ॥
प्रत्यहं भोजनं पञ्च दीनाराणि प्रयच्छति ।
शतमेकं पञ्चवर्षं जीवतीति न संशयः ॥ २२ ॥

वज्रपाणि के गृह में जाकर रात को आठ हजार जप करे एवं विधान क्रम से पुरश्चरण करके द्वितीया में आरम्भ करके चतुर्थी में जप समापन करना होगा, उसके बाद पञ्चमी के रात को दधि, मधु, तथा घृतयुक्त करवीपुष्प के द्वारा अष्टोत्तर सहस्र एवं मालतीपुष्प के द्वारा १२ सौ संख्यक् हवन करे। इस प्रकार जप हवन करने पर अर्द्धसहस्र परिवार से आवृत होकर महाभूतेश्वरी नूपुरध्वनि करके शीघ्र आगमन करती हैं। भूतेश्वरी के आगमन मात्र से उसे फूल तथा जलद्वारा अर्घ्य प्रदान करें। उस समय साधक इच्छानुसार से जननी, भगिनी अथवा भार्या कहकर सम्बोधन करें।

मातृ सम्बोधन में भूतिनी सुवर्णादि अलङ्कार तथा विभिन्न प्रकार भोजनीय द्रव्य एवं भगिनी सम्बोधन में उत्तमा स्त्री तथा भोज्यवस्तु प्रदान करती है। भार्या कहकर भूतिनी को आवाहन करने पर साधक की सभी आशा परिपूर्ण करके उत्तमोत्तम भोजनीय द्रव्य लाकर देती हैं।

इस प्रकार भूतिनी सिद्धि होने पर साधक दस हजार वर्ष तक जीवित रहता है तथा मरणान्तर राजकुल में जन्म ग्रहण करता है।

बाद में पूर्णिमा तिथि को दास हजार मन्त्र जप करें। यही है इस मन्त्र साधना का पूर्वकृत्य। रात को देवालय में जाकर द्वार पूजा करे, उसके बाद रात भर मन्त्र का जप करे, प्रातःकाल में देवी आगमन करती है, और उसी समय में रुधिर के द्वारा अर्घप्रदान करने पर देवी सन्तुष्ट होकर साधक की किङ्करी होती है। तथा प्रतिदिन विविध प्रकार के भोजन तथा पञ्चसुवर्ण मुद्रा प्रदान करती हैं। इस प्रकार सिद्धि होने पर साधक एक सौ पाँच वर्ष तक जीवित रहता है ॥ २२ ॥

विषबीजं ततो वर्मं तोयघ्नश्च समुद्धरेत्।
मांसं मे पदमाभाष्य प्रयच्छानलवल्लभा ॥
रात्रौ पितृभुवं गत्वा जपेदष्टसहस्रकम्।
पिशिताकर्षिणी देवी सिद्धा भवति निश्चितम् ॥
नीत्वा मांसपलान्यष्टौ विलोक्य च चतुर्द्दिशम्।
योषिद्ब्रह्म स्वरूपेण पुरस्तिष्ठति भूतिनी ॥
ततो मांसं प्रदातव्यं भुक्त्वा मांसं प्रयच्छति।
मांसादानेन म्रियते अक्षि कुक्षि स्फुटत्यपि ॥ २३ ॥

ॐ तोयघ्नं मांसं मे प्रयच्छ स्वाहा, रात को श्मशान में बैठकर उक्त मन्त्र का आठ हजार जप करे। इस प्रकार जप करने पर मांसाकर्षिणी भूतिनी देवी सिद्धा होती है। उसके बाद साधक अष्टपल अर्थात् ६४ तोला परिमित मांस हाथ में लेकर चारों ओर देखने पर सामने भूतिनी को देख पायगा, तब तत्क्षणात् देवी को मांस प्रदान करें। इसी समय मांस प्रदान न करने पर साधक की मृत्यु अथवा चक्षु तथा कुक्षि फट् जाता है ॥ २३ ॥

इति भूतडामरे अष्टकात्यायनी साधनं नामः पञ्चमः पटलः ॥ ५ ॥

३

षष्ठः पटलः

उन्मत्तभैरव्युवाच ।

सुरासुरजगद्वन्द्य जगतामुपकारक ।
श्रीमहामण्डलं ब्रूहि सर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥

उन्मत्तभैरव उवाच ।

विद्याधरोऽप्सरो यक्षःप्रेतगन्धर्व किन्नरैः ।
महोरगैः परिवृतो महादेवस्त्रिलोचनः ॥
क्रोधं प्रदक्षिणीकृत्य नमस्कृत्य पुनः पुनः ।
पादै शिरे विधायाथ भाषते क्रोधभूयतिम् ॥
क्रोधीश त्वं महाभूतदुष्टग्रहविमर्द्दक ।
कटपूतनवेतालक्लेशविघ्नविघातक ॥
प्रसीद देवदेवेश संसारार्णव तारक ।
पश्चिमे समये काले जम्बुद्वीपे कलौ युगे ॥
मर्त्यानामुपकारार्थं दुष्ट दुर्ज्जन निग्रहम् ।
भूतिनी यक्षिणी-नागकन्यका साधनं वद ॥
वोधिसत्वो महादेवं साधु साध्विति पूजयन् ।
महा मण्डलमाख्यातं सुव्यक्तं सुरपादपम् ॥ १ ॥

उन्मत्त भैरव कह रहे हैं, हे भैरव ! आप सुरासुरादि जगत के पूजनीय तथा जगत् के उपासक है, अतएव महासिद्धि प्रदायक महामण्डल मेरे निकट कहें ।

उन्मत्त भैरव कहने लगे, महादेव विद्याधर अप्सरा,-यक्ष, प्रेत, गन्धर्व, किन्नर तथा सर्पगण परिवृत होकर क्रोधभूपति का प्रदक्षिण करके बार बार नमस्कार करने के बाद दोनों पैर माथे पर धारण करके क्रोधभूपति को कहें—हे क्रोधेश्वर ! आप महाभूत तथा दुष्टग्रह आदि के विनाशक हो। देवादिदेव तथा संसार स्वरूप समुद्रतारक हो; इस समय इस कलियुग में मनुष्यों के उपकारार्थ दुष्टजन निग्रहकारक भूतिनी, यक्षिणी तथा नागकन्यादि साधना मेरे समक्ष कहें । क्रोधपति महादेव को साधुवाद प्रदान करके कहने लगे ॥ १ ॥

अथातः संप्रवक्ष्यामि महामण्डलमुत्तमम् ।
चतुरस्रं चतुर्द्वारं चतुष्कोणविभूषितम् ॥

दलैः षोडशभिर्युक्तं वप्रप्राकारशोभितम् ।
तत्र मध्ये न्यसेद् भीमं ततो ज्वालासमाकुलम् ॥
साट्टहासं महारौद्रं भिन्नाञ्जनचयोपमम् ।
प्रत्यालीढं चतुर्बाहुं दक्षिणे वज्रधारिणम् ॥
तर्जनीं वामहस्तेन तीक्ष्न दंष्ट्रा करालिनम् ।
कपालरत्न मुकुटं त्रैलोक्य स्यारिनाशनम् ॥
आदित्यकोटि सङ्काशमष्टनागविभूषितम् ।
अपराजितपदाक्रान्तं मुद्रावन्धेन तिष्ठति ॥
अनामिका द्वयं वेष्ठ्य आकुञ्चय तर्ज्जनीद्वयम् ।
कनिष्ठां मध्यमाञ्चैव ज्येष्ठांगुष्ठेन च क्रमात् ॥
एवं मुद्राधरः श्रीमान् त्रैलोक्य साध्यसाधकः ।
उमापतिं लिखेत् क्रोधपुरो विष्णुञ्च दक्षिणे ॥
रक्षोदेवं पश्चिमे तु कार्त्तिकेयं तथोत्तरे ।
ईशाने च गणाधीशमादित्यं वह्निसंस्थितम् ॥
नैऋंते तु लिखेद्रा हुं वायुकोणे नटेश्वरम् ।
चन्द्रं सम्पूजयेद्वामे क्रोधराजस्य भूपतेः ॥
प्रभादेवीं सुवर्णाभां सर्वालङ्कारभूषिताम् ।
ईषद्धषित वदनां क्रोधवामे सदा लिखेत् ॥
क्रोधाग्रे पुष्पहस्ताञ्च श्रीदेवीं परिभावयेत् ।
सालङ्कारां धूपहस्तां क्रोधदक्षे तिलोत्तमाम् ॥
क्रोधस्य पृष्ठभागे च दीपहस्तामलंकृताम् ।
दिव्यरूपां शशीं देवीं द्विजराजमुखीन्तथा ॥
आग्नेयाञ्च न्यसेद् भद्रां दिव्यकुण्डलमण्डिताम् ।
गृहीतगन्धहस्ताञ्च रत्नभूषणभूषिताम् ॥
विन्यसेद्रक्षः कोष्ठायां वीणायुक्तं सरस्वतीम् ।
वायव्यां यक्षिणीं रत्नमालाढ्यां सुरसुन्दरीम् ॥
ईशाने च विशालाक्षीं सर्वालङ्कार भूषिताम् ।
रूपयौवनसम्पन्नां स्वर्णवर्णां समालिखेत् ॥
इन्द्रोवह्निर्यमोरक्षो वरुणो वायुरेव च ।
कुवेरश्च शशीशानो वाह्यप्राचादिमण्डले ॥ २ ॥

इसके बाद मैं महामण्डल कह रहा हूँ सुनो ! चतुरस्र तथा चतुर्द्वार, चतुष्कोण, षोडशदल पद्म एवं वप्रप्राकारादि शोभित मण्डल निर्माण करके उसके मध्य में भीममूर्त्ति का विन्यास करें।

भीममूर्त्ति का आकार इस प्रकार है :—अत्यन्त तेजीयान, अट्टहास युक्त, महाभयङ्कर, अञ्जन के समान देह कान्ति, सामने दाहिने पैर, चतुर्बाहुधारी, दाहिने हाँथ में वज्र, बाँये हाँथ में तर्जनीमुद्रा, तीक्ष्न दाँत में भयङ्कराकार, मनुष्य मस्तक तथा रत्नमुकुटधारी त्रिभुवन के शत्रुविनाशक, कोटिसूर्य के समान तेजस्वी, अष्टनाग विभूषित एवं मुद्रा बन्धन करके स्थित हैं।

तदनन्तर मुद्रा कहा जा रहा है, अनामिकांगुलि दोनों परस्पर बाँधकर तर्जनीद्वय को आकुञ्चित करे एवं वृद्धांगुलि के द्वारा मध्यमा तथा कनिष्ठांगुलि को आवद्ध करे। इस प्रकार मुद्राधर श्रीमान् क्रोधपति त्रिभुवन का सिद्धि प्रदान करते हैं। क्रोधपति के अग्रभाग में दक्षिण में विष्णुमूर्ति लिखें। मण्डल के पश्चिम में कुवेर, उत्तर में कार्त्तिकेय, ईशानकोण में गणेश, दक्षिण में सूर्य, नैऋ‌र्तकोण में राहु तथा वायुकोण में निऋ‌र्ति तथा क्रोधभूपति के बाँयें चन्द्रमूर्त्ति अङ्कित करके पूजा करें।

क्रोध-राज के बाँये सुवर्णवर्णा सर्वालङ्कार भूषिता तथा किञ्चित हास्य वदना प्रभादेवी की मूर्त्ति लिखें। क्रोधराज के अग्र में पुष्पहस्ता लक्ष्मीदेवी, दक्षिण भाग में सालङ्कारा धूपहस्ता तिलोत्तमा, पीठ पर दीपहस्ता, सालङ्कारा विद्याधरीरूपा चन्द्रमुखी शशीदेवी, अग्निकोण में दिव्यकुण्डलधारिणी गन्धहस्ता रत्नभूषण भूषिता भद्रादेवी, उत्तरकोण में वीणायुक्ता सरस्वती, वायुकोण में रत्नमाला विभूषिता सुन्दरसुन्दरीरूपा विद्याधरी, ईशानकोण में सर्वालङ्कार भूषिता विशालाक्षि एवं मण्डल के पूर्वादि आठ दिकों में इन्द्र, वह्नि, यम, निऋ‌र्ति, वरुण, वायु, कुवेर तथा ईशान इन सभी का मूर्ति लिखकर आवाहन पूर्वक पूजा करे ॥ २ ॥

> अथ दीक्षाविधिं वक्ष्य प्राणिनां दुरितापहम् ।
> क्रोधमुद्राधरं शिष्यं नीलवस्त्रयुगेन च ।
> छादितं क्रोधगं चित्तं गुरुर्मन्त्रं निशामयेत् ॥ ३ ॥

इसके बाद प्राणिवर्ग के सर्वपापनाशक दीक्षाविधि को कह रहा हूँ। शिष्य को क्रोध मुद्रावद्ध करके दो नीलवस्त्र के द्वारा आच्छादन करे (ढंक देना)। उसके बाद गुरुदेव क्रोधमन्त्र सुनायेंगे ॥ ३ ॥

अथ क्रोध मनुं वक्ष्ये असाध्यं येन सिध्यति ।
बोज हालाहलं गृह्य क्रुं क्रों बोजमतः परम् ॥
भयङ्करार्णमाभाष्यासिताङ्गं क्षतजं स्थितम् ।
प्रलयाग्निमहाज्वालामाभाष्य मनुमुद्धरेत् ॥
एवमुच्चारिते क्रोधः स्वयमेव प्रविश्यति ।
वद्धातु क्रोधनीं मुद्रां शिरस्यास्ये च वक्षसि ॥
स्वयं वज्रधरो भूत्वा तावत्तिष्ठद्वयं पुनः ।
आभाष्य पातये त्तोयं वज्रदेहो भवन्नरः ॥ ४ ॥

तदनन्तर क्रोधभूपति का मन्त्र कह रहा हूँ । इस मन्त्र से मनुष्य असाध्य साधना कर सकता है । ॐ हुं वज्र फट् क्रुं क्रों क्रुं क्रुं हुं हुं फट् यह मन्त्र उच्चारण करने पर क्रोधभैरव स्वयं आगमन करते हैं । शिष्य के मस्तक में हृदय में तथा मुख में क्रोधमुद्रा बन्धन करके उक्त मन्त्र से जल को अभिमन्त्रित करके शिष्य के मस्तकादि में सिचने पर शिष्यदेह वज्र के समान दृढ़ होता है ॥ ४ ॥

विसर्गात् प्रविश क्रोधकूर्च्चयुग्ममुदीरयेत् ।
विशेदनेन मन्त्रेण क्रोधेनाऽभ्यर्च्चयेत्रिधा ॥
नीलवस्त्रं परित्यज्य दर्शयेत् कुलदेवताम् ।
ततोऽभिषेचनार्थञ्च मुद्रा मन्त्रं जपेक्षिपेत् ।
तेनाभिषिञ्चितः शिष्यो गुरु सन्तोषयेत्ततः ॥ ५ ॥

"अः प्रविश क्रोध हुं हुं" इस मन्त्र का तीन बार उच्चारण करके क्रोधभूपति की अर्चना करे, एवं शिष्य के मस्तक से नीलवस्त्र परित्याग करके कुलदेवता का प्रदर्शन करे । उसके बाद अभिषेकार्थ जल में मुद्रामन्त्र को निक्षेप करके उस जल के द्वारा शिष्य को अभिषिक्त करें । इसके बाद शिष्य गुरु को दक्षिणादि प्रदान करके सन्तुष्ट करे ॥ ५ ॥

अथातः संप्रवक्ष्यामि क्रोधमन्त्रस्य साधनम् ।
येन साधित मात्रेण सिद्धिः सर्वविधा भवेत् ॥
धृत्वा हस्तद्वयेनासौ भावयेच्चन्द्रमण्डलम् ।
विषं भयङ्करं बोजं ज्वालामालाकुलं हृदि ॥
ध्यात्वा जपेदमुं मन्त्रं वक्ष्यमाणं शृणुष्व तत् ।
विषम् हनयुगं गृह्य विध्वंसय द्वयान्वितम् ॥

नाशयेति ततः पापं कालमन्त्रान्वितो मनुः ।
शून्यं स्वमन्तरं चिन्त्यं हृदयं क्रोधमण्डितम् ॥
ज्वालामालाकुलं तस्य मध्ये ध्यायेन्निरञ्जनम् ।
अनेन क्रोधमन्त्रेण चिन्तयेत् क्रोधभूपतिम् ॥
तारात् क्रोधावेशयावेशय कूर्च्चान्वितं मनुम् ।
सञ्चिन्त्य वज्रपाणिञ्च क्रोधाधीशं स्मरेद्बुधः ॥
हालाहलाल्लिखेद्वज्रं क्रोधावेश प्रशामय ।
कालबीजान्तमुच्चार्य चिन्तयेच्च स्वदेवताम् ॥
ततस्तु क्रोधमन्त्रेण षडङ्गन्यास माचरेत् ।
विषं वज्रयुतं बोधिमहाकालं न्यसेद्वृदि ॥
विषं हन युगं वज्रं कूर्च्चाद्यं विन्यसेत् शिरः ।
हालाहलं दहयुगं वज्रं कालं न्यसेत् शिखाम् ॥
विषमन्त्रयुतं वज्रमन्त्रञ्च कवचं न्यसेत् ।
तारं दीप्तयुतं वज्र महाकालञ्च नेत्रयोः ॥
विषं हन युगं गृह्य दहयुग्मपदान्वितम् ।
क्रोधवज्रपदं तद्वत् सर्वदुष्टानतः परम् ॥
ततो मारय वर्मास्त्रं दिग्वन्धनान्तं षडङ्गकम् ।
अन्योन्यान्तरितां मुष्टिं कुञ्चयेत्तर्ज्जनीयुगम् ॥
विख्यात्यां क्रोधमुद्रेयं हृदयात् क्रोधमाह्वयेत् ।
विषं वज्रधराद् गृह्य महाक्रोधपदं ततः ॥
समयेतिपदाद् गृह्य अनुपालयमुद्धरेत् ।
शीघ्रमागच्छसि पदं वर्मास्त्रं ज्वलनप्रिया ॥
अनेन मण्डले स्थाप्यं ततोऽर्घ्यमनु मुद्धरेत् ।
बिषं सर्वपदाद्देवतापदं समुदीरयेत् ॥
प्रसीद कालबीजान्तां सविसर्गान्तु चण्डिकाम् ।
अनेन दापयेदर्घ्यं पूजार्थं मनुमुद्धरेत् ॥
बिषबीज समुद्धृत्य नाशयेति पदं ततः ।
सर्वदुष्टान् हनयुगं पच भस्मी ततः कुरु ॥
महाकालद्वयं चास्त्रं शिवोन्तमर्च्चनीमनुः ।
ताराद्यं समुद्धृत्य महाचण्डिपदं ततः ॥
बन्धद्वयं ततो दत्वा दशदिशो निरूढद्वयम् ।

द्विग्वन्धनमनुः प्रोक्तो वक्ष्ये माहेश्वर मनुम् ॥
शिवो व्याहृतयः स्वाहा महादेवमनुर्मतः ।
विषं विकालिकायुक्तामुद्धरेत् कुलभैरवीम् ॥
श्रीचक्रपाणिने द्विठोऽयं वैष्णवो मनुः ।
विषं विष्णुर्देव गुरुपदमाभाष्य तत् परम् ॥
देवकाय शिवोन्तोऽयं प्रजापति मनुर्मतः ।
विषं रौद्र क्रोधपदं धारिणे च ततः परम् ॥
वह्निकान्ता स्त्रयुक्तोऽयं मनुः कौमाररूपिणः ।
बीज हालाहलं गृह्य गणपतये पदं ततः ॥
द्विठान्तोऽयं मनुः प्रोक्तो गाणपत्योऽयमीरितः ।
सान्तं सानन्तमुद्धृत्य नादविन्दु समन्वितम् ॥
ततः प्राथमिकं धूम्रं ध्वजमादर संयुतम् ।
सहस्र किरणायेति पदाज्जलनवल्लभा ॥
हालाहलादिरुक्तोऽसौ मनुरादित्य रूपिणः ।
स्थिति बीज समुद्धृत्य चन्द्रसूर्यपद ततः ॥
पराक्रमाय वर्मास्त्रं द्विठोराहोर्मनुः स्मृतः ।
विषं नटेश्वर पदं नटद्वयमतः परम् ॥
विषं भूतेश्वरं बीजं शिवोन्तोऽसौ नटेश्वरः ।
हालाहलं समृद्धृत्य चन्द्रायपदमीरयेत् ॥
वह्निप्रियान्तमित्युक्तो मनुश्चन्द्रमसः स्मृतः ।
विषं सौम्रमनुं प्रोक्त्वा नत्यन्तासौ प्रभेश्वरी ॥
तारं विष्णुप्रियाबीजं नमोऽन्तः श्रीमनुः स्मृतः ।
विषं हरिप्रियाबीजं हां नति श्रोतिलोत्तमा ॥
पश्वरश्मिरमाबीजं नत्यन्ता च शशीमताः ।
विषबीजं जगन्मान्यां सनत्यन्तं समुद्धरेत् ॥
रम्भामनुरयं प्रोक्तो मण्डले क्रोधभूपतेः ।
हालाहलं समुद्धृत्य सरस्वत्यै पदं ततः ॥
गाहयद्वय सर्वश्च द्विठः सारस्वतो मनुः ।
विषं यक्षेश्वरीबीजं धूम्रभैरव्यलंकृतम् ॥
वह्निप्रियायुतोऽन्तोयं प्रोक्तो यक्षेश्वरीमनुः ।
हालाहलं समुद्धृत्य भूतिनीपदसंयुतम् ॥

ततः प्राथमिकं वह्निप्रियान्तो भूतिनोमनुः ।
भूतिन्यष्टौ महाद्वार पालिन्यः समुदीरीताः ॥
विषं निरञ्जनं गृह्य तिष्ठ सुवासिनीपदम् ।
शिरोनतिश्च भूतिन्या मन्त्रोऽयं हृदयाह्वयः ॥ ६ ॥

तदनन्तर क्रोध मन्त्र की साधना कह रहा हूँ। इस प्रकार साधना करने पर सभी प्रकार का कार्य सिद्धि होता है। दोनों हाथों में मुद्राधारण करके चन्द्रमण्डल की चिन्ता करे।

ॐ ज्वाला समाकुलं नमः इस मन्त्र से हृदय में ध्यान करके निम्नलिखित सभी मन्त्रों का जप करें।

ॐ हन हन विध्वंसय विध्वंसय नाशय नाशय पापं हुं फट् स्वाहा यह मन्त्र जप करके हृदय में क्रोधभैरव की चिन्ता करे। ॐ क्रोध आवेशय आवेशय इस मन्त्र से वज्रपाणि क्रोधभूपति को अपने हृदय में भावना करे। ॐ बज्रक्रोधावेशय प्रशामय हुं, इस मन्त्र से अपने देवता की चिन्ता करे। उसके बाद क्रोधमन्त्र से षडङ्गन्यास करे। ॐ वज्रबोधि हृदयाय नमः।

ॐ हन हन वज्र हुं स्वाहा। ॐ दह दह वज्र हुं शिखायै वषट्। ॐ फट् वज्र फट् कवचाय हुं। ॐ दीप्त वज्र हुं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ हन हन दह दह क्रोध वज्र सर्वदुष्टान् मारय मारय हुं फट् स्वाहा अस्त्राय फट्। इस प्रकार षडङ्गन्यास करके दिग्बन्धन करना चाहिये।

दोनों हाँथ की मुट्ठि परस्पर संयुक्त करके तर्जनीद्वय को आकुञ्चित (थोड़ा टेढ़ा) करे, इस विख्यात क्रोध मुद्रा के द्वारा हृदय देश में क्रोधराज का आवाहन करना चाहिये।

'ॐ बज्रधर महाक्रोध समयमनुपालय शीघ्रमागच्छसि त्वं हुं फट् स्वाहा' इस मन्त्र से मण्डल पर देवता को स्थापित करके अर्घ्य प्रदान करे अर्घ्य प्रदान का मन्त्र है—ॐ सर्वदेवता प्रसीद हुं अः ह्रीं।

इस मन्त्र से अर्घ्य प्रदान करे।

ॐ नाशय सर्वदुष्टान् हन हन पच पच भस्मीकुरु हुं हुं फट् स्वाहा इस मन्त्र से पूजा करना चाहिए।

'ॐ वज्र महाचण्डि वन्ध वन्ध दशदिशे निरुद्ध' इस मन्त्र से दिग्बन्धन करे।

'ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा' इस मन्त्र से महादेव की पूजा करें। 'ॐ अं आं असिचक्रपाणिने स्वाहा' इस मन्त्र से विष्णु की पूजा करें। एवं 'ॐ विष्णुर्देवगुरु-देवकाय स्वाहा' इस मन्त्र से ब्रह्मा की तथा 'ॐ ह्रौं क्रोध-धारिणे स्वाहा इस मन्त्र से कार्त्तिकेय की, 'ॐ गणपतये स्वाहा इस मन्त्र से गणेश की, 'ॐ ह्रीं हं सः सहस्रकिरणाय स्वाहा, इस मन्त्र से सूर्य की, ॐ चन्द्र-सूर्याय पराक्रमाय हुं फट् स्वाहा इस मन्त्र से राहु की, ॐ नटेश्वराय नट नट ॐ ह्रीं स्वाहा इससे नटेश्वर की, ॐ चन्द्राय स्वाहा इस मन्त्र से चन्द्र की, ॐ ह्रीं नमः इस मन्त्र से प्रभादेवी की, ॐ श्रीं नमः' इस मन्त्र से लक्ष्मी की ॐ श्रीं ह्रां नमः' इस मन्त्र से तिलोत्तमा की, ॐ थ्रीं नमः इस मन्त्र से शशीदेवी की ॐ जगन्मान्यायै नमः इस मन्त्र से क्रोध मण्डल में रम्भादेवी की पूजा करें।

ॐ सरस्वत्यै गाहय गाहय सर्वान् स्वाहा इस मन्त्र से सरस्वती की पूजा करें। ॐ षीं स्वाहा, यह यक्षेश्वरी का पूजन मन्त्र है।

ॐ भूतिनी ह्रीं स्वाहा यह भूतिनी मन्त्र से मण्डल के अष्टद्वार में अष्टभूतिनी की पूजा करे। 'ॐ सुवासिन्यै स्वाहा नमः' इस मन्त्र से पुनः मण्डल पर भूतिनी की पूजा करनी होगी ॥ ६ ॥

अथातः संप्रवक्ष्यामि मुद्रां परमदुर्लभाम् ।
यया विज्ञातया क्रोधः स्वयं सिध्यति नान्यथा ॥
अन्योन्यमगुली वेष्टय द्वेतर्जन्यौ प्रसारयेत् ।
तर्जनीं कुण्डलीं कृत्वा मुद्रा पापप्रणाशिनी ॥ ७ ॥

तदनन्तर परम दुर्लभ मुद्रा कह रहा हूँ ! जिस मुद्रा के विज्ञान मात्र से स्वयं क्रोधपति भूतनाथ सिद्ध होते हैं। इसका अन्यथा न करें। दोनों हाँथों के अंगुलियों को परस्पर वेष्टन करके तर्जनीद्वय प्रसारित करके कुण्डलाकार करे, यह मुद्रा सभी प्रकार के पाप को नाश करता है ॥ ७ ॥

अन्योन्य मुष्टिमास्थाय वेष्टयेत्तर्जनीद्वयम् ।
क्रोधस्य खड्गमुद्रेयं त्रैलोक्यक्षयकारिणी ॥ ८ ॥

दोनों हाँथों की मुट्ठि बाँधकर तर्जनीद्वय को परस्पर वेष्टन करे, इसका नाम क्रोधराज का खड्गमुद्रा है। यह मुद्रा त्रिभुवन क्षय कर सकता है ॥८॥

कृत्वा मुष्टिं ततोऽन्योन्यं मध्यमे द्वे प्रसारयेत् ।
प्रोक्ता महाशिवोमुद्रा सद्यः सिद्धि प्रदायिनी ॥ ९ ॥

अस्या एव मुद्राया मध्यांगुलौ प्रसारयेत् ।
तर्जन्यौ च दृढीकृत्वा शिखामुद्रा प्रकीर्त्तिता ॥ १० ॥
अस्या एव च मुद्रायाः प्रसार्य तर्जनीद्वयम् ।
तर्जन्या मध्यमां स्पृष्ट्वा कनिष्ठानामिके तथा ।
धेन्वाख्येयं महामुद्रा नियुक्ताचार्यकर्मणि ॥ ११ ॥

दोनों हाँथों की मुट्ठि बाँधकर मध्यमांगुलिद्वय को प्रसारित करे। इसका नाम महाशिव मुद्रा है। यह मुद्रा सद्यः सिद्धि प्रदान करता है। उक्तरूप मुद्रा करके अनामिका तथा मध्यमांगुलि प्रसारित करके तर्जनीद्वय दृढ़रूप से वद्ध करे। इसका नाम शिखा मुद्रा है। उक्त शिखा मुद्रा में तर्जनीद्वय प्रसारित करके उसके द्वारा मध्यमा कनिष्ठा तथा अनामिका को स्पर्श करे, इसका नाम धेनु मुद्रा है, यह मुद्रा सभी प्रकार के आचार्य कार्य में नियुक्त करें ॥ ९-११ ॥

मुष्टिमन्योन्यमास्थाय अंगुष्ठौ च प्रसारयेत् ।
धूपाख्येयं महामुद्रा नियुक्ता धूपकर्मणि ॥ १२ ॥

दोनों हाँथों की मुट्ठि बाँधकर अंगुष्ठांगुलिद्वय को प्रसारित करे। इसका नाम धूप मुद्रा है, यह मुद्रा धूपप्रदान में प्रशस्त है ॥ १२ ॥

पृथगन्योन्यमास्थाय प्रसार्य वामतर्जनीम् ।
प्रधानावाहनीमुद्रा युक्तावाहन कर्मणि ॥ १३ ॥

पृथग्रूप से दोनों हाँथ की मुट्ठी बाँधकर बायें हाँथ के तर्जनी को प्रसारित करे, यह मुद्रा आवाहन कार्य नियोग करता है ॥ १३ ॥

स्व दक्षहस्तांगुष्ठेन कनिष्ठा नखमाक्रमेत् ।
शेषांगुलीः प्रसार्याथ बाहुमूले प्रविन्यसेत् ।
तस्माक्षिपेदियं मुद्रा दिग्बन्धनकरी स्मृता ॥ १४ ॥

अपने दाहिने हाँथ की अंगुष्ठा अंगुलि के द्वारा कनिष्ठांगुलि को आक्रमण करे, अवशिष्ट अंगुलियों को प्रसारित करके बाहुमूल में स्थापन करे, यह मुद्रा दिग्बन्धन कार्य में प्रशस्त है ॥ १४ ॥

उत्ताना अंगुलीः कार्या भिन्नतर्जन्यनामिकाः ।
इयं मुद्रा महारौद्र वज्रकर्मणि पूजिता ॥
उत्ताना अंगुलीः कृत्वा तर्जनीं वेष्टा कुञ्चयेत् ।
शङ्खमुद्रेति कथिता देवदेवस्य चक्रिणः ॥ १५ ॥

तर्जनी तथा अनामिका के अलावा सभी अंगुलि को उठाये, यह मुद्रा क्रोधभैरव के पूजा आदि में नियुक्त करें। सभी अंगुलि को उठा कर तर्जनी अंगुलि वेष्टन करके कुञ्चित करें, इसका नाम शङ्खमुद्रा है, यह मुद्रा विष्णु पूजा में प्रशस्त है ॥ १५ ॥

अन्योन्यमंगुलीं वेष्टय कनिष्ठाञ्च प्रसारयेत् ।
कमण्डलु विधानाख्या मुद्रेयं परिकीर्त्तिता ॥ १६ ॥

परस्पर सभी अंगुलि को वेष्टन करके कनिष्ठांगुलि को प्रसारित करे, इसका नाम कमण्डलु मुद्रा है ॥ १६ ॥

वाममुष्टिं विधायाथ तर्जनीमध्यमे ततः ।
प्रसार्य तर्जनीमुद्रा निर्दिष्टा वज्ररूपिणः ॥ १७ ॥

बाँयें हाँथ की मुट्ठि बाँधकर तर्जनी तथा मध्यमांगुलि को प्रसारित करे, यह मुद्रा ब्रह्मा के पूजा आदि कार्य में नियुक्त करना चाहिए ॥ १७ ॥

वामपाणि कृता मुष्टिर्मध्यमामपि तर्जनीम् ।
प्रसार्य तर्जनीं कुञ्च मध्यमाञ्चापि वेष्टयेत् ॥
कनिष्ठाञ्च प्रसार्याथ मध्यपर्वणि धारयेत् ।
ख्याता गौरीति मुद्रेयं विशुद्धा शुद्धकर्मणि ॥ १८ ॥

बाँयें हाँथ की मुट्ठि बाँधकर मध्यमा तथा तर्जनी अंगुलि को प्रसारित करे, एवं तर्जनी के द्वारा मध्यमा को वेष्टन करके रखें, एवं कनिष्ठांगुलि को फैलाकर मध्य पर्व में धारण करें, इसका नाम गौरीमुद्रा है, यह मुद्रा सभी कार्यों के लिए विशुद्ध है ॥ १८ ॥

उत्ताना अंगुलीः कृत्वा मुष्टिं तत्र च धारयेत् ।
वामां कनीयसीं भग्नामंगुष्ठौ मुष्टि संस्थितौ ॥
वामांगुष्ठं पर्वगतं दक्षिणेन च संगतम् ।
आदित्यरथ मुद्रेयं प्रोक्ता क्रोधाधिपेन च ॥ १९ ॥

सभी अंगुलियों को उठाकर मुट्ठि बाँधकर एवं अंगुष्ठांगुलि द्वय मुट्ठि के उपर स्थापित करके वामांगुष्ठ के पर्व तक मुट्ठि के भीतर विन्यास करें, इसका नाम आदित्यरथमुद्रा है, यह मुद्रा स्वयं क्रोधराज ने कहा है ॥ १९ ॥

प्रसार्य दक्षिणं पाणिं भग्नं तर्जन्यनामिकाम् ।
विधाय राहुमुद्रेयं क्रोधराजेन भाषिता ॥ २० ॥

दाहिने हाँथ को प्रसारित करके तर्जनी तथा अनामिका को भग्न करके रखना चाहिए, यह राहु मुद्रा है। इसे स्वयं क्रोधराज ने कहा है ॥ २० ॥

नाटयकारं दक्षकरं कृत्वा मुष्टिं विनिक्षिपेत् ।
तर्जनीं दक्षिणां वामे मुष्टिश्चापि प्रसारयेत् ॥
ज्येष्ठांगुष्ठेन च तथा कनिष्ठानखमाक्रमेत् ।
नटेश्वरस्य मुद्रेयं निर्दिष्टा सिद्धिदायिनी ॥ २१ ॥

नटाकार से दक्षिण हाँथ की मुट्ठि बांधकर बाँयें हाँथ की तर्जनी को प्रसारित करे, एवं वृद्धांगुलि के द्वारा कनिष्ठा को आक्रमण करना चाहिए। यह नटेश्वर मुद्रा सर्वसिद्धि प्रदान करता है ॥ २१ ॥

कनिष्ठान्योन्यमावेष्टय मुष्टिं कृत्वा पृथक् पृथक् ।
उमाख्येयं महामुद्रा प्रभेश्वर्या इह शृणु ॥
करावुभौ भगाकारौ क्षिपेन्मूर्ध्नि प्रभेश्वरी ।
अंगुलीसंपुटौ मूर्ध्नि क्षिपेन्मुद्रा श्रियः स्मृता ॥ २२ ॥

पृथग् रूप से मुट्ठि बाँधकर कनिष्ठाद्वय को वेष्टन करे, इसका नाम उमामुद्रा है। इसके बाद प्रभा देवी की मुद्रा कह रहा हूँ सुनों, दोनों हाँथ भगाकार करके माँथे पर निक्षेप करे, इसका नाम प्रभेश्वरी मुद्रा है; सभी अगुलि पुटित करके माँथे पर क्षेपण करे, यह मुद्रा लक्ष्मीदेवी की अति प्रिय मुद्रा है। इस मुद्रा के द्वारा लक्ष्मी की पूजा करनी चाहिए ॥ २२ ॥

अन्योन्यमुष्टि मास्थाय कनिष्ठां तर्जनीं तथा ।
वेष्टयेच्च शिरोदीपे शिखाकारेण भ्रामयेत् ।
मुद्रेयं श्रीशशीदेव्या दर्शनेनैव सिध्यति ॥ २३ ॥

दोनों हाँथ की मुट्ठि परस्पर बाँधकर कनिष्ठा तथा तर्जनी को वेष्टन करना चाहिए, इस मुद्रा के दर्शनमात्र से ही शशीदेवी सिद्धा होती हैं ॥२३॥

मुष्टिमन्योन्यमास्थाय ज्येष्ठांगुल्यः प्रसारयेत् ।
तर्जन्यां स्थापयेन्मूले मुद्रा सरस्वती स्मृता ।
कृताञ्जलिं न्यसेन्मूर्ध्नि ज्ञया मुद्रा तिलोत्तमा ॥ २४ ॥

दोनों हाँथों की मुट्ठि परस्पर युक्त करके वृद्धांगुलि को प्रसारित करे एवं तर्जनी को मूल में स्थापन करे, इस मुद्रा के द्वारा सरस्वती की पूजा करे। दोनों हाथों की अञ्जलि माँथे पर धारण करने से तिलोत्तमा मुद्रा होती है ॥ २४ ॥

हस्तान्योन्यं पुटाकारं कृत्वा संस्थापयेद् यदि ।
इयं मुद्रा महादेव्या रम्भायाः परिकीर्त्तिता ॥ २५ ॥

दोनों हाँथ पुटाकार करके हृदय पर स्थापन करे, यह मुद्रा महादेवी रम्भा के पूजा आदि कार्य में नियुक्त करना चाहिए ॥ २५ ॥

अथातः संप्रवक्ष्यामि महामण्डलवर्त्तिनीम् ।
इन्द्रादिलोक पालानां मनुमिष्टार्थ साधनम् ।
हालाहलश्च शक्राय शिरः शक्रमनुमंतः ॥ २६ ॥

तदनन्तर महामण्डल मध्यवर्त्ति इन्द्रादि लोकपालों का सर्वार्थ साधना मन्त्र कह रहा हूँ, 'ॐ शक्राय स्वाहा' इस मन्त्र से इन्द्र की पूजा करे ॥२६॥

पश्चरश्मि रग्नय इति शिरोऽन्तः परिकीर्तितः ।
तारोयमायेति शिरः प्रोक्ता याम्यो महाहनुः ॥ २७ ॥

ॐ अग्नये स्वाहा इस मन्त्र से अग्निका, ॐ यमाय स्वाहा इस मन्त्र से यम की पूजा करे ॥ २७ ॥

विषबीजं समुद्धृत्य राक्षसाधिपतिस्ततः ।
पतयेजययुग्मश्च द्विठान्तो नैऋतो मनुः ॥ २८ ॥
ङेन्तं वरुणमाभाष्य जलाधिपतये ततः ।
हरद्वयं शिरोन्तोयं तारादि वरुणो मनुः ॥ २९ ॥

ॐ राक्षसाधिपतये जय जय स्वाहा इस मन्त्र से निऋति की तथा वरुणाय जलाधिपतये हर हर स्वाहा इस मन्त्र से वरुण की पूजा करे ॥ २८-२९ ॥

आदिबीजं समुद्धृत्य वायवे तारयुग्मकम् ।
वह्निजायान्त उक्तोऽयं मनुर्वायोर्महात्मनः ॥ ३० ॥
विषबीजं समुद्धृत्य कुवेराय पदं ततः ।
यक्षाधिपतये स्वाहा कुवेरस्य मनुः स्मृतः ॥ ३१ ॥
तारं चन्द्रायेति शिरः सौम्य ईशानगो मनुः ॥ ३२ ॥
आदि बीजं समुद्धृत्य ईशानाय द्विठस्ततः ।
ईशानस्य मनुः प्रोक्तः ईशानदिशि संस्थितः ॥ ३३ ॥

ॐ वायवे तार तार स्वाहा यह महात्मा वायु का मन्त्र है, ॐ कुवेराय यक्षाधिपतये स्वाहा यह मन्त्र कुवेर का है। ॐ चन्द्राय स्वाहा यह मन्त्र सोम का है। ॐ ईशानाय स्वाहा यह मन्त्र ईशान का है ॥ ३०-३३ ॥

मुद्रा सर्वेश्वरीपूर्वं सुन्दर्या अपि कथ्यते ।
यया विज्ञातया नूनं सिद्धिः सर्वविधा भवेत् ॥
अन्योन्यमुष्टिमास्थाय कनिष्ठाञ्च प्रसारयेत् ।
कनिष्ठा कुण्डलाकाराः मुद्रेयं सुन्दरी स्मृता ॥ ३४ ॥

इसके बाद सर्वेश्वरी सुन्दरी की मुद्रा कह रहा हूँ, इस मुद्रा के परिज्ञान मात्र से सर्व प्रकार की सिद्धि होती है। दोनों हाँथ की मुट्ठि बाँधकर परस्पर संयुक्त करके कनिष्ठांगुलि को प्रसारित करे एवं उस कनिष्ठा को कुण्डलाकार करके रखें। इस मुद्रा से सुन्दरी देवी प्रसन्न होती हैं ॥ ३४ ॥

मुष्टिमन्योन्यमास्थाय कनिष्ठा वेष्टयेदुभे।
तर्जनीं कुण्डलीं कृत्वा मुद्रेयं भूतनायिका ॥ ३५ ॥

दोनों हाँथ की मुट्ठि परस्पर संयोजित करके दोनों कनिष्ठा को वेष्टन करे एवं तर्जनी को कुण्डलाकार करके रखें। यह मुद्रा भूतनायिका की है ॥३५॥

अन्योन्य मुष्टिमास्थाय तर्जनीं वेद्धयेत् पृथक्।
मुद्रेयं द्वार पालिन्या अष्टस्य: परिकीर्तिता।
इन्द्रस्य पूजने वज्रमुद्रेयं परिकीर्त्तिता ॥ ३६ ॥

परस्पर मुट्ठि बाँधकर तर्जनीद्वय को वेष्टन करे। इस मुद्रा से अष्टद्वार पालिनी भूतिनी तथा इन्द्र की पूजा आदि करना चाहिए ॥ ३६ ॥

कृत्वोत्तानं दक्षहस्तं तर्जनीन्तु प्रसारयेत्।
आग्नेयीयं महामुद्रा याम्या निर्दिश्यते ततः ॥
कृत्वा मुष्टि दक्षहस्ते तर्जनीञ्च प्रसारयेत्।
याम्याख्येयं महामुद्रा प्रोक्तातो नैर्ऋतिं शृणु।
कृत्वा मुष्टि दक्षहस्ते खड्गाख्येयन्तु राक्षसी ॥ ३७ ॥

दाहिने हाँथ को उठाकर तर्जनी अंगुलि को प्रसारित करे, यह मुद्रा अग्निदेव की है।

इसके बाद यम की मुद्रा कह रहें हैं।

दाहिने हाँथ की मुट्ठि बाँधकर तर्जनी अंगुलि को प्रसारित करे, इसे यम नामक महामुद्रा कहते हैं। इसके बाद निर्ऋति मुद्रा सुनो, दाहिने हाँथ की मुट्ठि बाँधकर खड्गाकार करे, इसका नाम निर्ऋति मुद्रा है ॥ ३७ ॥

वाममुष्टि विधायाथ तर्जनीन्तु प्रसारयेत्।
तामेव कुण्डलाकारा मुद्रेयं वारुणी स्मृता ॥ ३८ ॥

बाँये हाँथ की मुट्ठि बाँधकर तर्जनी अंगुली को प्रसारित करे, उस तर्जनी को कुण्डलाकार करके रखना चाहिए। इसका नाम वारुणी मुद्रा है ॥ ३८ ॥

मुष्टि वामकरे कृत्वा मध्यमामपि तर्जनीम्।
प्रसार्येयं पताकाख्या वायोर्मुद्रा प्रकीर्तिता ॥ ३९ ॥

बाँये हाँथ की मुट्ठि बाँधकर मध्यमा तथा तर्जनी को प्रसारित करे, इसका नाम वायु मुद्रा है ॥ ३९ ॥

मुष्टिं दक्षकरे कृत्वा अंगुष्ठन्तु प्रसारयेत् ।
प्रोक्ता वैश्रवणी मुद्रा धनाद्याकर्षणक्षमा ॥ ४० ॥

दाहिने हाँथ की मुट्ठि बाँधकर वृद्धांगुली को प्रसारित करे, यह कुवेर की मुद्रा द्वारा धनादि आकर्षक किया जाता है ॥ ४० ॥

कृत्वान्योन्यकरे मुष्टिं तर्जनीश्चापि वेष्टयेत् ।
सौम्याख्येयं महामुद्रा सोमस्य परिकीर्त्तिता ॥ ४१ ॥

दोनों हाँथ की मुट्ठि परस्पर युक्त करके तर्जनीद्वय को वेष्टन करे, इसका नाम सौम्यमुद्रा है, इस मुद्रा से सोम के पूजादि करना चाहिए ॥४१॥

वाममुष्टिं विधायाथ ज्येष्ठांगुष्ठकनीयसा ।
नखमाक्रम्य शेषाश्च प्रसार्यैशी प्रकीर्त्तिता ॥ ४२ ॥

बाँये हाँथ की मुट्ठि बाँधकर कनिष्ठांगुलि के द्वारा वृद्धांगुली को आक्रमण करे, इसका नाम ईशान मुद्रा है ॥ ४२ ॥

सृष्टिबीजं सिद्धिवज्रपदादापूरयद्वयम् ।
वज्रबीजं नतिश्चान्ते पूर्णाख्योऽयं महामनुः ॥
स्थितिबीजाद्वज्रक्रोध महामन्त्रपदात्ततः ।
सिद्धाकर्षण मन्त्रोऽयं महामण्डलमध्यगः ।
सम्पुटाञ्जलिं कृत्वा पुनर्मुद्रा प्रकीर्त्तिता ॥ ४३-४४ ॥

ॐ सिद्धिवज्र पूरय पूरय हूँ यह क्रोधपति का पूर्ण मन्त्र है । ॐ वज्र हुं यह सिद्धाकर्षण मन्त्र है । महामण्डल मध्यवर्त्ती क्रोधराज की उक्त मन्त्र से पूजा करे, उसके बाद हाँथ जोड़ करके पुनः मुद्रा प्रदर्शन करे ॥ ४३-४४ ॥

मुष्टिमन्योन्यमास्थाय कनिष्ठौ वेष्टयेदुभे ।
प्रसार्य कुण्डलाकारं विधाय तर्जनीद्वयम् ।
सिद्धाकर्षणमुद्रेयं सिद्धमाकर्षयेद् ध्रुवम् ॥ ४५ ॥

दोनों हाँथों की मुट्ठि परस्पर युक्त करके दोनों कनिष्ठा वा वेष्टन करे, एवं तर्जनीद्वय प्रसारित करके कुण्डलाकार करे । यह सिद्धाकर्षण मुद्रा से सर्वाकर्षण होता है ॥ ४५ ॥

तारश्च क्रोधशमयसाधने पदमुद्धरेत् ।
सिध्यतीति पदात् सर्वदेवतानुपदं ततः ॥
मे शीघ्रं सिध्यतु पदं मनूत्तमपदं ततः ।
बद्ध्वा तु वज्रमुद्राख्यमिममुच्चारयेन्मनुम् ॥ ४६ ॥

ॐ क्रोध शमयसाधने सिध्यति सर्व देवतानु मे शीघ्रं सिध्यतु यह मन्त्र उच्चारण करके वज्रमुद्रा बन्धन करना चाहिए ॥ ४६ ॥

वज्रभूताशनीमुद्रा लक्षणं कथयाम्यहम् ।
कृत्वोत्तानं वामहस्तं सच्छिद्रांगुष्ठमीरितम् ॥
दक्षमुष्टेः समुत्तीर्यांगुष्ठं दक्षाङ्गसंस्थितम् ।
अपराजितमाक्रम्य मुद्रेयं परिकीर्त्तिता ॥ ४७ ॥

तदनन्तर वज्रभूताशनी मुद्रा के लक्षण कह रहा हूँ । बाँयें हाँथ को उठाकर दाहिने हाँथ की मुट्ठि उस पर संयुक्त करे ॥ ४७ ॥

प्रालेयं बीजमुद्धृत्य जयद्वय महापदात् ।
क्रोधाधिप इत्युक्त्वा क्रोधराजपदात्ततः ॥
इदं भूतासनं प्रोक्त्वा दर्शयद्वयमीरयेत् ।
मर्षयद्वयमाभाष्य प्रतिगृह्णपदाद्विठः ।
महामण्डलमाभाष्य भूताशनमनुः स्मृतः ॥ ४८ ॥

ॐ जय जय क्रोधाधिप क्रोधराज ! इदं भूतासनं दर्शय दर्शय मर्षय मर्षय प्रति गृहण स्वाहा, यह भूतासन मन्त्र कहा गया है ॥ ४८ ॥

सम्पुटामञ्जलिं कृत्वांगुलीनां विधृतिस्थितिः ।
पद्ममुद्रेयमाख्याता विसर्जनमनुं शृणु ॥ ४९ ॥

अञ्जलिद्वय पुटित करके अंगुली सब समभाव में रखे । इसका नाम पद्ममुद्रा है । तदनन्तर विसर्जन मुद्रा कह रहा हूँ सुनो ॥ ४९ ॥

विषात् पद्मोद्भवपदं निलयेति पदं ततः ।
सर्वदेवासनायेति शिरोऽन्तो मनुरीरितः ॥
तारं सर्वसिद्धि पदं सिद्धिं देहि पदं ततः ।
गच्छति पदमाभाष्य देवदेवं विसर्जयेत् ॥
भूताधिप महाक्रोध सर्वसिद्धि प्रदायक ।
दत्त्वाभिलषितं देव गच्छ गच्छ यथासुखम् ।
अनेन विसर्जयेत् ॥ ५० ॥

ॐ पद्मोद्भव निलय सर्वदेवतासनं स्वाहा । ॐ सर्वसिद्धि सिद्धिं देहि गच्छ ॐ भूताधिप महाक्रोध सर्वसिद्धि प्रदायक ।

दत्त्वाभिलषितं देव गच्छ गच्छ यथासुखम् । इस मन्त्र से विसर्जन करना चाहिए ॥ ५० ॥

क्रोधमन्त्रस्य जापेन मण्डलस्य च दर्शनात् ।
स्मरणात् क्रोधराजस्य राज्यं त्रैधातुकं भवेत् ॥
चेटकाः सर्वभूतानां स्यर्यक्षगन्धर्व किन्नराः ।
क्रोधमन्त्रेण नश्यन्ति सर्वलौकिक देवताः ॥
क्रोधार्णोच्चारणाद्देवा पलायन्ते समन्ततः ।
प्रजपेदात्मरक्षार्थ मेकलक्षं महामनुम् ॥
वज्रमन्त्रस्य जापेन भवेदवज्रसमंवपुः ।
सिद्धिकामो पजेत् पौर्णमास्यामभ्यच्चर्यंयत्नतः ॥
क्रोधमुद्रां विधायाथ प्रजपेत् सकलां निशाम् ।
प्रभातसमये भूतानुकम्पा जायते ध्रुवम् ॥
मुद्राज्वलित सर्वत्र तया ज्वलितया पुनः ।
अजरामररूपी च भवेत् क्रोधसमोनरः ।
एवमाराधितो वज्रो वाञ्छितार्थ प्रदायकः ॥ ५१ ॥

क्रोधभैरव के मन्त्र जप तथा क्रोधमण्डल का दर्शन करने पर त्रिलोक का राजा हो सकता है। तथा यक्ष, गन्धर्व तथा किन्नर आदि देवयोनिगण उनका दास होगा। क्रोधमन्त्र से सभी लौकिक देवता का नाश होता है। क्रोधमन्त्र के उच्चारणमात्र से ही पिशाचादि लौकिक देवगण चारों दिशाओं से भाग जाते हैं। आत्मरक्षार्थ क्रोधमन्त्र का एक लाख जप करना चाहिए। क्रोधमन्त्र के जप से साधक का देह वज्र के समान दृढ़ हो जाता है। यह मन्त्र सिद्धिकामी व्यक्ति पूर्णिमा की रात को अर्चना करके क्रोधमुद्रा बन्धन पूर्वक सारी रात जप करना चाहिए। इस प्रकार जप करने पर प्रभात के ससय क्रोधराज की अनुकम्पा होती है। क्रोधराज के सिद्ध होने पर साधक अजर अमर होकर क्रोधराज के तुल्य होता है। इस प्रकार क्रोधराज के आराधना में अभिलषित कार्यसिद्धि होता है ॥ ५१ ॥

इति भूतडामरे प्रमथाधिपक्रोधराजसाधन नाम षष्ठः पटलः ॥ ६ ॥

सप्तमः पटलः

कैङ्करी साधना

उन्मत्त भैरव्युवाचः ।

त्रिजगद् वन्द्य देवेश सर्वलोकभयङ्करः ।
देवतामारणं ब्रूहि वीरं सिध्यति साधने ॥ १ ॥

उन्मत्त भैरवी कहने लगीं, हे देवेश्वर ! आप सभी लोकों का भय उत्पादन करते हो एवं त्रिजगत् के पूजनीय हो, आप मेरे समीप देवतामारण कहें, जिससे वीरगण सिद्ध हो सकता है ॥ १ ॥

उन्मत्त भैरव उवाच ।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि येन सिद्धिर्भवेत् ध्रुवम् ।
देवता म्रियते वापि मूर्ध्नि स्फुटति शुष्यति ॥ २ ॥

उन्मत्त भैरव कहने लगे, तदनन्तर सिद्धि विधान कह रहा हूँ, जिससे देवगणों का मारण तथा मस्तक स्फुटित होता है, तथा शरीर शुष्कहो जाता है ॥२॥

सम्पूज्य अयुतं वामपादेनाक्रम्य संजपेत् ।
स्वयमायात्यूमा देवी भार्या भवति यच्छति ॥
रसं रसायनं दिव्यं दिव्यकामिक भोजनम् ।
सिद्धाद्यदान पक्षे तु लेपयेद् वृषभध्वजम् ॥ ३ ॥

बाँयें पैर से आक्रमण करके पूजा तथा दशसहस्र जप करे, इससे उमा देवी स्वयं आगमन करके नाना रसयुक्त अभिलषित भोजन द्रव्य प्रदान करती हैं ॥ ३ ॥

आक्रम्य वामपादेन मन्त्रमुच्चारयेदमुम् ।
आदिबीजं ज्वलयुगं वज्रेणेति पदं ततः ॥
मारयद्वयमाभाष्य सकर्मसाध्यमुद्धरेत् ।
ततः क्रोधद्वयं चास्त्रं जपेदष्टसहस्रकम् ।
जपमात्रेण सिध्यति भूतिन्यो म्रियते तथा ॥ ४ ॥

बाँयें पैर से आक्रमण करके ॐ ज्वल ज्वल वज्रेण मारय मारय अमुकं भूतिनीं कूं कूं फट् । यह मन्त्र का अष्टसहस्र बार जप करें । यह मन्त्र जप करने मात्र से भूतिनी-सिद्धि होती है, इस मन्त्र से सिद्धि न होने पर भूतिनी की मृत्यु होती है ॥ ४ ॥

श्रीदेवीं वामपादेनाक्रम्य मन्त्रायुतं जपेत् ।
श्रीदेव्यायाति दद्याच्च कुसुमासनमुत्तमम् ।
वक्तव्यं स्वागतं भार्या कामिता राज्यदा भवेत् ॥ ५ ॥

गोरोचन के द्वारा लक्ष्मी देवी की प्रतिमूर्त्ति अङ्कित करके उसे बाम पद के द्वारा आक्रमण पूर्वक दशसहस्र जप करे। इस प्रकार जप करने पर लक्ष्मी देवी स्वयं आगमन करती हैं, तत्क्षणात् पुष्पासन प्रदान करके स्वागत जिज्ञासानन्तर भार्या सम्बोधन करे, देवी, साधक की कामना परिपूर्ण करके राज्य प्रदान करती है ॥ ५ ॥

भैरवीं वामपादेनाक्रम्य मन्त्रायुतं जपेत् ।
भैरवी शीघ्रमागत्य चेटीकर्म करोति च ॥ ६ ॥

भैरवी के वामपाद में आक्रमण करके दशसहस्र मन्त्र का जप करे, इस प्रकार जप करने पर भैरवी तत्क्षणात् आगमन करके दासी हो जाती है ॥ ६ ॥

चामुण्डां वामपादेनाक्रम्य मन्त्रायुतं जपेत् ।
शीघ्रमागत्य चामुण्डा दासीवद् वश्यतामियात् ॥ ७ ॥

चामुण्डा को बाँयें पैर से आक्रमण करके दशसहस्र मन्त्र का जप करे, इस प्रकार से जप करने पर तत्क्षणात् चामुण्डा देवी आगमन करती हैं एवं दासी के समान वशीभूता होती हैं ॥ ७ ॥

अनेनैव विधानेन पूजयेत् सर्वदेवताम् ।
गत्वैकलिङ्गं सम्पूज्य जपेदष्टसहस्रकम् ॥
वामपादेन चाक्रम्यान्वहं सप्तदिनानि च ।
महादेवः समागत्य राज्यं यच्छति कामिकम् ।
यदि यच्छति नागत्य म्रियते शुष्यते ध्रुवम् ॥ ८ ॥

उपरोक्त विधान से सर्वदेवता की पूजा करे एवं शिवलिङ्ग के निकट जाकर देवता की पूजा करके अष्टसहस्र जप करे। इस प्रकार बाँयें पैर में आक्रमण करके सात दिन तक जप करने पर महादेव स्वयं आगमन करके साधक की कामना परिपूरणपूर्वक राज्य प्रदान करते हैं, इसका अन्यथा होने पर देवता की मृत्यु अथवा शरीर शुष्क होता है ॥ ८ ॥

जपेदष्टसहस्रन्तु प्राग्वत् सप्तदिनानि च ।
नारायणं वामपादेना क्रम्यायाति यच्छति ।
प्रार्थितं किंकरो भूत्वा म्रियते शुष्यतेऽपि च ॥ ९ ॥

पूर्ववत् सप्ताह पर्यन्त प्रतिदिन बाँयें पैर में आक्रमण करके नारायण मन्त्र का अष्टसहस्र बार जप करे। इस प्रकार जप करने पर साध

होकर साधक को प्रार्थित वस्तु प्रदान करते हैं। इसका अन्यथा होने पर देवता की मृत्यु अथवा शरीर शुष्क होता है ॥ ९ ॥

ब्रह्माणं वामपादेनाक्रम्य प्राग्वत् जपेत् सदा।
आगत्य किंकरः स स्यादन्यथा म्रियते ध्रुवम् ॥ १० ॥

पूर्ववत् बाँयें पैर के द्वारा आक्रमण करके ब्रह्मा का मन्त्र जप करे। इससे ब्रह्मा साधक के दास हो जाते हैं। इसका अन्यथा होने से देवता की मृत्यु अथवा शरीर शुष्क होता है ॥ १० ॥

आदित्यं वामपादेनाक्रम्य सप्तदिनानि च।
जपेदष्टसहस्र स्वागत्य सिद्धि प्रयच्छति ॥
अन्यथा म्रियते जप्त एवं चन्द्रः प्रयच्छति।
शतं स्वर्णपलं दद्यादन्यथा म्रियते ध्रुवम् ॥ ११ ॥

बाँयें पैर से आक्रमण करके सात दिन तक आदित्य मन्त्र का जप करे, इससे आदित्य सिद्धि प्रदान करते हैं, अन्यथा देवता की मृत्यु होती है। इस प्रकार चन्द्र मन्त्र का जप करने पर तत्क्षणात् चन्द्र सिद्ध होकर प्रतिदिन एक पल सुवर्ण प्रदान करते हैं न चेत् देवता की मृत्यु होगी ॥ ११ ॥

भैरवं वामपादेनाक्रम्य सप्तदिनानि च।
जपेदष्टसहस्रन्तु पूजयेच्च प्रयत्नतः ॥
दीपंमनुष्यतैलेन धूपं मांसेन दापयेत्।
आमिषेणैव नैवेद्यं कृत्वा मन्त्रं जपेत् पुनः ॥
अर्द्धरात्र व्यतीते तु महानादं विमुञ्चति।
कुरुतेऽट्टहासञ्च वदेत्तं भक्षयाम्यहम् ॥
भयं तत्र न कर्त्तव्यं क्रोधबीज मनुस्मरेत्।
मन्त्रोच्छारणमात्रेण सुस्थः साध्योऽत्र भैरवः ॥
दद्यात्रैधातुकं राज्यं सर्वाशाः पूरयत्यपि।
क्रोधभीत्या विनश्यन्ति सर्वं लौकिक देवताः ॥ १२ ॥

बाँयें पैर के द्वारा आक्रमण करके भैरवमन्त्र सप्तदिन जप करे, अष्टसहस्र जप होने पर यत्न पूर्वक पूजा करे, एवं मनुष्य तैल के द्वारा प्रदीप तथा मनुष्यमांस द्वारा धूप दे एवं अनामिका के द्वारा नैवेद्य प्रदान करके मन्त्र का जप करे। इस प्रकार जप करते करते अर्द्धरात्रि अवसान में एक महाशब्द श्रुत होगा, उसके बाद अति उच्च स्वर से हंसते हुये साधक को कहते है, मैं भक्षण करूँगा, उससे साधक भयभीत न होकर क्रोधमन्त्र का स्मरण करें। मन्त्र स्मरणमात्र से ही देव शान्त होकर साधक के सभी

आशा परिपूर्ण करके त्रिलोक का राजत्व प्रदान करते हैं। इस प्रकार सिद्ध होने पर क्रोधराज के भय से सभी लौकिक देवता का विनाश होता है ॥१२॥

वामपादेन चाक्रम्य नटेशं पूर्ववज्जपेत्।
आगत्य किंकरः स स्यादन्यथा म्रियते ध्रुवम् ॥ १३ ॥

बाँयें पैर के द्वारा आक्रमण करके पूर्ववत् नटेश्वर का मन्त्र जप करे। तत्क्षणात् नटेश्वर आगमन करके साधक के दास हो जाते हैं, अन्यथा देवता की मृत्यु होगी ॥ १३ ॥

महाकालं वामपादेनाक्रम्याष्टसहस्रकम्।
दिनानि सप्तप्रजपेदागच्छति गणान्वितः।
चेटको भवति क्षिप्रमन्यथा म्रियते क्षणात् ॥ १४ ॥

बाँयें पैर के द्वारा आक्रमण करके महाकाल का मन्त्र जप करे। सप्ताह पर्यन्त अष्टसहस्र जप करने पर महाकाल स्वीय परिवारगण से परिवृत होकर आगमन करते हैं एवं साधक का दास होता है। इसका अन्यथा करने पर तत्क्षणात् महाकाल की मृत्यु होती है ॥ १४ ॥

ईश्वरायतनं गत्वायुतं सप्तदिनानि च।
जपेच्चतुर्मुखं वामपादेनाक्रम्य साधकः॥
आगत्य परिवाराढ्यः किङ्करो भवति क्षणात्।
आरोप्य पृष्ठे त्रिदिवं दर्शयत्यपि यच्छति ॥
समानीयोर्वशीं देवीं भोज्यं काम्यं रसायनम्।
अन्यथा म्रियते प्राह स्वयं क्रोधाधिपोऽसकृत्।
एवं संसाधयेत् सिद्धिं कैङ्करीं क्रोधभक्तितः ॥ १५ ॥

शिवालय में जाकर सात दिन तक चतुर्मुख को बाँयें पैर से आक्रमण करके दश सहस्र जप करे। इस प्रकार जप करने पर चतुर्मुख स्वीय परिवारगण के साथ आगमन करके साधक के किङ्कर होते हैं एवं साधक को पीठ पर आरोहण कराकर स्वर्गपुर में गमन करते हैं। उर्वशी आदि स्वर्गीय युवतीगण को ले आकर देते हैं, नानाविध भोज्य पदार्थ प्रदान करते हैं। इसका अन्यथा करने पर तत्क्षणात् चतुर्मुख की मृत्यु होती है, यह स्वयं क्रोधाधिपति ने बार बार कहा है। क्रोधराज के प्रति भक्ति करके इन सब सिद्धि को करना चाहिए ॥ १५ ॥

इति भूतडामरे कैङ्करी साधनं नाम सप्तमः पटलः ॥ ७ ॥

अष्टमः पटलः

चेटिका साधना

उन्मत्तभैरव्युवाच ।

प्रमथेश महादेव वह्नीन्द्वर्क-त्रिलोचन ।
यदि तुष्टोऽसि देवेश चेटिकासाधनं वद ॥ १ ॥

उन्मत्त भैरवी कह रही हैं, हे प्रमथेश्वर महादेव ! आपके त्रिनयन में चन्द्र सूर्य तथा अग्नि हैं। यदि आप मेरे प्रति तुष्ट हों तो चेटिका साधना मेरे समक्ष कहें ॥ १ ॥

उन्मत्त भैरव उवाच ।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि चेटिकासिद्धिसाधनम् ।
मनुष्याणां हितार्थाय क्रोधभूपेन भाषितम् ॥
आलस्य पापयुक्तानामाचार्य गुरुघातिनाम् ।
त्रैधातुकं भवेद्राज्यं येन क्रोधप्रसादतः ॥
भूतिनी यक्षिणी नागकन्याका गणभञ्जिकाः ।
भूत्वा चेट्योऽवतिष्ठन्ति क्रोधमन्त्रस्यजापिनः ॥
मन्त्रजापेन सिध्यन्ति नान्यथा यदि चेटिकाः ।
क्रोधसम्पुटितो जप्तो मनुराशाश्च सिध्यति ॥ २ ॥

उन्मत्त भैरव कहने लगे। तदनन्तर मैं चेटिका साधना तुमसे कह रहा हूँ। यह साधना मनुष्यों के हितार्थ क्रोधराज ने कहा है। इस साधना से आलस, पापकर्मरत एवं आचार्य तथा गुरुघाती व्यक्ति भी त्रिलोक के अधिपति होता है। क्रोधराज के मन्त्र का जप करने से भूतिनी, यक्षिणी तथा नागकन्यागण दासी होकर साधक के निकट रहती हैं। यदि केवल मन्त्र जप से उक्त देवीगण सिद्धा नहीं होती हैं, तो क्रोधमन्त्र से पुटित करके जप करने पर तत्क्षणात् सिद्धि होगी ॥ २ ॥

हालाहलं समुद्धृत्य रौद्रबीजमतः परम् ।
कालबीजं त्रिधा कट्टुद्वयं हालाहलं पुनः ॥
अमुकञ्च त्रिधा क्रोधबीजं तारं कलान्वितम् ।
अनेन सहितं मन्त्रं जपेदष्टसहस्रकम् ॥

भूतिन्यो दास्यतां यान्ति शीघ्रमागत्य नान्यथा ।
अक्षि मूर्ध्नि स्फुटत्याशु कुर्वन्ति यदि नान्यथा ।
नश्यन्ति सकलान् गोत्रान् क्रोधराजस्य जापतः ॥ ३ ॥

'ॐ ह्रीं क्रूं क्रुं क्रूं कट्ट कट्ट ॐ अमुकं क्रुं क्रूं क्रुं ॐ अः' यह मन्त्र अष्टसहस्र जप करने पर भूतिनीगण दासी होकर शीघ्र आगमन करती हैं। आगमन न करने पर भूतिनीगणों के चक्षु तथा मस्तक स्फुटित होते हैं। क्रोधराज के मन्त्र का जप करने पर सभी शत्रुओं का विनाश होता है ॥३॥

गोरोचनेन संलिख्य भूतिनी प्रतिमां शुभाम् ।
आक्रम्य वामपादेन जपेदष्टसहस्रकम् ॥
हा हा ही ही महाशब्दे नागत्यापि च भाषते ।
भो भो किमाज्ञापयसि चेटी त्वं भव साधकः ।
चेटी कर्म करोत्येवं यावदायुश्च भूतिनी ॥ ४ ॥

गोरोचन के द्वारा भूतिनी की प्रतिमूर्त्ति बनाकर बाँयें पैर से आक्रमण करके अष्टसहस्र जप करे। इससे भूतिनीगण हा हा ही ही इत्यादि महाशब्द करते आगमन करती है एवं साधक से कहती है, हे साधक तुम्हारा कौन काम करना होगा आदेश करो। तब साधक कहें—तुम लोग मेरी दासी होकर आजीवन मेरे पास रहो ॥ ४ ॥

गोरोचनेन संलिख्य भूतिनी प्रतिमामिमाम् ।
आक्रम्य वामपादेन जपेदष्टसहस्रकम् ॥
क्षणादेव समायाति यदि नायाति सम्मुखे ।
सर्षपैस्ताडयेदुच्चैर्मन्त्रमेनमुदीरयेत् ॥
तारं भूतेश्वरीबीजं क्रोधबीजत्रयं ततः ।
मम शत्रुनितिपदं मारयद्वयमीरयेत् ॥
बीजं प्राथमिकं कूर्च्चबीजमादाय संयुतम् ।
एवमुच्चारितेतीव्रजवेनाक्रमिता सती ॥
म्रियते भूतिनी जीवेत् मृताक्षौद्राभिषेचनात् ।
एवं सा जीविता दद्याद्वस्त्रालङ्कार भोजनम् ।
दासी कर्म करोत्वं वज्रपाणिप्रसादतः ॥ ५ ॥

गोरोचन के द्वारा भूतिनी की प्रतिमा अङ्कित करके बाँयें पैर के द्वारा आक्रमण पूर्वक अष्टसहस्र मन्त्र का जप करे। इस प्रकार जप करने पर

तत्क्षणात् भूतिनी साधक के पास आगमन करती है। यदि उक्तरूप जप से आगमन नहीं करती, तब ॐ ह्रीं क्रूं क्रूं मम शत्रून् मारय मारय ह्रीं ह्रूं अः इस मन्त्र से श्वेत सरसों के द्वारा भूतिनी को ताड़न करे। इससे भूतिनी अति द्रुतवेग से आगमन करती है, यदि उक्त ताड़ना से भूतिनी की मृत्यु होती है, तब मधु के द्वारा उसका शरीर सिञ्चन करना चाहिये। इससे भूतिनी जीवित होकर वस्त्र अलङ्कार तथा भोजन प्रदान करती है एवं साधक का दासी कर्म करती है ॥ ५ ॥

विहारद्वारमागत्य जपेदष्टसहस्रकम्।
यामिन्यां कुञ्जरवती भूतिन्यायाति तोषिता ॥
बलिदानैर्वदेद्वत् स किमाज्ञापयसि स्फुटम्।
साधकेनापि वक्तव्यं मातृवत् परिपालय ॥
अनौपम्यानि वस्त्राणि भोज्यानि भूषणानि च।
ददाति कुञ्जरवती म्रियते शुष्यतेऽन्यथा ॥ ६ ॥

विहार गृह के द्वार देश में जाकर अष्टसहस्र जप करे। इस प्रकार साधना करने पर रात को भूतिनी कुञ्जरारोहण से आगमन करती है। तब साधक बलिदान आदि प्रदान करता है। इससे भूतिनी तुष्ट होकर कहेंगी, तुम्हारा क्या कार्य करना होगा स्पष्टरूप से कहो। साधक कहें मुझे मातृवत् पालन करो। इससे भूतिनी साधक को अनुपम वस्त्र विविध भोजन तथा नाना प्रकार के भूषणादि प्रदान करती है। इसका अन्यथा होने पर भूतिनी की मृत्यु अथवा देह शुष्क होता है ॥ ६ ॥

इति भूतडामरे चेटिका साधन विधिरष्टमः पटलः ॥ ८ ॥

नवमः पटलः

भूतिनी साधना

उन्मत्त भैरव्युवाच ।

व्योमवक्त्र महाकाय स्थित्युत्पत्तिलयात्मक ।
भूतिनीसाधनं ब्रूहि कृपा यदि वर्त्तते ॥ १ ॥

उन्मत्त भैरवी, उन्मत्त भैरव के सम्मुख बोलीं, हे महाकाय आप सृष्टिस्थिति प्रलय कारक यदि मेरे प्रति आपकी कृपा है, तब भूतिनी साधना मेरे समक्ष कहें ॥ १ ॥

उन्मत्त भैरव उवाच ।

भूतिनीसाधनं वक्ष्ये क्रोधराजेन भाषिता ।
दरिद्राणां हितार्थाय संसारार्णवतारकम् ॥ २ ॥

उन्मत्त भैरव कहने लगे, हे भैरवी, दरिद्रों के हितार्थ क्रोधराज द्वारा कथित भूतिनी साधना संसार रूप सागर का त्राणकारक है ॥ २ ॥

सा भूतिनी कुण्डलधारिणी च सिन्दुरिणी चाप्यथ हारिणी च ।
नटी तथा चातिनटी च चेटिका कामेश्वरी चापि कुमारिका च ।
भार्या भ्रातृ भगिन्यश्च स्वेच्छयैव भवन्ति हि ॥ ३ ॥

भूतिनी देवी कुण्डलधारिणी, सिन्दुरिणी, हारिणी नटी, अतिनटी, चेटिका कामेश्वरी तथा कुमारिका आदि नाना विभिन्न रूप धारण करके साधक के इच्छानुसार भार्या, माता अथवा बहन के रूप में साक्षात् होकर साधक की अभिलाषा पूर्ण करती है ॥ ३ ॥

चम्पावृक्षतले रात्रौ जपेदष्टसहस्रकम् ।
दिनानि त्रीणि जपान्ते उदारार्च्चनमाचरेत् ॥
धूपश्च गुग्गुलुं दत्त्वा पुनारात्रौ जपेन्मनुम् ।
अर्द्धरात्रिगते देवी समागच्छति भूतिनी ॥
दद्याद्गन्धोदकेनार्घ्यं तुष्टा मात्रादिका भवेत् ।
मातेत्यष्टशतानाञ्च वस्त्रालङ्कार भोजनम् ॥
भगिनी चेत्तदा नारीं दूरादाकृष्य सुन्दरीम् ।
रसं रसाञ्जनं दिव्यं विधानञ्च प्रयच्छति ॥

भार्या च पृष्ठमारोप्य स्वर्गं नयति कामिता ।
दीनाराणां सहस्राणि नित्यं रसरसाशनम् ।
भोजनं कामिकं देवी साधकाय प्रयच्छति ॥ ४ ॥

रात को चम्पा पुष्प के वृक्ष मूल में बैठकर आठ हजार भूतिनी मन्त्र का जप करे। इस प्रकार तीन दिन करके महापूजा करे। उसके बाद गुग्गुलु से धूप प्रदान करके पुनः मन्त्र जप आरम्भ करे। आधी रात बीत जाने पर भूतिनी देवी आगमन करती है। उस समय चन्दनोदक द्वारा अर्घ्य प्रदान करे। इससे भूतिनी देवी सन्तुष्टा होकर साधक के इच्छानुसार माता, भगिनी अथवा भार्या होती है। माता होने पर आठ सौ वस्त्र, अलङ्कार तथा भोजन प्रदान करती है। बहन होने पर दूर से सुन्दरी कामिनी आनयन करके साधक को अर्पण करती है एवं विभिन्न प्रकार के रसायन भोज्यवस्तु प्रदान करती है। भार्या होने पर साधक को पीठ पर चढ़ाकर स्वर्गपुर को ले जाती है एवं प्रतिदिन सहस्र स्वर्णमुद्रा तथा विभिन्न प्रकार के रसान्वित अभिलषित भोजन द्रव्य प्रदान करती है ॥ ४ ॥

रात्रौ चत्वा श्मशाने च जपेदष्टसहस्रकम् ।
जपान्ते कुण्डलवती समागच्छति सन्निधिम् ॥
रुधिरार्घ्येण सन्तुष्टा मातृवत् पालयत्यपि ।
पञ्चविंशति दीनारं ददाति म्रियतेऽन्यथा ॥ ५ ॥

रात को श्मशान में जाकर आठ हजार जप करे। जपान्त में कुण्डलवती भूतिनी साधक के पास आगमन करती है। तत्काल साधक अपने खून के द्वारा अर्घ्यप्रदान करें। इससे देवी सन्तुष्टा होकर माँ के समान साधक का प्रतिपालन करती है, एवं २५ स्वर्णमुद्रा अर्पण करती है ॥ ५ ॥

शून्ये देवालये रात्रौ जपेदष्टसहस्रकम् ।
सिन्दूरिणी समायाति भार्या कर्म करोति च ॥
वस्त्रादि भोजनं तुष्टा द्वादशेऽह्नि प्रयच्छति ।
पञ्चविंशति दीनारं भोज्यञ्चापि रसायनम् ॥ ६ ॥

शून्य देवालय में बैठकर रात को आठ हजार मन्त्र का जप करे। इससे सिन्दूरिणी देवी आगमन करके भार्याकर्म सम्पादन करती है एवं बारह दिन में तुष्ट होकर वस्त्रादि, भोजनीय द्रव्य तथा पचीस सुवर्ण मुद्रा अर्पण करती है ॥ ६ ॥

गत्वैकलिङ्गं यामिन्यां जपेदष्टायुतं ततः।
हारिणी शीघ्रमागत्य भाषते किं करोमि च॥
साधकेनापि वक्तव्यं भार्या भव सुशोभने।
कामिताष्टौ दीनाराणि भोज्यं यच्छति कामिनी॥ ७॥

एक शिवलिङ्ग के पास बैठकर रजनीयोग से आठ अयुत (८०,०००) मन्त्र का जप करे। इससे हारिणी देवी शीघ्र आकर साधक से कहती हैं, तुम्हारा क्या कार्य करूँ। तब साधक कहे, हे सुन्दरि ! तुम मेरी भार्या हो जाओ। भूतिनी उससे सन्तुष्ट होकर आठ स्वर्णमुद्रा तथा भोज्यवस्तु अर्पण करेंगी॥ ७॥

वज्रपाणिगृहं गत्वा सन्निधौ प्रतिमां लिखेत्।
दत्वा पुष्पं करवीरं जपेदष्टसहस्रकम्॥
नटचर्द्धरात्रे आयाति साधकस्यान्तिके वशात्।
स रक्तचन्दनेनार्घ्यं दत्वा ज्ञापयसीति किम्॥
वक्तव्यं साधकेनापि किङ्करीति भवेति च।
वस्त्रालङ्कारणं भोज्यमन्वहं प्रतियच्छति।
व्ययं सर्वं प्रकर्त्तव्यं न किञ्चिद्धारयेद् गृहे॥ ८॥

वज्रपाणि के घर में जाकर प्रतिमूर्त्ति बनाये, उसके बाद करवीर के फूल द्वारा अर्चना करके आठ हजार मन्त्र का जप करे। इस प्रकार जप करने पर आधी रात के समय नटी देवी साधक के पास आगमन करती है। उसके बाद रक्तचन्दन के द्वारा उन्हें अर्घ्य प्रदान करे। इससे देवी सन्तुष्टा होकर साधक से कहेगी तुम्हारा कौन कार्य सम्पादन करना है। साधक कहे हे देवी, तुम मेरी किङ्करी होकर रहो। उसके बाद देवी साधक की दासी होकर प्रतिदिन वस्त्र अलङ्कार तथा भोज्यवस्तु प्रदान करती है। प्रतिदिन उन सभी वस्तु को व्यय कर दें, घर में कुछ भी नहीं रखना चाहिए॥ ८॥

नीचगासङ्गमं गत्वा जपेदष्टसहस्रकम्।
सप्तमाहावसानेषु पूजां कुर्यादनुत्तमाम्॥
तिरोभावं गते सूर्यं धूपयेच्चन्दनेन च।
जपेद् यावदर्द्धरात्रं समायाति महानटी॥
आगता सा भवेद् भार्या नित्यं स्वर्णं पलं शतम्।
प्रभाते याति सन्त्यज्य सर्वंशेषं व्ययेद्बुधः।
तद्वयया भावतो भूयो न ददाति प्रकुप्यति॥ ९॥

नदी सङ्गमस्थल पर जाकर आठ हजार मूलमन्त्र का जप करे। इस प्रकार सात दिन जप करके विविध उपचार से देवी की अर्चना करना होगा। सूर्य अस्त होने पर चन्दन के द्वारा धूपदान करे। बाद में आधी रात तक जप करने पर महानटी आगमन करती है। वह महानटी भार्या होकर साधक को प्रतिदिन सौ पल स्वर्ण प्रदान करके प्रभात काल में प्रति गमन करती है। साधक प्रतिदिन उन सभी वस्तु को व्यय करे। वह व्यय न करने से पुनः और नहीं प्रदान करती परन्तु क्रोधित हो जाती है ॥ ९ ॥

यामिन्यां स्वगृहद्वारे जपेदष्टसहस्रकम् ।
त्र्यहं यावज्जपान्तेऽसौ समायात्यन्तिके पुनः ॥
चेटी कर्म करोत्येवं गृहसंस्कार कर्म च ।
करोति क्षेत्रजं कर्म वज्रपाणिप्रसादतः ॥ १० ॥

रात को अपने घर के द्वार देश में बैठकर आठ हजार मन्त्र का जप करे। इस प्रकार तीन दिन जप करने पर साधक के पास आकर गृहसंस्कार (घर की सफाई आदि) आदि दासी कर्म करती है ॥ १० ॥

गत्वा मातृगृहं रात्री मत्स्यमांसं प्रदापयेत् ।
सहस्रन्तु जपेत् कामेश्वरीं सप्तदिनावधि ॥
आगता यदि चद्र भक्तयार्घ्येण सन्तोषिता सती ।
वदेत् किमाज्ञापयसि भव भार्या प्रिया मम ।
आशाश्च पूरयत्येवं राज्यं यच्छति कामिता ॥ ११ ॥

रात को मातृ-गृह में जाकर मत्स्य मांस प्रदान करे। प्रत्येक दिन एक हजार संख्यक कामेश्वरी का मन्त्र जप करें, इस प्रकार सात दिन जप करने पर कामेश्वरी आगमन करती है। तब साधक भक्ति पूर्वक अर्घ्य प्रदान करें, इससे देवी सन्तुष्टा होकर साधक से कहेगी कि—तुम क्या आज्ञा करते हो करो ? साधक कहें तुम मेरी भार्या हो जाओ। देवी इससे सन्तुष्टा होकर साधक के सभी आशाओं को परिपूर्ण तथा राज्य प्रदान करती है ॥ ११ ॥

रात्रौ देवगृहं गत्वा शुभां शय्यां प्रकल्पयेत् ।
जातीपुष्पेण वस्त्रेण सितगन्धेन पूजयेत् ॥
धूपञ्च गुग्गुलुं दत्वा जपेदष्टसहस्रकम् ।
जपान्ते शीघ्रमायाति चुम्बत्यालिङ्ग यत्यपि ॥

सर्वालङ्कार संयुक्ता सम्भोगादिसमन्विता ।
यच्छत्यष्टौ दीनाराणि भार्या भवति कामिता ॥
वाससी भोजनं दिव्यं कामिकश्च रसायनम् ।
कुबेरस्य गृहादेव द्रव्यमाकृष्य यच्छति ।
इत्याह भगवान् क्रोधभूपतिः स्वयमेव हि ॥ १२ ॥

रात को किसी देवालय में जाकर उत्तम शय्या रचना करके जातीपुष्प, वस्त्र तथा श्वेत चन्दन द्वारा पूजा करें। उसके बाद गुग्गुलु के द्वारा धूप प्रदान करके आठ हजार जप करें। जपान्त में देवी आगमन करके साधक को चुम्बन तथा आलिङ्गन प्रदान करती है। नाना प्रकार के अलङ्कार से सुशोभित होकर भार्यारूप में सम्भोगादि कार्यानन्तर साधक को आठ सुवर्णमुद्रा, वस्त्रद्वय मनोहर भोजन द्रव्य तथा कुबेर के गृह से धन आकर्षण करके अर्पण करती है। क्रोधराज ने स्वयं इस प्रकार भूतिनी साधना कहा है ॥ १२ ॥

इति भूतडामरे भूतिनीसाधनं नाम नवमः पटलः ॥ ९ ॥

दशमः पटलः

अप्सरा साधना

उन्मत्तभैरव्युवाच ।

कालवक्त्र महाभीम प्रमथेश त्रिलोचन।
ब्रह्मादि मारणं ब्रूहि यदि तुष्टोऽसि भैरव ॥ १ ॥

उन्मत्त भैरवी कहने लगीं, हे प्रमथेश्वर त्रिलोचन ! आप यदि मेरे प्रति सन्तुष्ट हों तो, मुझे ब्रह्मादि मारण कहें ॥ १ ॥

उन्मत्त भैरव उवाच ।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि असाध्यं येन सिध्यति ।
मारणं ब्रह्ममुख्यानां भूतप्रत्ययकारकम् ॥
प्रालेयं हन युग्मञ्च सर्वं मारय मारय ।
वज्र ज्वालेन कूर्च्चास्त्रमयं मन्त्रः सुरान्तकः ॥
त्रिशत्सहस्रजापेन वज्र ज्वाला कुला दिशः ।
अदूरेशस्त्रस्योच्चाराद्ब्रह्माजशङ्कराः ॥
शक्राद्या लौकिका देवा यक्षगन्धर्वकिन्नराः ।
एषां स्त्रियो विनाशत्वं खण्डखण्डं समागताः ॥
बोधिशत्वं मुहुः प्राहुर्विस्मिताः सर्वदेवताः ।
प्रणिपत्यसकृद्देवानस्माकं निग्रहं कुरु ॥
वयं सिद्धि प्रयच्छामो जम्बुद्वीपे कलौ युगे ।
दुःशीलपापयुक्तेभ्योऽन्यथा जहि सुरान्तक ।
तथेत्युक्त्वा वज्रपाणिर्भाषते भूतिनीमनुम् ॥ २ ॥

उन्मत्त भैरव कहने लगे, मैं ब्रह्मादि मारण मन्त्र कह रहा हूँ, इसके द्वारा असाध्य कार्य सिद्ध होते हैं। ॐ हन हन सर्वं मारय मारय वज्रज्वालेन हूँ फट् । यह मन्त्र देवताओं का अन्तक स्वरूप है। इस मन्त्र का तीस हजार जप करने से दिशा समूह वज्रज्वाला से आकुल होते हैं, सभी अस्त्र उच्चारित होते हैं। एवं ब्रह्मा, महादेव, विष्णु, तथा इन्द्रादि देवगण एवं यक्ष, गन्धर्व, किन्नर इन लोगों के स्त्रीगण सभी विनाश को प्राप्त होते हैं। इस प्रकार मन्त्र कहे जाने से देवगण विस्मित होकर क्रोधराज को प्रणिपात करके कहने लगे हम सब कलिकाल में जम्बुद्वीप में सिद्धि प्रदान करूंगा ॥२॥

प्रालेयं श्रीशशीदेव्या अनादि श्रीतिलोत्तमा।
सानादीं श्रीं मनुं स्मृत्य युक्तं काञ्चनमालया॥
विषं श्रीवर्मसंयुक्तमाभाष्य कुलहारिणी।
तारं वर्मसमायुक्तां रत्नमालेति पञ्चमी॥
तां स इति रम्भाख्यां विषं श्रीमुर्वशी परा।
अनादि बीजमाभाष्य भूषणीत्युक्त्वाप्सरसः क्रमात्।
क्रोधं नत्वा प्रवक्तव्यं यथा संसिद्धि साधनम्॥ ३॥

ॐ श्रीं तिलोत्तमा। श्रीं ह्रीं काञ्चनमाला। ॐ श्रीं ह्रूँ कुलहारिणी। ॐ हुं रत्नमाला। ॐ हुं रम्भा। ॐ श्रीं उर्वशी। ॐ रमा भूषणी। क्रोधभैरव को नमस्कार करके यह सब भूतिनी साधना मन्त्र मैं कह रहा हूँ॥ ३॥

शैलशृङ्गं समारुह्य जपेलक्षं समाहितः।
पौर्णमास्यां समभ्यर्च्चर्य घृतदीपं निवेदयेत्॥
प्रजपेत् सकलां रात्रिं आयाति रजनीक्षये।
चन्दनार्घ्येण सन्तुष्टा वरं वरय भाषते॥
कामिता सा भवेद्भार्या प्रयच्छति रसायनम्।
सहस्रवत्सरं पाति शशी दद्याद् यथेप्सितम्॥ ४॥

पर्वत शिखर पर चढ़कर एक लाख मन्त्र का जप करे। उसके बाद पूर्णिमा तिथि में अर्चना करके घी का प्रदीप निवेदन करे। सारी रात जप करने पर रात के अन्त में देवी आगमन करती है। उसके बाद साधक के चन्दन द्वारा अर्घ्य प्रदान करने पर शशीदेवी सन्तुष्टा होकर साधक को वर प्रार्थना करने को कहती हैं। शशीदेवी भार्या होकर इच्छानुरूप रसायन द्रव्य प्रदान करती हैं एवं सहस्रवर्ष तक पालन करती हैं॥ ४॥

जपेदयुतमानन्तु क्षीराशी सप्तवासरान्।
चन्दनेन विधायाथ मण्डले सप्तमे दिने॥
सम्पूज्य शक्तितः शुक्लाष्टम्यां पूर्वतमूर्द्धनि।
प्रजपेत् सकलां रात्रिं समायाति निशाक्षये॥
आगत्य पुरतस्तिष्ठेत् स्मितवक्त्रोत्तमस्तनी।
चुम्बत्यालिङ्गयत्याशु भार्या भवति कामिता॥
राज्यं यच्छति सन्तुष्टा त्रिदिवं दर्शयत्यपि।
पञ्चवर्षसहस्रन्तु भूक्त्वा भोगमनुत्तमम्॥
मृते राजकुले जन्म प्रयच्छति तिलोत्तमा।
अन्यथा म्रियते शीघ्रं विपरीतं कृते सति॥ ५॥

साधक दूध पीकर सात दिन तक दशसहस्र मन्त्र का जप करे। उसके बाद सातवें दिन चन्दन के द्वारा मण्डल निर्माण करके शक्ति के अनुसार से पूजा करे। शुक्लपक्ष के अष्टमी तिथि को पर्वत शिखर पर आरोहण करके जप करे। सारी रात जप करने पर रात्रि के अन्त में देवी आगमन करके साधक के समीप उपस्थित होती हैं। एवं साधक की भार्या होकर चुम्बन तथा आलिङ्गन करके राज्य प्रदान करती हैं। उसके बाद साधक को स्वर्गपुर में प्रदर्शन कराती हैं। साधक इस प्रकार से पञ्चसहस्र वर्ष विविध भोग करके मरणान्तर राजकुल में जन्मग्रहण करते हैं॥ ५॥

नीचगासङ्गमं गत्वा मण्डलं चन्दनेन च।
धूपं दत्त्वा गुरुञ्चैव बलिञ्चापि प्रदापयेत्॥
जपेदष्टसहस्रन्तु नित्यं सप्तदिनावधि।
सप्तमे दिवसे पूजां कृत्वा धूपं प्रदापयेत्॥
प्रजपेत् सकलां रात्रिं समायाति निशाक्षये।
चन्दनार्घ्येण सन्तुष्टा वरं वरय भाषते॥
साधकेनापि वक्तव्यं मातृवत् परिपालय।
वस्त्रालङ्कारणं भोज्यं साधकेभ्यः प्रयच्छति॥ ६॥

किसी नदीसङ्गम स्थल पर जाकर चन्दन के द्वारा मण्डल निर्माण करके अगुरु के द्वारा धूप देकर बलि प्रदान करे, उसके बाद सात दिन तक प्रतिदिन आठ हजार मन्त्र जप करे। तदनन्तर सातवें दिन पूजा करके धूप प्रदान करके रात में पुनर्वार मन्त्र का जप आरम्भ करना होगा। रात के अन्त में देवी के उपस्थित होने पर चन्दन के द्वारा अर्घ्य दें। इससे देवी सन्तुष्टा होकर साधक को वर ग्रहण करने को कहेगी। तब साधक कहें, देवि! मुझे मातृवत् पालन करो। उसके बाद देवी साधकों को वस्त्र, अलङ्कार तथा भोज्य वस्तु प्रदान करती है॥ ६॥

न तिथिर्न च नक्षत्रं नोपवासो विधीयते।
नदीतीरं समास्थायायुतं मासं जपेन्मनुम्॥
धूपं दत्त्वा समभ्यर्च्य पुनारात्रौ जपेत्ततः।
अर्द्धरात्रे समायाति प्राग्वदर्घ्यं प्रदापयेत्॥
कामिता सा भवेद्भार्या प्रत्यहं संप्रयच्छति।
दीनाराणां लक्षमेकं सिद्धिद्रव्यं रसायनम्।
दर्शयेत् पृष्ठमारोप्य त्रिदिवं कुलहारिणी॥ ७॥

कोई तिथि नक्षत्र का विवेचन न करके नदी तट में जाकर दश हजार बार मन्त्र जप करे। इस साधना में उपवास नहीं करना होता है। इस प्रकार एक मास तक जप करके धूप प्रदान करके रात को पुनः जप करे। इस प्रकार आधिरात तक जप करने पर देवी आगमन करती है, तत्क्षणात् साधक उन्हें अर्घ्य प्रदान करें। इससे देवी सन्तुष्ट होकर साधक की भार्या होकर प्रतिदिन लक्ष स्वर्णमुद्रा तथा नाना विध रसायन द्रव्य प्रदान करके पीठ पर चढ़ाकर स्वर्णपुर में प्रदर्शन कराती है ॥ ७ ॥

देवतायतनं गत्वा जपेदष्टसहस्रकम्।
मासमेकन्तु मासान्ते पौर्णमास्यां पुनर्जपेत् ॥
समभ्यर्च्यार्द्धरात्रे तु श्रूयते नूपुरध्वनिः।
समायात्यन्तिकं दद्यात् पुष्पासनमनुत्तमम् ॥
किमिच्छसि वद त्वं मे भव भार्येति साधकः।
भार्याकर्म करोत्येवं भोज्यं यच्छति कामिकम्।
पाति वर्षसहस्राणि रत्नमाला मनोरमा ॥ ८ ॥

किसी देवालय में जाकर आठ हजार बार जप करे। इस प्रकार एक मास तक जप करके मासान्त में पूर्णिमा तिथि को पुनर्वार जप आरम्भ करे। उसके बाद विविध उपचार से अर्चना करने पर आधिरात को नूपुर ध्वनि सुनाई देगी। थोड़ी देर बाद देवी के समीप में उपस्थित होने पर साधक पुष्पासन प्रदान करें। उससे देवी सन्तुष्ट होकर साधक से कहेगीं, तुम क्या चाहते हो? तब साधक कहे, तुम मेरी भार्या हो जाओ। इस प्रकार सिद्धि होने पर देवी भार्या कर्म करती रहती है, एवं अभिलषित भोज्य-द्रव्य प्रदान करती है। तथा रत्नमाला देवी सहस्र वर्ष तक साधक का प्रतिपालन करती रहती है ॥ ८ ॥

प्रतिपत्तिमारभ्य कृत्वा चन्दनमण्डलम्।
धूपञ्च गुग्गुलुं दत्वा जपेदष्टसहस्रकम् ॥
त्रिसन्ध्य पौर्णमास्यान्तु पूजां कृत्वा सुशोभनाम्।
प्रजपेत् सकलां रात्रिं समायाति निशाक्षये ॥
कामिता सा भवेद् भार्या त्वन्यथा म्रियते ध्रुवम्।
ददाति कामिकं द्रव्यं भोज्य द्रव्यं रसायनम् ॥

दशवर्ष सहस्राणि जीवत्यन्ते मृते पुनः।
जन्म राजकुले दद्यात् रम्भा क्रोधप्रसादतः ॥ ९ ॥

प्रतिपत्तिथि में चन्दन द्वारा मण्डल निर्माण करके गुग्गुलु द्वारा धूप प्रदान करके आठ हजार पूर्वोक्त रम्भामन्त्र का जप करे। प्रतिपद् से चतुर्दशी तक इस प्रकार जप करके पूर्णिमा को विविध उपचार से त्रिसन्ध्या तीन-बार पूजा करके सारीरात मन्त्र जप करे। रात के अन्त में देवी आगमन करके साधक की भार्या होती है एवं साधक को अभिलषित द्रव्य तथा विविध रस पूर्ण भोजनीय वस्तु प्रदान करती है। इस प्रकार सिद्धि होने पर साधक दश हजार वर्ष तक जीवित रहकर रम्भादेवी के प्रसाद से मरणान्तर में राजकुल में जन्म ग्रहण करता है ॥ ९ ॥

रात्रौ देवगृहं गत्वा चन्दनेन च मण्डलम्।
कृत्वा धूपं ततो दत्त्वायुतं मांस जपेन्मनुम् ॥
मासान्ते महतीं पूजां कृत्वा रात्रौ जपश्चरेत्।
निशात्यये समायाति प्रदद्यात् कुसुमासनम् ॥
कृते च स्वागते प्रश्ने किमिच्छसि च भाषते।
साधकः प्राह भार्या त्वं भव यच्छ रसायनम् ॥
पाति वर्ष सहस्राणि अप्सराः स्वयमुर्वशी।
परस्त्रीं वर्जयेत् सर्वामन्यथा म्रियते ध्रुवम् ॥ १० ॥

रात को किसी देवालय में जाकर चन्दन के द्वारा मण्डल बनाकर धूप प्रदान करके उर्वशी का दश हजार मन्त्र जप करें। इस प्रकार एक मास तक जप करके मासान्त में महती पूजा करके रात को जप करे। सारीरात इस प्रकार से जप करने पर रात के अन्त में देवी आगमन करती हैं। तब साधक पुष्पासन प्रदान करें। इससे देवी सन्तुष्ट होकर साधक का मङ्गल पूछ कर कहेगी, तुम क्या अभिलाषा करते हो। तब साधक कहें, हे देवि ! तुम मेरी भार्या हो जाओ एवं विविध रस विशिष्ट भोज्य द्रव्य मुझे अर्पण करो। इस प्रकार मन्त्रसिद्धि होने पर उर्वशी अप्सरा साधक का सहस्रवर्ष तक पालन करती है। यह देवता सिद्ध होने पर साधक को अन्य स्त्री का परित्याग करना होगा। अन्यथा साधक की मृत्यु होगी ॥ १० ॥

एकाकी शयने स्थित्वा शुची रात्रौ च कुंकुमैः।
लिखित्वा भूषणीं भूर्जे चन्दनेन तु धूपयेत् ॥
जपेदष्टसहस्रन्तु मांस यावत् प्रयत्नतः।

मासान्ते तु समभ्यर्च्य जपेदष्टसहस्रकम् ॥
रात्रार्द्धेऽन्तिकमायाति भार्या भवति कामिता ।
सिद्धिद्रव्यं हिरण्यञ्च तुष्टा यच्छति भूषणा ॥ ११ ॥

रात को शुचि होकर अकेले विस्तरे पर बैठकर भोजपत्र में कुंकुम के द्वारा भूषणी की प्रतिमूर्त्ति अङ्कित करके चन्दन के द्वारा धूप प्रदान करके भूषणी का आठ हजार मन्त्र जप करे। एक मास तक प्रतिदिन इस प्रकार जप करके मासान्त में देवी की अर्चना करके पुनः वह मन्त्र आठ हजार जप करे। इससे आधिरात के समय में देवी आगमन करके साधक की भार्या होती है एवं साधक के प्रति सन्तुष्ट होकर नानाविध अभिलषित द्रव्य तथा हिरण्य (सोना) प्रदान करती है ॥ ११ ॥

क्रोधराजः पुनः प्राह यदि नायाति साधिता ।
अनेन क्रोध योगेन जपेदप्सरसां मनुम् ॥
विषं प्राथमिकं बीजमुद्धरेत् कटुद्वयम् ।
अमुकं क्रोधबीजञ्च रतिमादरसंयुतम् ॥
जपेदस्त्रं समुद्धृत्यमन्त्रमष्टसहस्रकम् ।
म्रियते शीर्यते मूर्ध्नि प्रस्फुटत्यप्सरेति च ॥
वन्धयेदप्सरोवृन्दं मन्त्रेणानेन साधकः ।
विषं वन्धद्वयं प्रोक्त्वा हनयुग्ममुदीरयेत् ।
अमुकीं क्रोधमन्त्राढ्यमप्सरोवन्धको मनुः ॥ १२ ॥

पुनः क्रोधराज कहने लगे, यदि उक्तरूप साधना में भी देवीगण आगमन नहीं करती हैं, तब 'ॐ कटु कटु अमुकीं हुं फट्' इस मन्त्र का आठ हजार जप करे। इससे भी पूर्वोक्त देवीगण आगमन न करें तब तत्क्षणात् उन सबका मस्तक स्फुटित (फट कर) होकर मृत्यु होती है। उसके बाद 'ॐ वन्ध वन्ध हन हन अमुकीं हुं' इस मन्त्र से अप्सरागण को वन्ध करे ॥ १२ ॥

अथ वक्ष्येऽप्सरोवश्यकारकं मनुत्तमम् ।
विषं चलद्वयं प्रोक्त्वा अमुकीं वशमानय ।
सकूर्च्चास्त्रं जपेदेवाप्सरो वश्यमियात् पुनः ॥ १३ ॥

इस समय अप्सरागणों के वशीकारक मन्त्र कह रहा हूँ। ॐ चल चल अमुकीं वशमानय हूँ फट् यह मन्त्र जप करने पर अप्सरागण वशीभूत होती हैं ॥ १३ ॥

अथातः क्रोधभूपेन मर्त्यानामुपकारकम् ।
यदुक्तं तदहं वक्ष्ये अष्टाप्सरससाधनम् ॥
अनेनैव विधानेन मुद्रामन्त्रप्रभावतः ।
जननी भगिनी भार्या चेटी भवति भूतिनी ॥ १४ ॥

तदनन्तर क्रोधभूपति मनुष्य के उपकारार्थ में जो आठ अप्सरा साधना कहा है, वह कहा जा रहा है। इस विधान क्रम से मुद्रा बन्धन आदि करके साधना करने पर अप्सरागण जननी, भगिनी, भार्या अथवा दासी होकर मनुष्यों के वशीभूत होती हैं ॥ १४ ॥

अन्योन्य मुष्टियोगेन पद्मावर्त्तौ करावुभौ ।
मध्यंगुलीं शुचिं कृत्वा मुद्रा दुःखविनाशिनी ॥ १५ ॥

मुद्रा बन्धन प्रणाली इस प्रकार है—दोनों हाँथों की मुट्ठी बाँधकर पद्मावृत्त करे एवं मध्यमांगुलीद्वय शुचि के आकार से रखें, यह मुद्रा दुःख विनाश करता है ॥ १५ ॥

उभौ खड्गाकृती कृत्वा पाण्यप्सरोवशङ्करी ।
सान्निध्यकारिणीमुद्रा सर्वाप्सरस्साधिनी ॥
मुद्राबन्धन मात्रेण वशीभवति तत्क्षणात् ।
पद्मावर्तावुभौ हस्तौ कृत्वाप्सरससाधिनी ॥ १६ ॥

दोनों हाँथ को खड्गाकार (खड्ग के तरह) करके रखें। इस मुद्रा का नाम सान्निध्यकारिणी है। यह मुद्रा बन्धन मात्र से सभी अप्सरा तत्क्षणात् वशीभूता होती हैं। दोनों हाँथ पद्मावृत्त करके रखने पर भी अप्सरा साधना मुद्रा होती है ॥ १६ ॥

वक्ष्याम्याह्वानमन्त्रस्तु यथा क्रोधेन भाषितम् ।
विषबीजं समुद्धृत्य सर्वाप्सरः पदन्ततः ॥
आगच्छद्वयमाभाष्य कूर्च्चद्वयमतः परम् ।
तार मादर संयुक्तं विद्यादाह्वानपूर्वकम् ॥ १७ ॥

तदनन्तर क्रोधराजोक्त आह्वानमन्त्र कहा जा रहा है। 'ॐ सर्वाप्सर आगच्छ आगच्छ हूँ हूँ ॐ फट्' इस मन्त्र से आह्वान करने से तत्क्षणात् अप्सरागणों का साक्षात् होता है ॥ १७ ॥

तारं सर्वपदं सिद्धिपदाद् योगेश्वरीपदम् ।
कूर्च्चादस्त्रं समुद्धृत्याप्सरः सान्निध्यकारकम् ॥
विषं कामप्रिये चेति शिवोऽभि मुखकारकम् ।
विषं वां प्रां समुद्धृत्य क्रोधबीजद्वयं पुनः ।
वायुः कालान्वितो मन्त्रः सर्वाप्सरोमोहनः ॥ १८ ॥

'ॐ सर्वसिद्धि योगेश्वरी हूँ फट्' यह मन्त्र अप्सराओं का सन्निधिकारक है । 'ॐ क्लीं स्वाहा' इस मन्त्र से अप्सराओं को अभिमुख किया जा सकता है । 'ॐ वां प्रां हूँ हूँ यं ह्रीं' यह मन्त्र अप्सराओं का मोहन कारक है ॥ १८ ॥

इति भूतडामरे तन्त्रे अप्सरः साधनं नाम दशमः पटलः ॥ १० ॥

एकादशः पटलः

यक्षिणी साधना

श्रीउन्मत्तभैरव्युवाच ।

समस्तदुष्टशमन सुरासुरनमस्कृत ।
सन्तुष्टो यदि देवेश यक्षिणी साधनं वद ॥ १ ॥

उन्मत्त भैरवी कह रहीं हैं, हे दुष्टान्त कारक सुरासुरनमस्कृत भैरव ! यदि आप मेरे प्रति सन्तुष्ट हों तो यक्षिणी साधना मेरे समक्ष कहें ॥ १ ॥

उन्मत्तभैरव उवाच ।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि यक्षिणीसिद्धिसाधनम् ।
क्रोधाधिपं नमस्कृत्योत्पत्तिस्थितिलयात्मकम् ॥
यक्षिण्योऽष्टौ समाख्याता यास्तासां सिद्धिसाधनम् ।
मनुं तमपि वक्ष्यामि वाञ्छितार्थ प्रदायकम् ॥ २ ॥

उन्मत्त भैरव कहते हैं हे देवि मैं सृष्टिस्थिति प्रलयकारी क्रोधपति को नमस्कार करके यक्षिणी साधना तुम्हारे निकट कह रहा हूँ। यक्षिणी साधना आठ प्रकार से विख्यात है, उनकी सिद्धिसाधना तथा मन्त्र कह रहा हूँ। इस प्रणाली से यक्षिणी साधना करने पर अभिलषित फल मिलता है ॥ २ ॥

आदिबीजं समुद्धृत्य आगच्छ सुरसुन्दरि ।
शक्तिबीजं शिवे युक्तमुद्धरेत् वह्निसुन्दरीम् ॥
सृष्टिः सर्वमनोहारिणी पदस्थिति समुद्धरेत् ।
आदि बीजं शिवेयुक्तः सर्वमनोहारिणीमनुः ॥
ब्रह्मबीजं समुद्धृत्य ततः कनकवत्यपि ।
मैथुनप्रिये आभाष्य रौद्राद्वह्निवधूस्ततः ॥
ख्याता कनकवत्येषा सर्वसिद्धिप्रदायिनी ।
विषं मातरागच्छ कामेश्वर्यनलप्रिया ॥
कामेश्वरी मनुरसौ वाञ्छितार्थ प्रदायिनी ।
विषं भूतेश्वरी बीजं क्षतजार्णमतः परम् ॥
रौरवं रतिसंयुक्तं प्रिये ज्वलन वल्लभा ।

रतिप्रियामनुः प्रोक्तो वाञ्छितार्थप्रदानकृत् ॥
विषं प्राथमिकं बीजं पद्मिनीज्वलन प्रिया ।
अभीष्टार्थप्रदो नृणामित्युक्तः पद्मिनीमनुः ॥
आदि बीजाच्च भूतेशों नटीतोऽपि महानटीम् ।
स्वर्णाद्रूपवतीं पश्चात् शिवोऽन्तोसौ नटीमनुः ॥
अनादि राद्रिजाबीजं उच्चरेदनुरागिणीम् ।
मैथुनप्रिय आभाष्य द्विठान्तोक्तानुरागिणी ॥ ३ ॥

'ॐ आगच्छ सुरसुन्दरि ह्रीं ह्रों स्वाहा' इस मन्त्र से सुरसुन्दरी की आराधना करे। 'ॐ सर्वमनोहारिणी ॐ ह्रीं। मनोहारिणी के साधना में यह मन्त्र कहें। 'ॐ कनकवति मैथुनप्रिये ह्रीं स्वाहा'। यह कनकवती का मन्त्र सर्वसिद्धिप्रद है। ॐ मातरागच्छ कामेश्वरी स्वाहा। यह कामेश्वरी मन्त्र वाञ्छितार्थ प्रदान करता है। ॐ ह्रीं रतिप्रिये स्वाहा। यह रतिप्रिया-मन्त्र कहा गया, यह मन्त्र वाञ्छितार्थ प्रदान करता है। ॐ पद्मिनी स्वाहा, यह पद्मिनी मन्त्र मनुष्य को अभीष्टार्थ प्रदान करता है। ॐ ह्रीं नटी महानटी स्वर्णरूपवती ह्रीं, यह महानटी मन्त्र कहा गया है। ॐ ह्रीं अनुरागिणि मैथुनप्रिये स्वाहा, इस मन्त्र से अनुरागिणी की आराधना करें। अष्टयक्षिणी का यह आठ मन्त्र कहा गया है ॥ ३ ॥

अथासां साधनं वक्ष्ये एकैकं क्रोधभावितम् ।
वज्रपाणिगृहं गत्वा दत्वा धूपञ्च गुग्गुलुम् ।
जपेत्रिसन्ध्यं मासान्ते आयाति सुरसुन्दरी ॥
जननी भगिनी भार्या स्वेच्छया कामिता भवेत् ।
राज्यं दीनारलक्षञ्च रसञ्चापि रसायनम् ॥
माता भूत्वा महायक्षी मातृवत् परिपालयेत् ।
यदि स्याद्भगिनी दिव्यां कन्यामानीय यच्छति ॥
रसं रसायनं सिद्धद्रव्यं भार्या भवेद् यदि ।
सर्वाशाः पूरयत्येवं महाधनपतिर्भवेत् ॥ ४ ॥

अब उक्त आठ यक्षिणी की साधना पद्धति जो क्रोधराज ने कहा है, वह पृथक् रूप से कह रहा हूँ। वज्रपाणि के गृह में जाकर गुग्गुलु के द्वारा धूप प्रदान करके प्रतिदिन तीनों सन्ध्या पूर्वोक्त सुरसुन्दरी का मन्त्र जप करे। एक मास तक इस प्रकार जप करने पर मासान्त में देवी आगमन करती हैं एवं साधक के इच्छानुसार जननी, भगिनी अथवा भार्या होती हैं। यक्षिणी के आगमन करने पर यदि साधक उसे मातृसम्बोधन करता है, तब देवी

उसे राज्य, लक्ष सुवर्ण मुद्रा एवं विविध रसायन द्रव्य प्रदान करके मातृवत् पालन करती है। यक्षिणी को भगिनी भाव से आराधना करने पर दिव्य कन्या, नाना प्रकार के रसायन द्रव्य देती है, एवं भार्यारूप से साधना करने पर साधक के सभी प्रकार की आशायें पूर्ण होती हैं, तथा साधक महाधनपति होता है ॥ ४ ॥

गत्वा सरित्तटं कृत्वा चन्दनेन च मण्डलम् ।
पूजां विधाय महतीं दत्वा धूपञ्च गुग्गुलुम् ॥
आसप्त दिवसं मन्त्रं जपेदयुतसंख्यकम् ।
सप्तमे दिवसे रात्रौ कृत्वा पूजां मनोरमाम् ॥
प्रजपेदर्द्धरात्रे तु शीघ्रमायाति यक्षिणी ।
साधकं किं करोमीति वदे चेटयाह साधकः ॥
शताष्ट परिवाराढ्या वाञ्छितार्थञ्च यच्छति ।
शतमेकञ्च दीनारं सावशेषं व्ययेद्बुधः ॥
तद्भया भाषतो भूयो न ददाति प्रकुप्यति ।
न ददाति न चायाति म्रियते सा मनोहरी ॥ ५ ॥

नदीतट पर जाकर चन्दन के द्वारा मण्डल निर्माण करके महापूजा करे। एवं गुग्गुलु के द्वारा धूप प्रदान करके पूर्व कथित मनोहारिणी मन्त्र का दश हजार जप करे। सात दिन इस प्रकार पूजा तथा मन्त्र जप करके सातवें दिन रात को महती पूजा करके मूलमन्त्र का जप करते रहें। आधि-रात के समय मनोहारिणी यक्षिणी आगमन करके साधक से कहेगी, तुम्हारा कौन कार्य करना होगा ? तब साधक कहें, तुम मेरी चेटिका होकर रहो। यक्षिणी इससे वशीभूता होकर एक सौ आठ परिवार के साथ साधक का कार्य करती रहती है, एवं अभिलाषित वस्तु, शत स्वर्णमुद्रा प्रदान करती है। साधक उन उन सभी द्रव्य अवशिष्ट को (शेष) न रखे, समस्त व्यय कर दें। सभी वस्तु द्रव्य व्यय (खर्च) न करने पर देवी कुपिता होकर पुनर्वार (पुनः) और वह वस्तु, द्रव्य प्रदान नहीं करती है, एवं पुनः उसे देवी का साक्षात नहीं होता है ॥ ५ ॥

वटवृक्षतलं गत्वा मत्स्यमांसादि दापयेत् ।
उच्छिष्टेन स्वयं रात्रौ सहस्रं सप्तवासरान् ॥
प्रजपेत् सप्तमेऽह्न्यर्द्धरात्रेऽभ्यच्चर्यं सुगन्धिभिः ।
सर्वालङ्कार संयुक्ता सर्वावयसुन्दरी ॥

शताष्ट परिवाराढ्या ध्याता गच्छति सन्निधिम् ।
अन्वह द्वादशानाञ्च वस्त्रालङ्कार भोजनम् ॥
दद्यादष्टौ दीनाराणि भार्या भवति कामिता ।
देवी कनकवत्येषा सिद्धयत्येवं न चान्यथा ॥ ६ ॥

वट वृक्ष के नीचे जाकर मत्स्य मांसादि प्रदान करें, एवं उस उच्छिष्ट द्रव्य के साथ रात को पूर्व कथित कनकवती मन्त्र का एक हजार बार जप करना होगा। इस प्रकार सात दिन तक जप करके सातवें दिन आधिरात को सुगन्धित द्रव्य के द्वारा देवी की अर्चना करे। इससे सन्तुष्टा होकर देवी सर्वाङ्गसुन्दरी कनकवती सर्वालङ्कार से भूषिता होकर एक सौ आठ परिवार के साथ साधक के पास आगमन करती हैं, एवं द्वादश (१२) प्रकार के वस्त्र अलङ्कार, भोज्यद्रव्य तथा आठ स्वर्णमुद्रा प्रदान करके साधक की भार्या हो जाती हैं। इस प्रकार आराधना करने पर देवी कनकवती सिद्धा होती हैं, इसका अन्यथा नहीं होगा ॥ ६ ॥

गोरोचनेन प्रतिमां भूर्जपत्रे विधाय च ।
शय्यामाहृहय एकाकी सहस्रं प्रजपेन्मनुम् ॥
मासान्ते महतीं पूजां कृत्वा रात्रो पुनर्जपेत् ।
ततोऽर्द्धरात्रे आयाति भार्या भवति कामिता ॥
दिव्यालङ्करणं त्यक्त्वा शयनें प्रत्यहं व्रजेत् ।
परस्त्रीगमन त्यागोऽन्यथा मृत्युरदूरतः ॥
इयं कामेश्वरी देवी वाञ्छितार्थं प्रदायिनी ।
चिन्त येत्तां स्वर्णवर्णां दिव्यालङ्कार भूषिताम् ॥
सर्वाभीष्टप्रदां शक्ति सर्वज्ञामभय प्रदाम् ।
जातीप्रभृतिभिः पुष्पैः समभ्यर्च्च्य धृतोत्पलाम् ।
एवं प्रसाधिते मन्त्रे मन्त्रसिद्धिः प्रजायते ॥ ७ ॥

भोजपत्र में गोरोचन के द्वारा प्रतिमा अङ्कित करके रात को एकाकी विस्तरे पर बैठकर कथित कामेश्वरी मन्त्र का एक हजार बार जप करें। इस प्रकार एकमास मन्त्र जप करके मासान्त में देवी की पूजा करके रात को पुनः मन्त्र जप आरम्भ करे। इससे आधिरात के समय में कामेश्वरी आगमन करके साधक की भार्या होकर आती हैं। एवं साधक के साथ रात बिताकर विस्तरे पर दिव्य अलङ्कार छोड़कर चली जाती हैं। यह देवता सिद्ध होने पर अन्य स्त्री सहवास त्याग करना होगा, अन्यथा शीघ्र ही

साधक की मृत्यु हो जाती है। यह कामेश्वरी देवी अभिलाषित अर्थ प्रदान करती हैं। उस काञ्चनवर्णा दिव्या अलङ्कारों से अलंकृता सर्व अभीष्ट दायिनी सर्वशा अभयदात्री शक्तिरूपिणी उत्पलधारिणी कामेश्वरी देवी को जाती आदि पुष्पों से पूजा करके ध्यान करे। इस प्रकार आराधना करने पर मन्त्रसिद्धि होता है ॥ ७ ॥

धूपञ्च गुग्गुलुं दत्वा जपेदष्ट सहस्रकम् ।
आसप्त दिवसं सप्तदिवसान्ते च वैष्णवीम् ॥
पूजा विधाय यत्नेन घृतदीपं विधाय च ।
प्रजपेदर्द्धरात्रेऽसौ समायाति रतिप्रिया ॥
कामिता सा भवेद् भार्या दिव्यं भोज्यं रसायनम् ।
पञ्चविंशति दीनारं वस्त्रालङ्करणानि च ।
आशाश्च पूरयत्याशु सिद्धिद्रव्यं प्रयच्छति ॥ ८ ॥

गुग्गुलु के द्वारा धूप प्रदान करके पूर्वोक्त रतिप्रिया मन्त्र का आठ हजार बार जप करे। सात दिन इस प्रकार जप करके सप्तदिवसान्ते यत्नपूर्वक देवी की पूजा करे एवं रात को घृत प्रदीप जलाकर मन्त्र जप करे। इससे आधीरात के समय रतिप्रिया यक्षिणी आगमन करती हैं एवं साधक की भार्या होकर दिव्य रसायन भोज्यद्रव्य, २५ सुवर्ण मुद्रा तथा वस्त्रालङ्कार प्रदान करके सभी प्रकार की आशा परिपूर्ण करती हैं ॥ ८ ॥

स्व गृहे वा शिवस्थाने मण्डलं चन्दनात्मकम् ।
कृत्वा गुग्गुलु-धूपञ्च दत्वाभ्यर्च्य विधानतः ॥
जपेदष्ट सहस्रन्तु मासमेकं निरन्तरम् ।
पौर्णमास्यां समभ्यर्च्य यथाविभवतो निशि ॥
प्रजपेदर्द्धरात्रे तु समागच्छति पद्मिनी ।
सर्वाशाः पूरयत्येषा भार्या भवति कामिता ।
रसं रसायनद्रव्यं सिद्धिद्र॰ ं सिद्धिद्रव्यं प्रयच्छति ॥ ९ ॥

अपने घर में अथवा शिवालय में जाकर चन्दन के द्वारा मण्डल निर्माण करके गुग्गुलु के द्वारा धूप देकर विधान क्रम से पद्मिनी देवी की अर्चना करे एवं एकमास तक निरन्तर पूर्वोक्त पद्मिनी मन्त्र का आठ हजार बार जप करना होगा। उसके बाद पूर्णिमा की रात को अपनी क्षमतानुसार पूजा करके जप करते रहें। अर्द्धरात्रि के समय पद्मिनी आगमन करके साधक की भार्या होकर रहती हैं एवं नानाविध अभिलषित रसायन द्रव्य प्रदान करके साधक के सभी आशाओं को परिपूर्ण करती हैं ॥ ९ ॥

अशोक वृक्षमागत्य मत्स्यमांसं प्रदापयेत् ।
धूपञ्च गुग्गुलुं दत्वा जपेदष्ट सहस्रकम् ॥
मासान्ते महतीं पूजां कृत्वा प्राग्वजपेन्निशि ।
अर्द्धरात्रे समायाति जननी भगिनी वधूः ॥
स्वेच्छया जननी भूत्वा भोज्यं यच्छति वाससी ।
भगिनी चेत्तदा काम्यं भोज्यालङ्कारणादिकम् ॥
सहस्रयोजनाद्दिव्यां स्त्रियमानीय यच्छति ।
भार्या चेत् पूरयत्याशा रसञ्चैव रसायनम् ।
ददात्यष्टौ दीनाराणि प्रत्यहं परितोषिता ॥ १० ॥

अशोक वृक्ष के नीचे जाकर मत्स्य मांस प्रदान करे एवं गुग्गुलु द्वारा धूप प्रदान करके पूर्वोक्त महानटी यक्षिणी का मन्त्र आठ हजार बार जप करे। एक मास इस प्रकार जप करके मासान्त में महती पूजा पूर्वक रात को पूर्ववत् मन्त्र जप करते रहें। आधिरात के समय यक्षिणी आगमन करके साधक के इच्छानुसार से जननी, भगिनी, अथवा भार्या होकर रहती हैं। साधक की जननी होने पर भोज्यद्रव्य तथा वस्त्रयुग्म (जोड़ा कपड़ा) प्रदान करती हैं। बहन होने पर अभिलषित भोज्यद्रव्य तथा अलङ्कार प्रदान करके हजार योजन से दिव्य कामिनी लाकर देती है। भार्या होने पर सभी प्रकार की आशाओं को पूर्ण करती हैं, एवं नानाविध रसायन द्रव्य तथा आठ स्वर्ण मुद्रा प्रतिदिन देती हैं ॥ १० ॥

कुंकुमेन समालिख्य यक्षिणीं भूर्जपत्रके ।
प्रतियत्तिथिमारभ्य प्रत्यहं परिपूजयेत् ॥
धूपाद्यैः प्रजपेदष्टसहस्रमनुरागिणीम् ।
पौर्णमास्यां पुनारात्रौ घृतदीपं प्रकल्पयेत् ॥
पूजयेद्गन्धपुष्पाद्यैः सकलां प्रजपेन्निशाम् ।
प्रभातेऽसौ समायाति भार्या भवति कामिता ॥
मुद्रासहस्रं भोज्यञ्च रसञ्चापि रसायनम् ।
प्रयच्छति च वस्त्राणि जीवेद्वर्षसहस्रकम् ॥
यदि कालमतिक्रामे न गच्छति न सिद्ध्यते ।
विषं क्रोधास्त्रयुक् प्रोक्त्वामूकी यक्षिण्यतः परम् ॥
भूतेशीं सादरं युग्मं द्वयं क्रोधास्त्रा संयुतम् ।
क्रोधेनानेन चाक्रम्य जपेदष्टसहस्रकम् ॥

तथा कृते समायाति वाञ्छितार्थं प्रयच्छति ।
यदि नायाति म्रियते अक्षिमूर्ध्नि स्फुटत्यपि ।
रौरवे नरके घोरे पातयेत् क्रोधभूपतिम् ॥ ११ ॥

भोजपत्र पर कुंकुम के द्वारा यक्षिणी की प्रतिमूर्त्ति बनाकर प्रतिपद् तिथि से आरम्भ करके प्रतिदिन त्रिसन्ध्या धूपदीपादि विविध उपचार से पूजा करके एवं रात को आठ हजार अनुरागिणी मन्त्र का जप करें । इस प्रकार प्रतिदिन पूजा तथा जप करके पूर्णिमा रात को घृत प्रदीप दें । एवं गन्ध, पुष्प, धूप, दीप तथा नैवेद्यादि नाना प्रकार के उपकरण द्वारा पूजा करके सारी रात मन्त्र जप करे । इस प्रकार करने पर प्रभात के समय देवी आगमन करती है, एवं साधक की भार्या होकर अभिलाषा पूर्ण करती है । दूसरा साधक को सहस्र मुद्रा, नाना रसयुक्त भोजनीय द्रव्य तथा वस्त्रादि प्रदान करती है । यह देवता सिद्धि होने पर साधक सहस्रवर्ष जीवित रहता है । यदि उक्त प्रकार से साधना करने पर यथा समय में देवी आगमन नहीं करती हैं, तब आगमन काल व्यतीत होने पर 'ॐ हूं फट् फट् अमुक यक्षिणी ह्रीं यः यः हूं हूं फट्' इस मन्त्र का आठ हजार जप करे । इस प्रकार करने पर देवी आगमन करके अभिलषित अर्थ प्रदान करती है । इससे भी यक्षिणी आगमन न करे तो, आँख माथा फट कर उसकी मृत्यु होती है, तथा क्रोधभूपति उसे रौरव नामक घोर नरक में पतित करते हैं ॥११॥

मुष्टिमन्योऽन्यमास्थाय कनिष्ठे वेष्टयेदुभे ।
प्रसार्याकुञ्च येत्तर्जन्यौ कार्यौ तावंकुशाकृती ।
इयं क्रोधांकुशी मुद्रा त्रैलोक्याकर्षणक्षमा ॥ १२ ॥

तदनन्तर यक्षिणीमुद्रा कह रहा हूँ—दोनों हाँथों की मुट्ठि बाँधकर अनिष्ठांगुलि दोनों परस्पर वेष्टन करे । उसके बाद दोनों तर्जनी अंगुलि को प्रसारित करके अंकुशाकृती करे । इसका नाम कोधांकुशी मुद्रा है । इस मुद्रा के द्वारा त्रिभुवन को आकर्षण किया जा सकता है ॥ १२ ॥

पाणी समौ विधायाय विपरीतमध्यमाद्वयम् ।
कृत्वा तिर्यगनामान्ते वाह्यतः स्थापयेद्बुधः ॥
तर्जन्याभिनिविष्टेन कनिष्ठा गर्भसंस्थिता ।
ज्येष्ठांगुष्ठेनाह्वयेद् यक्षिणीं सर्वां हि मुद्रया ॥ १३ ॥

यक्षिणी की मुद्रान्तर कही जा रही है । दोनों हाँथों को समान करके विपरीत मध्यमाद्वय तिर्यक रूप से अनामिका के प्रान्त में स्थापन करे ।

उसके बाद तर्जनी के द्वारा आकृष्ट कनिष्ठांगुलिद्वय को हस्तगर्भ में रखकर वृद्धांगुलि द्वारा आह्वान करे ॥ १२ ॥

विषबीजं समुद्धृत्य बीजं प्राथमिकं ततः ।
आभाष्य तामसों गच्छसंयुक्तां द्विः समुद्धरेत् ॥
यक्षिणाग्निप्रियान्तोऽयं यक्षिणाह्वान कृन्मनुः ।
आह्वानमुद्रया वामांगुष्ठेनापि विसर्जयेत् ॥
यक्षिणीमनुमानेन वृक्ष्यमानेन पूजिता ।
प्रालेयं रौद्रीयं बीजं गच्छद्वयसमन्वितम् ॥
अमुक यक्षिण्यूद्धृत्य पुनरागमनाय च ।
द्विठान्तमुद्धरेन्मन्त्रं यक्षिणीनां विसर्जयेत् ॥ १४ ॥

'ॐ ह्रीं आगच्छागच्छ अमुक यक्षिणी स्वाहा' इस मन्त्र से यक्षिणी का आह्वान करे। यक्षिणी देवी के पूजा का मन्त्र बाद में कहा जायगा। आह्वानमुद्रा अथवा वामांगुष्ठ के द्वारा 'ॐ ह्रीं गच्छ गच्छ अमुक यक्षिणी पुनरागमनाय स्वाहा' इस मन्त्र से यक्षिणी का विसर्जन करे ॥ १४ ॥

कृत्वान्योऽन्यमुभे मुष्टी प्रसार्य मध्यमाद्वयम् ।
सम्मुखीकरणी मुद्रा यक्षिणीनां प्रदर्शयेत् ॥
विषं महायक्षिणीति उद्धरेन्मैथुनप्रिये ।
वह्निजायां तथोक्तोऽयं सम्मुखीकरणो मनुः ॥ १५ ॥

दोनों हाँथों की मुट्ठि बाँधकर मध्यमांगुलिद्वय को प्रसारित करे, इसका नाम सम्मुखीकरण मुद्रा है। यक्षिणी का आवाहन करके यह सम्मुखीकरण मुद्रा प्रदर्शित करे। 'ॐ महायक्षिणी मैथुनप्रिये स्वाहा'। सम्मुखीकरण में यह मन्त्र पाठ करना होता है ॥ १५ ॥

अन्योऽन्यमुष्टिमास्थाय प्रसार्याकुञ्चयेदुभे ।
कनिष्ठे चापिमुद्रेयं सान्निध्यकारिणी स्मृता ।
विषं कामपदाद भोगेश्वरी स्वाहेति संयुता ॥ १६ ॥

दोनों हाँथों की परस्पर मुट्ठि बाँधकर कनिष्ठांगुलि द्वय प्रसारित करके आकुञ्चित करे। इसका नाम सान्निध्यकारिणी मुद्रा है, 'ॐ कामभोगेश्वरि स्वाहा' यह मन्त्र सान्निध्यकरण के प्रशस्त है ॥ १६ ॥

कृत्वामुष्टिं ततोऽन्योऽन्यं साधकानां हृदि न्यसेत् ।
वक्ष्यमाणेन मनुना मुद्रास्थापन कर्मणि ॥

विषं समुद्धृत्य त्रैलोक्यग्रसनात्मकम् ।
संयुक्तं धूम्र भैरव्या नादविन्दु समन्वितम् ।
हृदयाय शिरोन्तोऽयं हृदि संस्थापयेन्मनुम् ॥ १७ ॥

दोनों हाँथों की परस्पर मुट्ठि बाँधकर 'ॐ ह्रीं हृदयाय नमः' इस मन्त्र से उन दोनों मुट्ठि को वक्षस्थल पर (छाती पर) स्थापन करे। यह यक्षिणी का मन्त्र है तथा यह मुद्रा त्रिभुवन का ग्रास कर सकता है ॥ १७ ॥

कृत्वा मुष्टि ततोऽन्योऽन्यं तर्जनीमपि मध्यमाम् ।
प्रसार्य प्रमुखी वेद्या मुद्रा मन्त्रसमन्विता ॥
विषं सर्वमनोहारिणो द्विठान्तश्च समुद्धरेत् ।
पञ्चोपचार मुद्राया मनुरेव उदाहृतः ॥ १८ ॥

दोनों हाँथों की परस्पर मुट्ठि बाँधकर तर्जनी तथा मध्यमांगुलि को प्रसारित करे। इसका नाम प्रमुखीमुद्रा है, इस मुद्रा के द्वारा 'ॐ सर्व मनोहारिणी स्वाहा' इस मन्त्र से गन्ध, पुष्प, धूप तथा, नैवेद्य' इस पञ्चोपचार से यक्षिणी की पूजा करें ॥ १८ ॥

इति श्रीभूतडामरे यक्षिणी साधनं नाम एकादशः पटलः ॥ ११ ॥

द्वादशः पटलः

अष्टनागिनी सिद्धि साधना

उन्मत्तभैरव्युवाच ।

सुरासुरजगत्त्राणदायक प्रमथाधिप ।
कालवज्र वद त्वं मे नागिनी सिद्धिसाधनम् ॥ १ ॥

उन्मत्त भैरवी उन्मत्त भैरव से पूछने लगीं, हे पमथेश्वर ! आप सुरासुरादि त्रिजगत् के त्राणकर्त्ता हैं, अब मेरे समक्ष आप नागिनी साधना कहें ॥ १ ॥

उन्मत्त भैरव उवाच ।

अथाष्टनागराजानां सिद्धिसाधनमुच्यते ।
परिषन्मण्डलं नत्वा क्रोधराजं सुरेश्वरम् ।
मनुमासां प्रवक्ष्यामि यथा क्रोधेनभाषितम् ॥ २ ॥

उन्मत्त भैरव कह रहे हैं, मैं सुरेश्वर क्रोधराज को नमस्कार करके तुम्हारे निकट नागिनी साधना एवं क्रोधराजोक्त नागिनी मन्त्र कह रहा हूँ ॥ २ ॥

पञ्चरश्मेः पूर्मनुना प्रोक्तोऽनन्तमुखीमनुः ।
विषबीजात् पूःकर्कोटि मुखीप्रोक्तो महामनुः ॥
प्रालेयात् पद्मिनीपूः स्यात् पद्मिनीमनुरीरितः ।
प्रालेयात् कालजिह्वापूश्चतुर्थो मनुरीरितः ॥
विषान्महापद्मिनो पूरुक्तयं पद्मिनी पुरा ।
पालेयाद्वासुकी प्रोक्ता मुखी पूर्वमुखी मुखी ॥
तारात् कूर्च्चद्वयाद् भूपमुखी पूर्वपरो मनुः ।
पालेयात् शङ्खिनीं गृह्य ततो वायुमुखी पदम् ।
कूर्च्चद्वयान्तमुद्धृत्य शङ्खिनीमनुरीरितः ॥ ३ ॥

तदनन्तर अष्टनागिनी का अष्ट प्रकार मन्त्र कहा जा रहा है। 'ॐ पूः अनन्तमुखी स्वाहा' इस मन्त्र से अनन्तमुखी नागिनी की आराधना करे। 'ॐ पूः कर्कोटमुखी 'स्वाहा' इस मन्त्र से कर्कोटमुखी नागिनी की पूजा आदि करना होता है। 'ॐ पूः पद्मिनीमुखी स्वाहा' पद्मिनीमुखी नागिनी का

यह मन्त्र है। ॐ कालजिह्वा पू: स्वाहा, इस मन्त्र से तक्षकमुखी नागिनी की आराधना करे। 'ॐ महापद्मिनी स्वाहा' इस मन्त्र से महापद्ममुखी नागिनी की पूजा आदि करना होता है। 'ॐ वासुकीमुखी स्वाहा' इस मन्त्र से वासुकीमुखी नागिनी की उपासना करना कर्त्तव्य है। ॐ हूँ हूँ पूर्वभूपमुखी स्वाहा, कुलीरमुखी नागिनी का यह मन्त्र है। ॐ शङ्खिनी वायुमुखी हूँ हूँ इस मन्त्र से शङ्खिनी नागिनी की आराधना आदि करे।

गत्वातु नागभुवनं लक्षमेकं जपेन्मनुम्।
तुष्टा भवति नागिन्यो अनया पूर्वसेवया ॥ ४ ॥

नागलोक में गमन करके पूर्वोक्त नागिनी मन्त्र का एक लाख जप करे। इस प्रकार जप करने पर अष्ट नागिनी सन्तुष्ट होती है ॥ ४ ॥

गत्वा नागभुवं शुक्लपञ्चम्यां दापयेद्बलिम्।
यथोक्तगन्धपुष्पाद्यैः पूजयित्वा जपञ्चरेत् ॥
सहस्रं शीघ्रमायाति नागकन्यान्तिकं स्वयम्।
क्षीरेणार्घ्यं निवेद्याथ वक्तव्यं स्वागतं पुनः।
कामिता सा भवेद् भार्या चाष्टौ मुद्रा प्रयच्छति ॥ ५ ॥

नागलोक में जाकर शुक्लपक्ष के पञ्चमी तिथि को बलिदान करे। उसके बाद गन्ध पुष्पादि उपचार के द्वारा पूजा करके जप करते रहें। इस प्रकार जप के समय में सहस्र नागकन्या आगमन करती हैं। तब साधक क्षीरद्वारा अर्घ्य प्रदान करके स्वागत एवं प्रश्न करे। इस प्रकार साधना करने पर नागिनी भार्या होकर अभिलाषापूर्ण करके साधक को आठ स्वर्णमुद्रा प्रदान करती है ॥ ५ ॥

नीचगासङ्गमं गत्वा क्षीराहारी जपञ्चरेत्।
सहस्रमन्वहं दिव्या नागिन्यायाति सन्निधिम् ॥
चन्दनेन निवेद्यार्घ्यं भार्या भवति कामिता।
दीनारमन्वहं पञ्च भोज्यं यच्छति कामिकम् ॥ ६ ॥

किसी नदी के सङ्गमस्थल पर जाकर क्षीर खाकर नागिनी मन्त्र का जप करे। इस प्रकार जप करने पर प्रतिदिन सहस्र नागकन्या साधक के पास आगमन करती हैं। तब साधक चन्दन के द्वारा अर्घ्य प्रदान करे। इससे वह नागकन्या साधक की भार्या होकर साधक को पञ्च स्वर्णमुद्रा तथा नानाविध भोजन द्रव्य प्रदान करतीं हैं ॥ ६ ॥

नागस्थाने निशि स्थित्वा जपेदष्टसहस्रकम् ।
नागिन्यायाति पूजान्ते शिरोरोगेण संयुता ॥
किं करोमि वदेत् वत्स भव मातेति साधकः ।
वस्त्रालङ्कारणं भोज्यं मानश्चापि प्रयच्छति ॥
तत्वत् पञ्च दीनाराणि व्ययितव्यानि शेषतः ।
तद्व्ययाभावतो भूयो न ददाति प्रकुप्यति ॥ ७ ॥

नागलोक पर बैठकर रात को नागिनी मन्त्र का अष्टसहस्र जप करे। इस प्रकार जप करने पर नागिनी शिरोरोग से आक्रान्त होकर साधक के पास आगमन करके साधक से कहेगी, वत्स ! तुम्हारा क्या कार्य करूं तब साधक कहें, तुम मेरी माता होकर रहो। तत्काल नागिनी सन्तुष्ट होकर वस्त्र, अलङ्कार, मनोभिलषित भोज्यद्रव्य, सम्मान तथा पञ्चसुवर्ण मुद्रा प्रदान करती हैं। साधक वह मुद्रा अवशिष्ट न रखकर समुदाय व्यय करें। समस्त मुद्रा व्यय न करने से देवी पुनर्वार (पुनः) मुद्रा प्रदान नहीं करती, अपितु, देवी कुपिता हो जाती है ॥ ७ ॥

रात्रौ सरोवरं गत्वा जपेदष्टसहस्रकम् ।
नागिन्यायाति जपान्ते भार्या भवति कामिता ॥
यद् यद्ददाति द्रव्याणि व्ययं कुर्यादशेषतः ।
व्ययाभावेन सा भूयो न ददाति प्रकुप्यति ॥ ८ ॥

रात को तालाब में जाकर नागिनी मन्त्र का अष्टसहस्र जप करे। जप के अन्त में नागिनी आगमन करके साधक की भार्या होकर अभिलषित द्रव्य प्रदान करती है। साधक उन सभी द्रव्यों को प्रतिदिन अवशेष न रखकर समुदाय (समस्त) द्रव्यों को व्यय करें। समस्त व्यय न करने पर नागिनी कुपिता होती है, और पुनः कोई द्रव्य प्रदान नहीं करती ॥ ८ ॥

नीचगासङ्गमं गत्वा जपेदष्टसहस्रकम् ।
नागकन्या समायाति जपान्ते साधकान्तिकम् ॥
सूर्यवर्णा सनं दत्वा वक्तव्यं स्वागतं पुनः ।
भार्या भूत्वान्वहं स्वर्णं ददाति च शतं पलम् ॥ ९ ॥

किसी नदीसङ्गम स्थल में जाकर नागिनी मन्त्र का आठ हजार जप करे। जपान्त में नागकन्यागण साधक के निकट आगमन करती हैं। तत्काल साधक नागिनी को सूर्यवर्ण आसन प्रदान करके मङ्गल पूछें। इससे नागिनी साधक की भार्या होकर प्रतिदिन शतपल स्वर्ण प्रदान करतीं हैं ॥९॥

रात्रौ सरोवरं गत्वा जपेदष्टसहस्रकम् ।
जपान्तेऽन्तिकमायाति नागकन्या मनोहरा ॥
अन्वहं भगिनी भूत्वा दीनारं वाससी पुनः ।
तुष्टा यच्छति यामिन्यां साधकायोरगात्मजा ॥ १० ॥

रात को तालाब में जाकर पूर्वोक्त नागिनी मन्त्र का आठ हजार जप करें। जपान्त में मनोहरा नागकन्या साधक के निकट आगमन करती हैं, एवं साधक की बहन होकर प्रतिदिन सुवर्णमुद्रा तथा वस्त्र द्वय प्रदान करती हैं एवं साधक के प्रति सन्तुष्ट होकर रात्रियोग में नागकन्या आकर साधक की अभिलाषा पूर्ण करती हैं ॥ १० ॥

गत्वा नागभुवं नाभिजलादुत्तीर्य साधकः ।
जपेदष्टसहस्रन्तु जपान्ते नागकन्यकाः ॥
स्वयमन्तिक मायाति सपुष्पं मूर्ध्नि दापयेत् ।
ददात्यष्टौ दीनाराणि भार्या भवति कामिता ।
कामिकं भोजनद्रव्यमन्वहं सा प्रयच्छति ॥ ११ ॥

नागलोक में जाकर नाभि परिमित जल से उठकर नागिनी मन्त्र का आठ हजार जप करें। जपान्त में नागकन्यागण साधक के निकट आगमन करती हैं। तब साधक उनके माथे पर पुष्पदान करें। इससे नागकन्या साधक की भार्या होकर आठ सुवर्ण मुद्रा तथा अभिलषित भोज्यद्रव्य प्रतिदिन प्रदान करती है ॥ ११ ॥

रात्रौ नागभुवं गत्वा जपेदष्टसहस्रकम् ।
भूयश्च सकलां रात्रिं जपेत् प्रयतमानसः ॥
साधकान्तिकमायाति सर्वालङ्कारभूषिता ।
पुष्पचन्दनतोयार्घ्यं दत्वा स्वागतमाचरेत् ॥
कामिता सा भवेद् भार्या सिद्धिद्रव्यं प्रयच्छति ।
रसं रसायनं राज्यं भोज्यं यच्छति नित्यशः ॥ १२ ॥

रात को नागलोक में जाकर पूर्वोक्त नागिनी मन्त्र का आठ हजार जप करे। उसके बाद पुनर्वार संयतचित्त होकर रात को जप आरम्भ करे। तत्काल नागिनी सर्वप्रकार अलङ्कार से विभूषित होकर साधक के पास आगमन करती है। तब साधक उन्हें पुष्प, चन्दन, गन्ध तथा जलद्वारा अर्घ्य प्रदान करके स्वागत करे। नागिनी साधक की भार्या होकर उनके अभिलषित वस्तु, नानारसपूर्ण भोजनीय द्रव्य, राज्य तथा धन आदि प्रतिदिन प्रदान करती है ॥ १२ ॥

गत्वा नागभुवं रात्रौ जपेदष्टसहस्रकम् ।
जपान्ते नागकन्या च याति साधकसन्निधिम् ॥
कामिता सा भवेद् भार्या सर्वाशाः पूरयत्यपि ।
दीनारं कामिकं भोज्यं नित्यं यच्छति वाससी ॥ १३ ॥

साधक रात को नागलोक में जाकर पूर्वोक्त नागिनी मन्त्र का आठ हजार जप करें। जप समापन मात्र से ही नागकन्या साधक के पास आगमन करती है। एवं साधक की भार्या होकर उनकी सभी आशायें परिपूर्ण करती है तथा प्रतिदिन साधक को दिव्यवस्त्र, भोजन द्रव्य तथा सुवर्णमुद्रा प्रदान करती है ॥ १३ ॥

गत्वा नागान्तिकं रात्रौ जपेदष्ट सहस्रकम् ।
जपान्ते नागकन्यासौ झटित्यायाति सन्निधिम् ॥
दद्याच्छिरसि पुष्पाणि भार्या भवति कामिता ।
दिव्यवस्त्राण्यलङ्कारं भोजनादीनि यच्छति ॥ १४ ॥

साधक रात को नागलोक में जाकर पूर्वोक्त नागिनी मन्त्र का आठ हजार जप करें। जप के अन्त में नागकन्या साधक के समीप शीघ्र आगमन करती है। तब साधक नागकन्या के मस्तक पर पुष्प प्रदान करें। नागकन्या उसकी भार्या होकर उसे उत्तम वस्त्र, अलङ्कार तथा भोजनद्रव्य आदि प्रदान करती है ॥ १४ ॥

नागिनीसमयमन्त्राणि निरूप्यन्ते पुनर्यथा ।
प्रालेयं तामसीं चण्डं रुद्रदंष्ट्राकपर्द्दिनम् ॥
विदार्यालिङ्गितं गृह्य नागिनी च कपर्द्दिनम् ।
विदारीमण्डितं प्राग्वन्नागिन्याह्वानकृन्मनुः ॥
तरणीपूर्मनुर्गन्धपुष्पादीनामुदीरिता ।
विषं पूः सारदा काली भैरवी चार्घ्यकर्मणि ॥
तामसी पूः कूजनी पूः कूर्च्चपूर्नागिनी च पूः ।
सर्वनागाङ्गनानाञ्च समयस्य मनुः स्मृतः ॥
कपर्द्दी तालजङ्घाढ्यस्तामसी गच्छ शीघ्रकम् ।
पुनरागमनायेति शिवोऽन्तो मनुरीरितः ॥ १५ ॥

पुनर्वार नागिनी साधना कह रहा हूँ—'ॐ द्रां हूँ हूँ नागिनी प्रां द्रां' यह नागिनी का आवाहन मन्त्र है। 'ॐ पूः तरणी मुखी स्वाहा' इस मन्त्र से गन्ध पुष्पादि दान करे। ॐ पूः सारदा मुखी स्वाहा। ॐ पूः काली मुखी

स्वाहा। ॐ पूः भैरवी मुखी स्वाहा। ॐ पूः नागिनी स्वाहा। यह सभी नाग-कन्याओं के साधना का मन्त्र कह रहा हूँ। द्रां हूँ द्रां शीघ्रं गच्छ पुनरागमनाय हों। यह मन्त्र कहा गया ॥ १५ ॥

उच्छ्रायाऽधोञ्जलीशृङ्गं तर्जनीमुखसङ्गता।
अंगुष्ठामुद्रिता मुद्रा नागिनीवशकारिणी ॥
वामदक्षकरौ मुष्टी कनिष्ठानखमाक्रमेत्।
अंगुष्ठेन प्रासार्यान्या नागिनी वशकारिणी ॥ १६ ॥

नागिनी साधना की मुद्रा यह है—दोनों हाँथ अञ्जलि योजन करके अंगुलियों को अग्रभाग समूह अर्द्धमुख में रखकर तर्जनी के अग्रभाग में अंगुष्ठांगुलि का अग्रभाग संयोजित करे। इस मुद्रा में नागिनी वशीभूत होती है। नागिनी वशीकरण मुद्रा यह है—दोनों हाँथों की मुट्ठि बाँधकर अंगुष्ठांगुलि द्वारा अनिष्ठा का नखभाग आक्रमण पूर्वक अपरांगुलि समूह प्रसारित करे। इस मुद्रा के द्वारा भी नागिनी वशीभूत होती है ॥ १६ ॥

तथापि समयं तिष्ठेन्नागत्य कुरुते वचः।
अनेन क्रोधयोगेन जपेदष्टसहस्रकम् ॥
प्रालेयं भीषणपदं वज्रप्राथमिकान्वितम्।
उच्चार्यमुकनागिनीमाकर्षय समन्वितम् ॥
क्रोधबीजद्वयश्चास्त्रं नागिनीमारणात्मकम्।
अस्मिन् भाषितमात्रेतु क्रोधवज्रेण मूर्द्धनि ॥
शीर्यन्ते वा म्रियन्ते वा शिरोरोगेण मूच्छिताः।
अष्टौ पतन्ति नरके शुचौ वज्रनलाकुले।
इत्याह नागिनीसिद्धि साधनं क्रोधभूपतिः ॥ १७ ॥

यदि उक्तरूप साधना तथा मुद्रा के द्वारा नागिनी वशीभूत नहीं होती है, तब 'ॐ ह्रीं वज्रभीषण अमुक नागिनी माकर्षय हूँ हूँ फट्' यह मन्त्र अष्टसहस्र बार जप करें। उक्त मन्त्र के उच्चारण मात्र से नागिनी के माथे पर क्रोध वज्रपात होता है। नागिनी शिरोरोग से मूच्छित होकर शीर्णा हो जाती है, अथवा तत्काल उसकी मृत्यु होती है एवं वज्राग्निसमाकुल नरक में अष्टनागिनी का पतन होता है। क्रोधभूपति ने इस प्रकार नागिनीसिद्धि साधना कहा है ॥ १७ ॥

इति श्रीभूतडामरे महातन्त्र राजे अष्टनागिनीसिद्धि साधनं
नाम द्वादशः पटलः ॥ १२ ॥

त्रयोदश: पटल:

किन्नरी सिद्धि साधना

श्रीमत्युन्मत्तभैरव्युवाच ।

भिन्नाञ्जनचयप्रख्य रवीन्द्वग्निविलोचन ।
करालवदनब्रूहि किन्नरीसिद्धिसाधनम् ॥ १ ॥

उन्मत्त भैरवी कहने लगीं—उन्मत्त भैरव ! आपके तीन चक्षु में सूर्य, चन्द्र और अग्नि विराजित हैं, आपका मुख अतिभीषण तथा देह दलित अञ्जन सदृश हैं। आप मुझे किन्नरी साधना कहिये ॥ १ ॥

श्रीमदुन्मत्तभैरव उवाच ।

गुह्यकाधिपतिं क्रोधराजोवाच महेश्वरः ।
किन्नरीः साधयिष्यामि मारयिष्यामि देवताः ॥
त्रैधातुकं महाराज्यं दास्यामि त्वयि नान्यथा ।
अथातः संप्रवक्ष्यामि किन्नरीसिद्धिसाधनम् ।
येनानुष्ठितमात्रेण लभ्यन्ते सर्वसिद्धयः ॥ २ ॥

उन्मत्त भैरव कहने लगे—क्रोधाधिपति महादेव गुह्यकराज कुवेर से जो किन्नरी साधना कहा था, वह अब मैं तुमसे कह रहा हूँ। इस किन्नरी साधना द्वारा देवगण को भी विनष्ट किया जा सकता है, त्रिभुवन के अधिपतित्व लाभ होते हैं एवं सभी अभिलाषा सिद्ध होती है ॥ २ ॥

मनुमासं प्रवक्ष्यामि क्रोधभूपप्रसादतः ।
हालहलान्मनोहारिणि शिवोऽतं मनुमुद्धरेत् ॥
प्रालेयात् सुभगेवह्निप्रियान्तसपरो मनुः ।
विषाद्विशालनेत्रेऽग्निवल्लभान्तस्तृतीयकः ॥
पश्चरश्मिं समुद्धृत्य तदन्ते सुरतप्रिये ।
वह्निजायान्त उक्तोऽसौ चतुर्थः किन्नरीमनुः ॥
विषबीजं समुद्धृत्य सुमुख्यग्रे द्विठो मनुः ।
सृष्टिर्द्दिवाकरमुखि शिवोऽन्तश्चापरो मनुः ॥ ३ ॥

क्रोधभूपति के प्रसाद से किन्नरीगणों का मन्त्र कह रहा हूँ—ॐ मनोहारिणी ह्रीं १, ॐ सुभगे स्वाहा स्वाहा २, ॐ विशाल नेत्रे स्वाहा

३, ॐ सुरतप्रिये स्वाहा ४, ॐ सुमुखि स्वाहा ५, ॐ दिवाकरमुखि स्वाहा ६, ॥ ३ ॥

अथ मनोहारिणीसाधनम् ।

शैलमूर्ध्नि समास्थाय जपेदष्टसहस्रकम् ।
जपान्ते महतीं पूजां गोमांसेन प्रकल्पयेत् ॥
धूपञ्च गुग्गुलुं दत्वा यामिन्यां जपमाचरेत् ।
अर्द्धरात्रे समायाति न भेतव्यं कदाचन ॥
वदेत् किमाज्ञापयसि भव भार्येति साधकः ।
त्रिदिवं पृष्ठमारोप्य दर्शयत्यपि यच्छति ।
कामिकं भोजनं स्वर्गं सिद्धिद्रव्यं प्रयच्छति ॥ ४ ॥

पहले मनोहारिणी साधना कहा जा रहा है—रात को साधक पर्वत शिखर पर अवस्थान करके 'ॐ मनोहारिणी ह्रीं' इस मन्त्र का आठ हजार बार जप करे। जप समाप्त होने पर, गोमांस के द्वारा महती पूजा करे। उसके बाद गुग्गुलु द्वारा धूप प्रदान करके जप आचरण करे। आधिरात को किन्नरी साधक के निकट उपस्थित होती हैं। उन्हें देखकर साधक कदापि भयभीत न हों। "क्या आज्ञा है"—यह बात किन्नरी के पूछने पर, साधक कहें—'तुम मेरी भार्या हो जाओ।' साधक को किन्नरी पीठ पर चढ़ाकर स्वर्गलोक का दर्शन कराती है तथा भोज्य, अभिलाषित द्रव्य आदि प्रदान करती हैं ॥ ४ ॥

अथ सुभगासाधनम् ।

पर्वते वा वने वापि विहारे वा युतं जपेत् ।
निराहारोऽपि जपान्ते दिव्यनीरजपाणिना ॥
उपचारयति सा तुष्टा भार्या भवति कामिता ।
ददात्यष्टौ दीनाराणि प्रत्यहं परितोषिता ॥ ५ ॥

तदनन्तर सुभगा साधना कहा जा रहा है—साधक उपवास करके पर्वत पर, वन में अथवा देवमन्दिर में गमन करके 'ॐ सुभगे स्वाहा' यह मन्त्र दश हजार बार जप करे। जप के अन्त होने पर ही किन्नरी आती है, साधक के प्रति परितुष्ट होकर सुन्दर पद्महस्त द्वारा सेवा करती हैं, एवं भार्या होती हैं। उसके बाद प्रत्यह साधक को आठ सुवर्ण मुद्रा प्रदान करती हैं ॥ ५ ॥

अथ विशालनेत्रासाधनम् ।

नीचगातटमासाद्य जपेदयुतसंख्यकम् ।
प्रपूज्य सकलां रात्रिं प्रजपेद्रजनीक्षये ॥
किन्नरी शीघ्रमायाति भार्या भवति कामिता ।
ददात्यष्टौ दीनाराणि प्रत्यहं परितोषिता ॥ ६ ॥

उसके बाद विशाल नेत्रा साधना कह रहा हूँ—रात को साधक नदी के तट पर जाकर 'ॐ विशाल नेत्रे स्वाहा' यह मन्त्र का दश हजार जप करें। एवं किन्नरी की पूजा करके सारी रात उक्त किन्नरी मन्त्र का जप करें, रात के शेष भाग में किन्नरी साधक के निकट में आगमन करके उसकी भार्या होती है, एवं परितुष्टा होकर प्रतिदिन आठ सुवर्णमुद्रा प्रदान करती हैं ॥ ६ ॥

अथ सुरतप्रियासाधनम् ।

नीचगासङ्गमे रात्रौ जपेदष्टसहस्रकम् ।
जपान्ते शीघ्रमायाति चात्मानं दर्शयत्यपि ॥
स्थित्वा पुरो द्वितीयेऽह्नि वचनं भाषितं पुनः ।
तृतीये दिवसे प्राप्ते भार्या भवति कामिता ।
ददात्यष्टौ दीनाराणि प्रत्यहं दिव्यवाससी ॥ ७ ॥

इसके बाद सुरतप्रियासाधना कहा जा रहा है,—साधक रात को नदी के सङ्गमस्थल पर जाकर 'ॐ सुरतप्रिये स्वाहा' यह मन्त्र का आठ हजार बार जप करें। पहले दिन जपान्त में यह सुरतप्रियानाम्नी किन्नरी शीघ्र आकर अपनी दिव्य मूर्त्ति का दर्शन देती है। दूसरे दिन इस प्रकार साधक के जपान्त समय में किन्नरी पुनर्वार आगमन करके सम्मुख में रहकर बात करती है, एवं तृतीय दिन इस प्रकार जपान्त में आकर भार्या होती है। तदनन्तर प्रतिदिन दिव्यवस्त्र तथा आठ सुवर्णमुद्रा प्रदान करती हैं ॥ ७ ॥

अथ सुमुखीसाधनम् ।

शैलमूर्द्धण्यन्वहं मांसाहारेणायुतकं जपेत् ।
जपान्ते पुरतः स्थित्वा चूम्बत्यालिङ्गयत्यपि ॥
तूष्णीम्भावेन सन्तुष्टा भार्या भवति कामिता ।
ददात्यष्टौ दीनाराणि दिव्यं कामिक भोजनम् ॥ ८ ॥

तदनन्तर सुमुखीसाधना कह रहा हूँ,—साधक प्रतिदिन पर्वत शिखर पर जाकर मांसाहार प्रदान करके 'ॐ सुमुखि स्वाहा' इस मन्त्र का दश हजार

बार जप करें। जपान्त में किन्नरी साधक के सम्मुख में उपस्थित होकर मौनरूप से ही उसे चुम्बन तथा आलिङ्गन करती हैं, तथा सन्तुष्ट होकर उसकी भार्या होती हैं। उसके बाद प्रतिदिन उत्तम भोजन-सामग्री तथा आठ सुवर्णमुद्रा प्रदान करती हैं ॥ ८ ॥

अथ दिवाकरमुखीसाधनम् ।

शैलमूर्ध्नि समास्थाय जपेदयुतसंख्यकम् ।
रात्रावभ्यर्च्य प्रजपेन्मन्त्रमष्टसहस्रकम् ॥
किन्नर्यन्तिकमायाति वाञ्छितार्थं प्रयच्छति ।
ददात्यष्टौ दीनाराणि भार्या भवति कामिता ।
रसं रसायनं सिद्धिद्रव्यं भोज्यं प्रयच्छति ॥ ९ ॥

तदनन्तर दिवाकरमुखी साधना कह रहा हूँ—साधक रात को पर्वत के शिखर देश में अवस्थान करके 'ॐ दिवाकरमुखी स्वाहा' इस मन्त्र का दश हजार बार जप करें, तथा उत्तमरूप से दिवाकरमुखी की पूजा करने के बाद पुनः वह मन्त्र का आठ हजार बार जप करें। जपान्त में साधक के निकट किन्नरी आकर वाञ्छित अर्थ प्रदान करती हैं तथा भार्या हो जाती हैं। उसके बाद प्रतिदिन जो कुछ अभिलाषित द्रव्य, आठ स्वर्णमुद्रा तथा नानारसपूर्ण भोजनद्रव्य आदि प्रदान करती हैं ॥ ९ ॥

इति भूतडामरे महातन्त्रराजे किन्नरीसिद्धि साधनं
नाम त्रयोदशः पटलः ॥ १३ ॥

चतुर्दश: पटल:

परिषन्मण्डल क्रोध-ध्यान विधि

श्रीमत्युन्मत्त भैरव्युवाच ।

व्योमकेश महाकाल प्रलयानलविग्रह ।
परिषन्मण्डलं ब्रूहि क्रोधध्यानं सुरेश्वर ॥
उन्मत्त भैरवं नत्वा पप्रच्छोन्मत्तभैरवी ।
परिषन्मण्डलं ब्रूहि यदि तुष्टोऽसि मे प्रभो ॥ १ ॥

उन्मत्त भैरवी उन्मत्त भैरव को नमस्कार करके पूछने लगीं, हे प्रभो ! हे व्योमकेश ! हे महाकाल ! आप प्रलयकालीन वह्नितुल्य शरीरसम्पन्न तथा देवताओं के ईश्वर हैं, यदि आप मेरे प्रति सन्तुष्ट हुए हैं, तो परिषन्मण्डल क्रोधदेव के ध्यान मुझे बताईये ॥ १ ॥

श्रीमदुन्मत्तभैरव उवाच ।

परिषन्मण्डलं वक्ष्ये देवि ते अवधारय ।
दुष्टात्म शमनं प्रोक्तं क्रोधराजेन यत् पुरा ।
महादेवाय कथितं वाञ्छितार्थ प्रदायकम् ॥ २ ॥

उन्मत्त भैरव कहने लगे—देवि ! तुम्हें परिषन्मण्डल क्रोधध्यान कह रहा हूँ । उसे धारण करो । यह पूर्व में क्रोधराज महादेव को कहा था । इसके द्वारा दुष्टात्माओं को दण्ड तथा अभीष्टसिद्धि लाभ होता है ॥ २ ॥

चतुरस्रं चतुर्द्वारं चतुस्तोरण भूषितम् ।
भागै: षोडशभिर्युक्तं वज्रप्राकारशोभितम् ॥
तन्मध्ये तु महाभीमं वज्रक्रोधं चतुर्भुजम् ।
ज्वालामालाकुलादीप्तं युगान्ताग्निसमप्रभम् ॥
भिन्नाञ्जनमहाकायं कपालकृत भूषणम् ।
अट्टहासं महारौद्रं त्रिलोकेषु भयङ्करम् ॥
दक्षिणोर्द्धकरे वज्रं तर्जनीं वामपाणिना ।
क्रोधमुद्राञ्च तदध: पाणिभ्यां धारणं भजे ॥
शशाङ्क शेखरं त्र्यक्षं महागोक्षीरपाण्डुरम् ।

महादेवं चतुर्वाहुं शूलचामरधारिणीम् ॥
चापशक्ति समायुक्तं क्रोधदक्षे वृषासनम् ।
शङ्खचक्रगदाचामराढ्यं वामे खगासनम् ॥
पृष्ठभागे तथा शक्रं सर्वालङ्कार भूषितम् ।
पीतवस्त्रं त्रिनेत्रञ्च हस्तिस्थं चामरान्वितम् ॥
पुरतः कार्त्तिकेयञ्च मयूरस्थं विचिन्तयेत् ।
चामरव्यग्रहस्ताग्रं हिमकुन्देन्दु सन्निभम् ॥
आग्नेयादीशपर्यन्तं द्वे द्वे शक्ती च कोणगे ।
सिंहध्वजान्वितामग्नौ महाभूतिन्यपि क्रमात् ॥
नैऋते सुरपूर्वाञ्च हारिणीं दैत्यनाशिनीम् ।
रत्नेश्वरीं भूषणीञ्च वायुकोणे न्यसेत् पुनः ॥
न्यसेदीशे जगत् पालिनोञ्च पद्मावतीं पुनः ।
श्वेतामाद्यां परां गौरीमेवमष्टौ क्रमोदिताः ॥
भूषिता नीलवस्त्रेण माल्यादिभिरलंकृता ।
वेष्टिता नीलवस्त्रेण हुँकृतारीन् विनाशयेत् ॥ ३ ॥

चतुष्कोण, चार द्वार विशिष्ट चारों तोरण को अलंकृत सोलह अंशयुक्त वज्र तथा प्राकारों में सुशोभित परिषन्मण्डल के मध्य में क्रोधदेव अवस्थान कर रहे हैं, महाभयङ्कार क्रोधदेव की मूर्ति अग्नि शिखा के माला समूहों में उद्दीप्त, युगप्रलयकालीन अग्नि के समान प्रभाविशिष्ट दलित-अञ्जन सदृश महाशरीर विशिष्ट महारौद्र तथा त्रिभुवन के भयानक हैं। क्रोधदेव नरक पालमय अलङ्कार धारण किये हुये हैं, तथा सर्वदा अट्टहास कर रहे हैं। इनके चार हाँथ हैं, दक्षिण दिशा के उर्द्ध हाँथ में वज्र तथा बाँयें तरफ के ऊर्द्धहस्त में तर्जनीमुद्रा एवं दक्षिण तथा बाँयें के तरफ के नीचे के दोनों हाँथ में क्रोधमुद्रा धारण किये हुये हैं। इन क्रोधदेव के दक्षिण तरफ महादेव वृषभ आसन पर उपविष्ट हैं। महादेव अपने चारों हाँथों में शूल, चामर, धनुः तथा शक्ति धारण किये हुये हैं। इनके तीन नेत्र हैं, किरीट पर चन्द्र कला सुशोभित है, तथा देह गोदुग्ध के समान महापाण्डुवर्ण है। क्रोधदेव के बाँयें ओर विष्णु गरुड़ आसन में बैठे हैं। इनके चारों हाँथों में शङ्ख, चक्र, गदा तथा चामर विराजित है। वज्रक्रोधदेव के पीठ के तरफ इन्द्र सभी भूषणों से अलंकृत होकर हाँथी के पीठ पर आसीन हैं। इनके तीन चक्षुः तथा हाँथ में चामर है। ये पीतवसन पहने हैं। क्रोधराज के

सामने कार्त्तिकेय मोर वाहन पर बैठे हैं। इनका देह हिम, कुन्दपुष्प तथा चन्द्र के समान श्वेतवर्ण कान्तिविशिष्ट एवं हाँथ में चामर धारण किये हैं, इसलिये हाँथ के अग्रभाग किञ्चित् व्यस्त हैं। क्रोधदेव के चारों ओर महादेव, विष्णु, इन्द्र तथा कार्त्तिकेय ये चारों देवता ही क्रोधराज को चामर हाँथ में लेकर हवा कर रहे हैं। क्रोधराज के अग्निकोण से ईशान कोण तक प्रतिकोण में दो दो करके आठ शक्ति हैं। अग्निकोण में सिंहध्वजा तथा महाभूतिनी, नैर्ऋतकोण में सुरहारिणी तथा दैत्यनाशिनी, वायुकोण में रत्नेश्वरी तथा भूषणी, एवं ईशानकोण में जगत् पालिनी तथा पद्मावती यह आठ शक्ति हैं। उन दो दो शक्ति के मध्य में पहला श्वेतवर्णा तथा दूसरा गौरवर्णा एवं नीलवर्णा वस्त्र पहनी हुई हैं। शक्तियों का सारा शरीर नीलवस्त्र से परिवेष्टित है, तथा माल्यादि के द्वारा परिभूषित है। ये सभी हूँ कार के द्वारा शत्रु समूह को विनष्ट करती हैं ॥ ३ ॥

नागिन्योऽप्सरसो यक्षकामिन्यो नागकन्यकाः।
भूतिन्यश्चाम्बिकाः क्रोधमन्त्रोच्चारात् प्रणश्यति।
भूताः प्रेताः पिशाचाश्च मन्त्रोच्चाराद्विनश्यति ॥ ४ ॥

इस क्रोधमन्त्र के उच्चारण मात्र से ही नागिनी, नागकन्या, अप्सरा, यक्षिणी, भूतिनी, भूत, प्रेत तथा पिशाच आदि सभी विशान को प्राप्त होते हैं ॥ ४ ॥

प्रालेयं बीजमुद्धृत्य क्रोधबीजत्रयं पुनः।
अस्त्रत्रयाद्वज्रगदं क्रोधदीप्त महापदम् ॥
क्रोधं ज्वलद्वयं वायुं सादर मारद्वयम्।
क्रोध बीजत्रयादस्त्रत्रयान्त मुद्धरेन्मनुम् ॥ ५ ॥

वज्रक्रोधदेव का मन्त्र—ॐ हूँ हूँ हूँ फट् फट् वज्रक्रोध दीप्त महाक्रोध ज्वल ज्वल मारय मारय हूँ हूँ हूँ फट् फट् फट् ॥ ५ ॥

अस्य भावित मात्रेण म्रियन्ते सर्वदेवताः।
पतन्ति नरके घोरे शुष्यन्ति प्रस्फुटन्त्यपि ॥ ६ ॥

इस मन्त्र के उच्चारण मात्र से ही सभी देवता शुष्क, विदीर्ण तथा मृत होते हैं तथा अन्त में घोर नरक में पतित होते हैं ॥ ६ ॥

उद्धरेत् प्रथमं क्रोधं महाकालं निरञ्जनम्।
शस्त्रमायुधमन्त्रञ्च क्रोधमन्त्रोऽयमीरितः ॥

क्रोधमुद्रां विधायेत्थं मन्त्रं शिष्याय कीर्त्तयेत् ।
प्रालेयात् प्रविश क्रोध क्रोध बीजान्तमुद्धरेत् ।
ज्वालामालाकुलं ध्यायन् द्वितीयः स्यात् सुरान्तकः ॥ ७ ॥

'हूँ हूँ हूँ फट् फट्' इसका नाम क्रोधमन्त्र है। क्रोधमुद्रा करके यह मन्त्र शिष्य को प्रदान करना चाहिये। 'ॐ प्रविश हूँ हूँ' इस द्वितीय क्रोधमन्त्र को ध्यान करके जप करने पर देवगण का भी विनाश किया जा सकता है ॥७॥

अथ तस्याङ्गदेव्यो यास्तासां मन्त्रं वदाम्यहम् ।
विशाचक्षुः पदं गृह्य श्रीसिंहध्वजकारिणी ॥
कूर्च्चं भूतेश्वरीबीजं सादरं क्रोधपूर्वतः ।
विशाद् भूतेश्वरं रौद्रं क्रोधात् पद्मावतीपदम् ॥
धनुर्वाणपदं गृह्य धारिणी कूर्च्चसंयुतम् ।
क्रोधस्य पृष्ठतोऽन्यस्य दक्षभागे पुनर्न्यसेत् ॥
विषं निरञ्जनं रौद्रं बीजं गृह्य विभूतिनीम् ।
ततोऽङ्कुशधारिणी कूर्च्चं गृह्य वायुकलान्वितम् ॥
क्रोधवामे न्यसेदेवं विषबीजं निरञ्जनम् ।
बहुरूपिणीमाभाष्य कपालिन्या दशान्विता ॥
सुरतो हारिणी चिन्तामणि ध्वजपदं ततः ।
नासिनीति पदं चोक्त्वा कूर्च्चान्तं मनुमुद्धरेत् ॥
विषाद्वार पदाज्जालिनी पदमुदीरयेत् ।
... . ज्जरपदाद्धारिणी पद मुद्धरेत् ।
पुष्पहस्ते पदश्चापि ईशानेश निरञ्जनम् ॥
विषं रत्नेश्वरी बीजं धूपहस्ते निरञ्जनम् ।
आग्नेये विन्यसेद्देवीं धूपहस्तां सुशोभनाम् ॥
विन्यसेन्नैर्ऋते भागे प्रालेयात् श्रीविभूषणी ।
गन्धहस्ते महाकालो बीजं ज्वलनवल्लभा ॥
वायव्ये श्रीजगत् पालिनीपदं समुदीरयेत् ।
दीपहस्ते पदात् कालभैरवीं सादरं पुनः ॥ ८ ॥

तदनन्तर क्रोध भैरव के जो सब अङ्गदेवता हैं, उन सभी का मन्त्र कह रहा हूँ। ॐ ह्रूं चक्षुः श्रीसिंहध्वजा धारिणी हुं। ॐ हूँ हूँ पद्मावती धनुर्वाणधारिणी हूँ; इन दोनों मन्त्रों से क्रोधराज के पृष्टदेश में अर्चना करके ॐ ह्रूं ह्रूं विभूतिनी अंकुशधारिणी ह्रूं, इस मन्त्र से दक्षिण भाग में पूजा करे। 'ॐ ह्रूं बहुरूपिणी

कपालिनी ध्वजवासिनी हूँ'। इस मन्त्र से क्रोधराज के बाँयें तरफ अर्चना पूजा करनी चाहिए। 'ॐ वरज्वालिनी ज्वरहारिणी हूँ', इस मन्त्र से ईशान कोण में अर्चना करे। 'ॐ धूपहस्ते हूँ' इस मन्त्र से अग्निकोण में अर्चना करे। 'ॐ श्रीविभूषणी गन्धहस्ते स्वाहा' इस मन्त्र से नैऋतकोण में तथा 'श्रीजगत् पालिनी दीपहस्ते हूँ' इस मन्त्र से वायुकोण में पूजा करनी चाहिए ॥ ८ ॥

मुद्रा सिंहध्वजाख्येयं क्रोधभूपेन भाषिता।
मुष्टिमन्योऽन्यमास्थाय तर्जनीश्चापि वेष्टयेत् ॥ ९ ॥

तदनन्तर मुद्रा विधान कहा जा रहा है। दोनों हाँथों की मुट्ठि बाँधकर तर्जनीद्वय को परस्पर वेष्टन करे। इसका नाम सिंहध्वजामुद्रा है, यह मुद्रा स्वयं क्रोधराज ने कहा है ॥ ९ ॥

अस्या वामकरस्यापि मुष्टिं कटितटे न्यसेत्।
प्रसार्या कुञ्चयेद्दक्षतर्जनीमंकुशात्मिकाम् ॥ १० ॥

बाँयें हाँथों की मुट्ठि बाँधकर कटितट पर स्थापन करके दाहिना हाँथ प्रथमत प्रसारित करके बाद में संकुचित करे, किन्तु तर्जनी को अंकुशाकार करके रखना चाहिए ॥ १० ॥

कृत्वा तु मुष्टिमन्योऽन्यं वेष्टयेत्तर्जनीद्वयम्।
प्रसारयेदुभे बाहुमूले धूपात्मिकं न्यसेत् ॥ ११ ॥

दोनों हाँथों की मुट्ठि बाँधकर तर्जनीद्वय को परस्पर वेष्टन करे एवं दोनों हाँथ प्रसारण करे ॥ ११ ॥

मुष्टिं कृत्वा ततोऽन्यन्यं प्रसार्य तर्जनीद्वयम्।
बाहुमूलेउभे स्थाप्य गन्धमुद्रा प्रकीर्त्तिता ॥ १२ ॥

दोनों हाँथों की मुट्ठि बाँधकर तर्जनीद्वय प्रसारित करके बाहुमूल पर स्थापन करे। इसका नाम गन्ध मुद्रा है ॥ १२ ॥

कृत्वाधो दक्षिणां मुष्टिं मध्यमाञ्च प्रसारयेत्।
दीपमुद्रेति विख्याता वज्रपाणिविनिर्मिता ॥ १३ ॥

दक्षिण हाँथ की मुट्ठि बाँधकर मध्यमांगुलि को अधोमुख में प्रसारित करे। इसका नाम दीपमुद्रा है। यह मुद्रा वज्रपाणि कर्तृक द्वारा कथित हुआ है ॥ १३ ॥

इति श्रीभूतडामरे महातन्त्रराजे परिषन्मण्डल क्रोध-ध्यान-
विधिर्नाम चतुर्दशः पटलः ॥ १४ ॥

पञ्चदशः पटलः

अपराजितादिमुख यक्षसिद्धि साधना

श्रीमत्युन्मत्तभैरव्युवाच ।

अशेषदुष्टदलनसिद्धगन्धर्ववन्दित ।
प्रसन्नोऽपि यदा नाथ यक्षसिद्धि तदा वद ॥ १ ॥

उन्मत्त भैरवी उन्मत्त भैरव से पूछने लगीं, हे नाथ ! आप समस्त दुष्टदलनकारी तथा सिद्धगन्धर्व से वित हैं। यदि मेरे प्रति आप प्रसन्न हों, तो यक्ष साधना मेरे निकट कहें ॥ १ ॥

श्रीमदुन्मत्तभैरव उवाच ।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि भूतानां सिद्धिसाधनम् ।
येन विज्ञानमात्रेण लभ्यते सर्वसिद्धयः ।
मनुमेषां प्रवक्ष्यामि यथावदधारय ॥ २ ॥

उन्मत्त भैरव कह रहे हैं, मैं भूतसिद्धि का उपाय कहूँगा। यह सिद्धि विधान जानने पर सर्वसिद्धि लाभ होता है। तुम अवहितचित्त होकर श्रवण करो ॥२॥

विषं भूतेश्वरी बीजं वातमादरं संयुतम् ।
अपराजितमाख्यातं भूतानामधिदैवतम् ॥
अनादिबीजं भूतेशं गृह्यतारकलान्वितम् ।
पवनोऽसौ समाख्यातो वाञ्छितार्थ प्रदायकः ॥
विषं निरञ्जनं वायुं सादरं पाशमुद्धरेत् ।
प्रणवञ्च ततो वातं कलया समलंकृतम् ॥
श्मशानाधिपतेर्मन्त्रं क्रोधराजेन भाषितम् ।
प्रालेयाज्जालिनी गृह्य यः कुलेश्वर ईरितः ॥
विषादमन्त्रः सकलो वायुर्भूतेश्वरः स्मृतः ।
सृष्टेरनन्तः सकलस्तारात्म किन्नरोत्तमः ॥ ३ ॥

'ॐ हूँ यं' यह अपराजित मन्त्र भूतगणों के देवता स्वरूप हैं। 'ॐ हूँ ॐ पवनाख्य' यह मन्त्र वाञ्छितार्थ फलप्रद है। ॐ हूँ यं आं ॐ यं श्मशानाधिपति भूत का यह मन्त्र क्रोधराज ने कहा है। ॐ हूँ हूँ यं यह अनन्त सृष्टि के सभी वायुभूतेश्वर किन्नरोत्तम के साधना का मन्त्र कहा गया है ॥ ३ ॥

वज्रस्य पूरतः स्थित्वा जपेल्लक्षं पुरस्कृतः ।
अथातः पौर्णमास्यान्तु समभ्यर्च्य यथा बलिम् ॥
सितौदनं घृतं क्षीरमैक्षरं पायसं पुनः ।
धूपयेद् गुग्गुलुं धूपं सकलां यामिनीं जपेत् ॥
प्रभातेऽन्तिकमायाति वदेदाज्ञां प्रयच्छ मे ।
साधकेनापि वक्तव्यं भव त्वं किङ्करो मम ॥
ततोऽसौ किङ्करो भूत्वा राज्यं यच्छति कामिकम् ।
करोति निग्रहं रात्रोर्नारीमानीय यच्छति ॥
साधकः सप्तकल्पानि जीवत्येव न संशयः ।
यथेष्टं लभते मन्त्री साधयित्वाऽपराजितम् ।
एवमन्योऽपि साध्यन्ते पवनाद्यष्टसिद्धयः ॥ ४ ॥

पूर्वोक्त मन्त्र समूहों की साधना प्रणाली कथित हो रही है। प्रथमतः पुरश्चरण करके एक लाख मन्त्र जप करे। उसके बाद पूर्णिमा के रात को यथाविधि पूजा करके बलि प्रदान करे। उसके बाद सिततण्डुल घृत, दुग्ध, गन्ने के रस से पका खीर निवेदन करके गुग्गुलु के द्वारा धूप दें, तथा सारी रात मन्त्र का जप करे। प्रभात के समय देव आगमन करके साधक से कहते हैं, तुम क्या आज्ञा करते हो। तब साधक कहें तुम मेरे भृत्य होकर रहो। उसके बाद अपराजित देव साधक के भृत्य होकर राज्य प्रदान करते हैं तथा साधक के शत्रु का विनाश करके अभिलषित कामिनी रात्रि में लाकर साधक को अर्पण करते हैं। इस प्रकार साधना करके सिद्धि होने पर साधक सप्तकल्प जीवित रहते हैं। अपराजित साधना में अभिलषित द्रव्य लाभ होता है ॥५॥

गुरुचरणसरोजाज्जाप्यमन्त्रस्य रूपम् ।
मुखहृदय दृशावाप्याकृतिर्लक्ष्य सम्यक् ॥
यदि निगदितदेशध्यानमुद्रा विधिज्ञो ।
जपति फलति सिद्धिर्नन्यथा क्रोधवाक्यम् ॥ ५ ॥

साधक गुरु के पास से मन्त्र ग्रहण करके एकचित्त होकर लक्षसंख्यक जप करें, ध्यान, मुद्रा तथा पूजा विधि जानकर जप करने पर निश्चय ही मन्त्र सिद्धि होगा। इसका अन्यथा नहीं है। यह क्रोधराज का वाक्य है ॥५॥

तपसोग्रेण तुष्टेन भक्त्या क्रोधनृपेण यत् ।
गदितं शाम्भवं ज्ञानं भुक्तिमुक्तिप्रदायकम् ॥
कष्टेन महता लब्धं तदहं भैरवानने ।

विख्यातं त्रिषु लोकेषु प्रकाश्यान्तेऽप्रकाशितम् ॥
किङ्करा स्त्रिदशा येन दास्य एषां वराङ्गनाः ।
मोक्षप्रभृतयो येन लभ्यन्ते त्रिषु दुर्लभाः ॥
भवस्थितिलया येन त्रिदशानां नृणामपि ।
पूज्यन्ते त्रिषु लोकेषु नश्यन्ते नारकं तमः ॥
न मृते विषयो देयो मृते बासो गरीयसी ।
··· ···ऽपि त्वया देयो··· ···श्वासोदराय मे ॥
भक्तिहीने दूराचारे हिंसाव्रतपरायणे ।
अलसे दुर्जने दुष्टे गुरुभक्ति विवर्जिते ॥
अन्यथा वादिविज्ञानं यत् सुरैरपि दुर्लभम् ।
अन्यथा क्रोधवज्रेण विनाशो जायते ध्रुवम् ॥
उन्मत्त भैरवः प्राह भैरवीं सिद्धिपद्धतिम् ।
तन्त्रचूड़ामणौ दिव्ये तन्त्रेऽस्मिन् भूतडामरे ॥ ६-७ ॥

क्रोधराज किसी साधक के उग्र तपस्या से सन्तुष्ट होकर यह भक्ति मुक्तिप्रद शाम्भव विज्ञान कहा है। यह साधना त्रिलोक विख्यात है। इस साधना बल से देवगण भृत्य तथा देवीगण दासी होकर रहती हैं, तथा इस साधना प्रसाद से त्रिलोक दुर्लभ मुक्तिलाभ करते हैं। इसके बल से देवता तथा मनुष्यों के सृष्टिः स्थिति तथा प्रलय होता है। भक्तिहीन, दुराचाररत, हिंसक, आलसी, दुर्जन, दुष्टचित्त, गुरुभक्ति विवर्जित, इन सब लोगों के पास यह साधना तथा मन्त्र प्रकाश न करें। जो भक्तिहीनादि व्यक्ति के पास यह भूतडामरोक्त साधना प्रकाश करता है, क्रोधराज उसे विनष्ट करते हैं।

उन्मत्त भैरव ने उन्मत्त भैरवी से जिन जिन विषयों को कहा है, वह सब तन्त्रचूड़ामणि यह भूतडामरतन्त्र में सविशेष उक्त है ॥ ६-७ ॥

इति श्रीभूतडामरे महातन्त्रराजे अपराजितादिमुख-यक्षसिद्धि-
साधन विधिर्नाम पञ्चदशः पटलः ॥ १५ ॥

षोडश: पटल:

योगिनी साधना

श्रीमत्युन्मत्तभैरव्युवाच ।

भूतेश परमेशान रवीन्द्वग्निविलोचन ।
यदितुष्टोऽसि देवेश योगिनीसाधनं वद ॥ १ ॥

उन्मत्त भैरवी कह रही हैं, हे चन्द्रसूर्याग्निलोचन भूतेश्वर ! यदि आप मेरे प्रति सन्तुष्ट हों, तो योगिनी साधना मेरे समक्ष कहें ॥ १ ॥

श्रीमदुन्मत्तभैरव उवाच ।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि योगिनीसाधनोत्तमम् ।
सर्वार्थसाधनं नाम देहिनां सर्वसिद्धिदम् ॥
अतिगुह्या महाविद्या देवानामपि दुर्लभा ।
यासामभ्यर्च्चनं कृत्वा यक्षेशो भुवनाधिपः ॥
तासामाद्यां प्रवक्ष्यामि सुराणां सुन्दरी प्रिये ।
यस्याश्चाभ्यर्च्चने नैव राजत्वं लभते नरः ॥ २ ॥

उन्मत्त भैरव कहने लगे, हे देवि ! तदनन्तर योगिनी साधना कहूँगा । इस साधना से सर्वार्थ सिद्धि होता है । यह अति गोपनीय एवं देवताओं को भी दुर्लभ है । जिन सभी की अर्चना करके यक्षेश्वर त्रिभुवन के अधिपति हुये हैं तथा जिन सब के आराधना से राजत्व लाभ होता है, उन सबकी साधना प्रणाली कहूँगा ॥ २ ॥

अथ प्रातः समुत्थाय कृत्वा स्नानादिकं शुभम् ।
प्रासादञ्च समासाद्य कुर्यादाचमनं ततः ॥
प्रणवान्ते सहस्रारं हुं फट् दिग्बन्धनं चरेत् ।
प्राणायामं ततः कुर्यान्मूलमन्त्रेण मन्त्रवित् ॥
षडङ्गं मायया कुर्यात् पद्ममष्टदलं लिखेत् ।
तस्मिन् पद्मे तथा मन्त्री जीवन्यासं समाचरेत् ॥
पीठे देवान् समभ्यर्च्य ध्यायेद्देवीं जगत् प्रियाम् ।
ॐ पूर्णचन्द्रनिभां देवीं विचित्राम्बरधारिणीम् ॥

पीनोत्तुङ्ग कुचां वामां सर्वज्ञामभयप्रदाम् ।
इति ध्यात्वा च मूलेन दद्यात् पाद्यादिकं शुभम् ।
पुनर्धूपं निवेद्यैव नैवेद्यं मूलमन्त्रतः ।
गन्धचन्दनताम्बूलं सकर्पूरं सुशोभनम् ॥ ३ ॥

प्रातःकाल में गात्रोत्थान करके (उठकर) स्नान सन्ध्यादि करके ह्रीं इस मन्त्र से आचमन करे। 'सहस्रारं हूँ फट्' इस मन्त्र से दिग्बन्धन करके, मूलमन्त्र से प्राणायाम करे। ह्रीं इस मन्त्र से षडङ्गन्यास करके अष्टदलपद्म लिखें। उस पद्म के मध्य में प्राणप्रतिष्ठा करके पीठपूजा पूर्वक देवी का ध्यान करना चाहिए।

देवी पूर्णचन्द्र के समान आभाविशिष्टा एवं विचित्र वस्त्र परिधायिनी, देवी के स्तन द्वय स्थूल तथा तुङ्ग ये सर्वज्ञा वराभयप्रदा हैं। इस प्रकार के रूप की चिन्ता करते-करते ध्यान करना चाहिए। इस प्रकार ध्यान करके मूल मन्त्र से पाद्यादि के द्वारा अर्चना करे। पुनर्वार मूल मन्त्र से धूप निवेदन करके नैवेद्य प्रदान करें। उसके बाद गन्ध, चन्दन तथा कर्पूरादि सुवासित ताम्बूल प्रदान करें ॥ ३ ॥

प्रणवान्ते भुवनेशि आगच्छ सुरसुन्दरि ।
वन्हेर्ज्जाया जपेन्मन्त्रं त्रिसन्ध्यञ्च दिने दिने ॥
सहस्रैकप्रमाणेन ध्यात्वा देवीं सदा बुधः ।
मासान्तदिवसं प्राप्य बलिपूजां सुशोभनाम् ॥
कृत्वा च प्रजपेन्मन्त्रं निशीथे याति सुन्दरि ।
सुदृढं साधकं ज्ञात्वा याति सा साधकालये ॥
सुप्तेऽमना साधकाग्रे सा सदा स्मेरमुखी ततः ।
दृष्ट्वा देवीं साधकेन्द्रो दद्यात् पाद्यादिकं शुभम् ॥
सचन्दनं सुमनसो दत्वाभिलषितं वदेत् ।
मातरं भगिनीं वाथ भार्यां वा भक्तिभावतः ॥
यदि माता तदा वित्तं द्रव्यञ्च सुमनोहरम् ।
नृपति त्वं प्रार्थितं यत्तद्ददाति दिने दिने ॥
पुत्रवत् पालयेल्लोके सत्यं सत्यं सुनिश्चितम् ।
स्वसा ददाति द्रव्यञ्च दिव्यं वस्त्रं तथैव च ॥
दिव्यकन्यां समानीय नागकन्यां दिने दिने ।
यद् यद् भवति भूतञ्च भविष्यतीति तत् पुनः ॥

तत् सर्वं साधकेन्द्राय निवेदयति निश्चिपुम् ।
यद् यत् प्रार्थयते सर्वं ददाति सा दिने दिने ॥
भ्रातृवत् पालितं लोके कामनाभिर्मनोगतैः ।
भार्या वा यदि सा देवी साधकस्य मनोहरा ॥
राजेन्द्रः सर्वराजानां संसारे साधकोत्तमः ।
स्वर्गे लोके च पाताले गतिः सर्वत्र निश्चिता ॥
यद् यद्ददाति सा देवी कथितुं नैव शक्यते ।
तया सार्द्धञ्च सम्भोगं करोति साधकोत्तमः ।
अन्यस्त्रीगमनं त्याज्यमन्यथा नश्यति ध्रुवम् ॥ ४ ॥

'ॐ ह्रीं आगच्छ सुरसुन्दरि स्वाहा' इस मूल मन्त्र से प्रतिदिन त्रिसन्ध्या देवी का ध्यान करके एक हजार जप करें। इस प्रकार एक मास तक जप करके मासान्त के दिन पूजा करके बलिप्रदान करें। उसके बाद एकचित्त से जप करते रहें। गम्भीर रात के समय देवी साधक को दृढ भक्तियुक्त जानकर उसके पास आगमन करती हैं एवं देवी सदा हास्य मुखी तथा प्रेमविशिष्टा होकर साधक के पास अवस्थिति करती हैं। तब साधक देवी को देखकर पाद्यादि प्रदान करें। उसके बाद सचन्दन पुष्प प्रदान करके मनोगत अभिलाषा को प्रकाश करके कहें। अर्थात् साधक देवी को माता, भगिनी अथवा भार्या कहकर सम्बोधन करें। यदि साधक देवी को मातृ सम्बोधन करें तो वित्त, उत्तमद्रव्य, राजत्व एवं जो जो साधक प्रार्थना करते हैं, वह देवी प्रदान करके पुत्रवत् प्रतिपालन करती हैं। भगिनी सम्बोधन करने पर नानाविध द्रव्य तथा दिव्यवस्त्र प्रदान करके दिव्यकन्या लाकर देती हैं।

साधक इस साधना के बल से भूतभविष्यत् कह सकते हैं तथा जो प्रार्थना करते हैं देवी तत् समुदाय (सभी) प्रतिदिन प्रदान करती हैं। यदि देवी साधक की भार्या होती हैं, तब साधक सर्वराज प्रधान होता है तथा स्वर्ग में तथा पाताल में गमन कर सकता है। इस साधना से देवी जो जो द्रव्य प्रदान करती हैं, वह वर्णन करने की शक्ति नहीं है।

अन्य स्त्री सम्भोग परित्याग करके इन देवी के साथ सम्भोग करना होता है। दूसरी स्त्री सम्भोग करने पर क्रोधराज उसका विनाश करते हैं ॥ ४ ॥

ततोऽन्यं साधनं वक्ष्ये निर्मितं ब्रह्मणा पुरा ।
नदीतीरं समासाद्य कुर्यात् स्नानादिकं ततः ॥
पूर्ववत् सकलं कार्यं चन्दनैर्मण्डलं लिखेत् ।
स्वमन्त्रं तत्र संलिख्याबाह्य ध्यायेन्मनोहराम् ॥
कुरङ्ग नेत्रां शरदिन्दुवक्त्रां बिम्बाधरां चन्दनगन्धलिप्ताम् ।
चीनांशुकां पीनकुचां मनोज्ञां श्यामा सदा कामदुहां विचित्राम् ॥
एवं ध्यात्वा यजेद्देवीमगुरुधूपदीपकैः ।
गन्धपुष्पं रसञ्चैव ताम्बूलदींश्च मूलतः ॥
तारं माया आगच्छ मनोहरे पावकवल्लभा ।
कृत्वा युतं प्रतिदिनं जपेन्मन्त्रं प्रसन्नधीः ॥
मासान्त दिवसं प्राप्य कुर्याच्च जपमुत्तमम् ।
आनिशीथं जपेन्मन्त्रं ज्ञात्वा च साधकं दृढमे ॥
गत्वा च साधकाभ्यासे सुप्रसन्ना मनोहरा ।
वरं वरय शीघ्रं त्वं यत्ते मनसि वर्त्तते ॥
साधकेन्द्रोऽपि तां भक्त्या पाद्याद्यैरर्च्चयेन्मुदा ।
प्राणायामं षडङ्गञ्च मायया च समाचरेत् ॥
सद्योमांसं वलिं दत्वा पूजयेच्च समाहितः ।
चन्दनोदक पुष्पेण फलेन च मनोहरा ॥
ततोऽच्चिता प्रसन्ना सा पुष्णाति प्रार्थितञ्च यत् ।
स्वर्णशतं साधकाय ददाति सा दिने दिने ॥
नावशेष व्ययं कुर्यात् स्थिते तत्र न दास्यति ।
अन्यस्त्री गमनं तस्य न भवेत् सत्यमीरितम् ॥
अव्याहतगतिस्तस्य भवतीति न संशयः ।
इति ते कथिता विद्या सुगोप्या च सुरासुरैः ।
तव स्नेहेन भक्त्या च वक्ष्येऽहं परमेश्वरी ॥ ५ ॥

तदनन्तर अन्य साधना कथित हो रहा है। यह साधना पूर्वकाल में ब्रह्मा ने कहा है। नदीतीर में जाकर स्नानसन्ध्यादि करे, एवं पूर्ववत् सभी कार्य करके चन्दन के द्वारा मण्डल बनाये उस मण्डल के मध्य में स्वीयमन्त्र लिखकर आवाहन करके मनोहरा का ध्यान करे।

देवी का आकार इस प्रकार है, हिरण के समान नयन, शरत् कालीन चन्द्र के समान मुखमण्डल तथा बिम्बफल के समान अधर, सर्वाङ्ग सुगन्ध

चन्दन द्वारा अनुलिप्त, पट्टवस्त्र परिधान, स्तन अतिस्थूल, मूर्त्ति अति मनोहर एवं श्यामवर्ण। ये देवी साधक की अभिलाषा पूर्ण करती हैं। इस प्रकार रूप चिन्ता करते करते ध्यान करके अगुरु धूप एवं दीपद्वारा देवी की अर्चना करें। मूलमन्त्र से गन्ध पुष्पादि तथा ताम्बूल निवेदन करे।

मूलमन्त्र 'ॐ ह्रीं आगच्छ मनोहरे स्वाहा' यह मन्त्र प्रतिदिन दशसहस्र जप करें। इस प्रकार एक मास तक जप करके मासान्त के दिन निशीथ समय तक जप करते रहें। इस प्रकार करने पर मनोहरा साधक को नितान्त अनुरक्त जानकर उसके पास आकर कहेगीं, तुम शीघ्र अभिलाषित वर ग्रहण करो। तब साधक भक्तिपूर्वक पाद्यादि द्वारा उनकी अर्चना करें एवं ह्रीं इस मन्त्र से प्राणायाम तथा षडङ्गन्यास करके सद्योमांस बलिप्रदान पूर्वक संयत होकर पूजा करें। चन्दनोदक, पुष्प तथा फलद्वारा अर्चना करने पर मनोहरा साधक के प्रति प्रसन्न होकर उसको प्रार्थित वर प्रदान करती हैं एवं प्रतिदिन शत सुवर्ण दान करती हैं। वह सुवर्ण थोड़ा सा भी अवशिष्ट न रखकर समस्त व्यय करें। व्यय न करके रखलेने पर देवी फिर पुनः दान नहीं करतीं हैं। इस साधना में अन्य स्त्री सम्भोग परित्याग करना होगा। इस साधना के बल से साधक की गति सर्वत्र अव्याहत रहती है।

हे भैरवी ! यह विद्या अति गोपनीय है। केवल तुम्हारे स्नेह तथा भक्ति से प्रकाश किया है ॥ ५ ॥

ततो वक्ष्ये महाविद्यां शृणुष्वैक मनाः प्रिये।
गत्वा वटतलं देवीं पूजयेत् साधकोत्तमः ॥
प्राणायामं षडङ्गञ्च माययाथ समाचरेत्।
सद्योमांसं बलिं दत्वा पूजयेत्तां समाहितः ॥
अर्घ्यमुच्छिष्टरक्तेन दद्यात्तस्मै दिने दिने।
प्रचण्ड वदनां गौरीं पक्वबिम्बाधरां प्रियाम् ॥
रक्ताम्बरधरां वामांसर्वकाम प्रदां शुभाम्।
एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रमयुतं साधकोत्तमः ॥
सप्तदिनं समभ्यर्च्य चाष्टमे दिवसेऽर्च्चयेत्।
कायेन मनसा वाचा पूजयेच्च दिने दिने ॥
तारं मायां तथा कूर्च्चं रक्षककर्मणि तद्वहिः।
आगच्छ कनकान्ते च वह्निः स्वाहा महामनुः ॥
आनिशीथं जपेन्मन्त्रं बलिं दत्वा मनोहरम्।

साधकेन्द्रं दृढं मत्वा प्रयाति साधकालये ॥
साधकेन्द्रोऽपि तां दृष्ट्वा दद्यादर्घ्यादिकं ततः ।
ततः स परिवारेण भार्या स्यात् कामभोजनैः ॥
वस्त्रभूषादिकं दत्त्वा याति सा निजमन्दिरम् ।
एवं भार्या भवेन्नित्यं साधकाज्ञानुरूपतः ।
आत्मभार्यां परित्यज्य भजेत्ताञ्च विचक्षणः ॥ ६ ॥

तदनन्तर महाविद्या साधना कह रहा हूँ, एकचित्त होकर श्रवण करो। साधक बरगद वृक्ष के नीचे बैठकर देवी की पूजा करें। ह्रीं इस मन्त्र से प्राणायाम तथा षडङ्गन्यास करके सद्योमांस बलि प्रदान करके संयत होकर देवी की पूजा करें। इस प्रकार प्रतिदिन पूजा तथा बलि से उत्पन्न उच्छिष्ट खून से अर्घ्य प्रदान करें।

देवी का आकार इस प्रकार है—मुख अति प्रचण्ड, गौरवर्णा, पक्वविम्ब-फल के समान रक्तवर्ण वस्त्र पहिने हैं। यह देवी साधक के सभी प्रकार की कामना पूर्ण करती हैं। इस प्रकार रूप चिन्ता करके ध्यान करके साधक दश हजार मूलमन्त्र का जप करें। सात दिन तक मन्त्र का जप करके आठवें दिन अर्चना करे। देवी का मूलमन्त्र है, ॐ ह्रीं रक्ष कर्माणि आगच्छ कनकान्ते स्वाहा। उत्तम बलि प्रदान करके रात के समय तक मन्त्र जप करे। तब देवी साधक को दृढ प्रतिज्ञ जानकर उसके पास आगमन करती हैं। तब साधक पाद्य अर्घ्य आदि के द्वारा देवी की अर्चना करें। इससे देवी सपरिवार से साधक की भार्या होकर रहती हैं एवं साधक को वस्त्र तथा भूषण आदि प्रदान करके अपने मन्दिर में गमन करती हैं। साधक इस प्रकार भार्या पाकर अपने भार्या का परित्याग करें ॥ ६ ॥

ततः कामेश्वरीं वक्ष्ये सर्वकामफलप्रदाम् ।
प्रणवं भुवनेशानीं आगच्छ कामेश्वरि ततः ॥
वह्ने भार्या महामन्त्रं साधकानां सुखावहम् ।
पूर्ववत् सकलं कृत्वा भूर्जपत्रे सुशोभने ॥
गोरोचनाभिः प्रतिमां विनिर्मिता मलंकृतम् ।
शय्यामारुह्य प्रजपेमन्त्रमेकमनास्ततः ॥
सहस्रैकप्रमाणेन मासमेकं जपेद्बुधः ।
घृतेन मधुना दीपं दद्याच्च सुसमाहितः ॥
कामेश्वरीं शशाङ्कास्यां चलत् खञ्जनलोचनाम् ।

सदा लोलगतिं कान्तां कुसुमास्त्र शिलीमुखाम् ।
एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं निशिथे याति सा सदा ॥
दृष्ट्वा च साधक श्रेष्टमाज्ञां देहीति तं वदेत् ।
गत्वा च साधकाभ्यर्णे आज्ञां देहीति तं वदेत् ॥
स्त्रीभावेन मुदातस्यै दद्यात् पाद्यादिकं ततः ।
सुप्रसन्ना महादेवी साधकं साधयेत् सदा ॥
अन्नाद्यैरति भोगेन पतिवत् पालयेत् सदा ।
नीत्वा रात्रिं सुखैश्वर्यैर्दत्वा च विपुलं धनम् ॥
वस्त्रालङ्कार द्रव्याणि प्रभाते याति निश्चितम् ।
एवं प्रतिदिनं तस्य सिद्धिः स्यात् कामरूपतः ॥ ७ ॥

तदनन्तर सर्वकामफलप्रदा कामेश्वरी मन्त्र तथा उसकी साधना कह रहा हूं। ॐ ह्रीं आगच्छ कामेश्वरि स्वाहा। यह मन्त्र साधक का सुखप्रद है। पूर्ववत् सभी कार्य करके भोजपत्र पर गोरोचन के द्वारा सुशोभन देवी की प्रतिमूर्ति अङ्कित करके बिस्तरे पर बैठकर एकचित्त होकर मन्त्र जप करते रहना चाहिए। प्रतिदिन एक हजार करके एक मास उक्त मन्त्र का जप करें। उसके बाद घृत तथा मधु द्वारा प्रदीप प्रदान करके ध्यान करना चाहिए।

देवी का आकर इस प्रकार है—कामेश्वरी, चन्द्रवदना, खञ्जन के समान चञ्चल लोचन एवं चञ्चल गति, इनके हाथ में कुसुम तथा भ्रमर यह दो अस्त्र हैं। इस प्रकार रूप चिन्ता करके ध्यान करे, निशीथ समय में रात को मन्त्र जप करे। तब देवी साधक के पास आगमन करके कहती है, तुम आज्ञा प्रदान करो। तब साधक स्त्रीभाव से देवी को पाद्य आदि प्रदान करें। इससे देवी साधक के प्रति प्रसन्न होकर उसकी कार्य साधना करती रहती हैं, एवं अन्नादि विविध भक्ष्य द्रव्य प्रदान करके सर्वदा पतिवत् पालन करती हैं। विविध सुख से रात्रि यापन करके साधक को विपुल धन तथा वस्त्रादि अलङ्कार प्रदान करके प्रभात के समय प्रतिगमन करती हैं। इस प्रकार प्रतिदिन इच्छानुसार सिद्धि होता है॥ ७ ॥

ततः पत्रे विनिर्माय पुत्तलीं ध्यानरूपतः ।
सुवर्णवर्णां गौराङ्गीं सर्वालङ्कार भूषिताम् ॥
नूपुराङ्गदहाराढ्यां रम्याञ्च पुष्करेक्षणाम् ।
एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं दद्याच्च पाद्यमुत्तमम् ॥
सचन्दनेन पुष्पेण जातीपुष्पेण यत्नतः ।

गुग्गुलुधूपदीपञ्च दद्यान्मूलेन साधकः ॥
तारं माया तथा गच्छ रतिसुन्दरि पदं ततः ।
वह्निजायाष्ट साहस्रं जपेन्मन्त्रं दिने दिने ॥
मासान्त दिवसं प्राप्य कुर्यात् पूजादिकं शुभम् ।
घृतदीपं तथा गन्धं पुष्पं ताम्बूलमेव च ॥
तावन्मन्त्रं जपेद्विद्वान् यावदायाति सुन्दरी ।
ज्ञात्वा दृढं साधकेन्द्रं निशीथे याति निश्चितम् ॥
ततस्तामर्च्चयेद्भक्त्या जातीकुसुममालय ।
सन्तुष्टा सा साधकेन्द्रं तोषयेत् प्रीतिभोजनैः ॥
भूत्वा भार्या च सा तस्मै ददाति वाञ्छितं वरम् ।
भूषादिकं परित्यज्य प्रभाते याति निश्चितम् ॥
साधकाज्ञानुरूपेण प्रयाति सा दिने दिने ।
निर्जने प्रान्तरे देवि सिद्धः स्यान्नात्र संशयः ।
त्यावत्वा भार्यां भजेत्तांश्च अन्यथा नश्यति ध्रुवम् ॥ ८ ॥

भूर्जपत्र पर ध्यानानुसार से एक पुत्तलिका बनाकर देवी का ध्यान करना चाहिए ।

देवी सुवर्ण के समान गौरवर्णा एवं नूपुरादि सर्वप्रकार अलङ्कारों से विभूषिता हैं । इनकी मूर्त्ति अति मनोहरा तथा पद्म के समान नयनद्वय है । इस प्रकार से ध्यान करके मन्त्र जप करें एवं पाद्य, उत्तम चन्दन, पुष्प, विशेषतः जातीपुष्प, गुग्गुलु तथा धूप दीप मूलमन्त्र से प्रदान करें । मूलमन्त्र है—'ॐ ह्रीं आगच्छ रति सुन्दरि स्वाहा' । यह मन्त्र एक मास प्रतिदिन एक हजार जप करे । मासान्त दिवस में पूजा करके घृतप्रदीप, गन्ध, पुष्प तथा ताम्बूल निवेदन करके मन्त्र जप करते रहें । तब सुन्दरी साधक को दृढ़ प्रतिज्ञ जानकर निशीथ समय में (रात को) साधक के निकट आगमन करती हैं । साधक उसी समय जातीपुष्पमाल्य द्वारा भक्तिपूर्वक अर्चना करें । इससे देवी सन्तुष्ट होकर प्रीतिप्रद भोजनद्रव्य द्वारा साधक को सन्तुष्ट करती हैं एवं साधक की भार्या होकर अभिलषित वरप्रदान करके भूषणादि परित्याग करके प्रभातकाल में साधक के आज्ञानुसार से चली जाती हैं । साधक निर्जन स्थान में अथवा प्रान्तर में इस प्रकार सिद्ध होकर अपनी भार्या का परित्याग करें, इसका अन्यथा करने पर साधक विनष्ट होगा ॥ ८ ॥

ततोऽन्यत् साधनं वक्ष्ये स्वगृहे शिवसन्निधौ।
वेदाद्यं भुवनेशीञ्च आगच्छ पद्मिनी शुभा ॥
पावकश्च महामन्त्रः पूर्ववत् सकलं ततः।
मण्डलं चन्दनैः कृत्वा मूलमन्त्रं लिखेत्ततः ॥
पद्माननां श्यामवर्णां पीनोत्तुङ्ग पयोधराम्।
कोमलाङ्गीं स्मेरमुखीं रक्तोत्पलदलेक्षणाम् ॥
एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं सहस्रञ्च दिने दिने।
मासान्ते पूर्णिमां प्राप्य विधिवत् पूजयेन्मुदा।
आनिशीथं जपं कुर्याद्दृढाभ्यासेन साधकः ॥
सर्वत्र कुशलं दृष्ट्वा याति सा साधकालयम्।
भूत्वा भार्या साधकं हि तोषयेद्विविधैरपि ॥
भोग्य द्रव्यैर्भूषणाद्यैः पद्मिनी सा दिने दिने।
पतिवत् पालितं लोके नित्यं स्वर्गं च सर्वदा।
त्यक्त्वा भार्यां भजेत्ताञ्च साधकेन्द्रः सदा प्रियः ॥ ९ ॥

तदनन्तर अन्य प्रकार की साधना कहा रहा हूँ। साधक अपने घर पर अथवा शिवसन्निधान में 'ॐ ह्रीं आगच्छ पद्मिनी स्वाहा' इस मन्त्र का जप करे। पूर्ववत् सभी कार्य करके रक्तचन्दन के द्वारा उक्त मन्त्र को लिखें। उसका ध्यान इस प्रकार करें। देवी का आकार इस प्रकार है—

देवी पद्मासना तथा श्यामवर्णा इनका स्तनद्वय अति स्थूल तथा उच्च, शरीर अति कोमल, वदन हास्यपूर्ण एवं रक्तोत्पल के समान नयनद्वय हैं। इस प्रकार रूप चिन्ता करके एकाग्र होकर प्रतिदिन एक हजार मन्त्र का जप करे। मासान्त दिवस में पूर्णिमा तिथि को विधिवत् पूजा करके रात तक दृढ़ाभ्यास के साथ जप करते रहना चाहिए। रात्रि समय में देवी साधक के निकट आकर उसकी भार्या होकर विविध भक्ष्यद्रव्य तथा भूषणादि के द्वारा साधक को सन्तुष्ट करती हैं। पद्मिनी इस प्रकार प्रतिदिन पतिवत् पालन करके साधक को स्वर्ग में ले जाती है।

साधक अपनी भार्या का परित्याग करके पद्मिनी का भजन करता रहे, यह उनको प्रिय लगता है ॥ ९ ॥

ततो वक्ष्ये महाविद्यां विश्वामित्रेण धीमता।
ज्ञात्वा यासाधिता विद्याबला चातिबला प्रिये ॥
प्रणवान्ते महामाया नटिनी पावकप्रिया।

महाविद्येह कथिता गोपनीया प्रयत्नतः ॥
अशोकस्य तटं गत्वा स्नानं विधिवदारयेत् ।
मूलमन्त्रेण सकलं कुर्याच्च सुसमाहितः ॥
त्रैलोक्यमोहिनीं गौरीं विचित्राम्बर धारिणीम् ।
विचित्रालंकृतां रम्यां नर्त्तकी वेशधारिणीम् ॥
एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं सहस्रञ्च दिने दिने ।
मांपोपहारैः सम्पूज्य धूपदीपौ निवेदयेत् ॥
गन्ध चन्दन ताम्बूलं दद्यात्तस्यै सदा बुधः ।
मासमेकन्तु तां भक्त्या पूजयेत् साधकोत्तमः ॥
मासान्त दिवसं प्राप्य कुर्याच्च पूजनं महत् ।
अर्द्धरात्रौ भयं दत्वा किञ्चित् साधक सत्तमे ॥
सुदृढं साधकं मत्वा याति सा साधकालयम् ।
विद्याभिः सकलाभिश्च किञ्चित् स्मेरमुखी ततः ॥
वरं वरय शीघ्रं त्वं यत्ते मनसि वर्त्तते ।
तच्छ्रुत्वा साधक श्रेष्ठो भावयेन्मनसा धिया ॥
मातरं भगिनीं वापि भार्यां वा प्रीतिभावतः ।
कृत्वा सन्तोषयेद् भक्त्या नटिनी तत् करोत्यलम् ॥
माता स्याद् यदि सा देवी पुत्रवत् पालयेन्मुदा ।
अन्नाद्यैरुपहारैश्च ददाति चारुभोजनम् ॥
स्वर्णशतं सिद्धिद्रव्यं ददाति सा दिने दिने ।
भगिनी यदि सा कन्यां देवस्य नागकन्यकाम् ॥
राजकन्यां समानीय ददाति सा दिने दिने ।
अतीतानागतां वार्त्तां सर्वं जानाति साधकः ॥
भार्या स्याद् यदि सा देवी ददाति विपुलं धनम् ।
अन्नाद्यैरुपहारैश्च ददाति कामभोजनम् ॥
स्वर्गशतं सदा तस्मै ददाति सा ध्रुवं प्रिये ।
यद् यद्वाञ्छति तत् सर्वं ददाति नात्र संशयः ॥ १० ॥

तदनन्तर बल तथा अतिबला साधना कहा जा रहा है। विश्वामित्र ने इस महाविद्या की साधना कि थी।

'ॐ ह्रीं नटिनी स्वाहा'। यह विद्या अति गोपनीय है। अशोक तरु के तल पर जाकर विधिपूर्वक स्नान करे। स्नानादि सभी कार्य मूलमन्त्र में कहा जायगा।

यह देवी त्रिभुवन मोहन कारिणी, गौरवर्ण, विचित्र वस्त्र परिधारिणी, विविध अलङ्कारों से विभूषिता, मनोहरा एवं नर्त्तकी के वेश धारिणी हैं। इस प्रकार रूप चिन्ता करके ध्यान करके प्रतिदिन एक हजार करके पूर्वोक्त मन्त्र का जप करे, मांस उपहार द्वारा देवी की पूजा करके धूप, दीप, गन्ध, चन्दन तथा ताम्बूल निवेदन करें। इस प्रकार से एकमास पूजा करके मासान्त दिवस में महत् पूजा करे। इस प्रकार अर्चना करके जप करने पर अर्द्धरात्रि के समय देवी किञ्चित् भय प्रदर्शन कराके साधक के समीप आगमन करती हैं, एवं हँसते हँसते साधक से कहती हैं, तुम्हारी जो इच्छा है, इस प्रकार वर प्रार्थना करो।

साधक देवी के वाक्य को सुनकर अपने मन ही मन चिन्ता करके माता, भगिनी अथवा भार्या कहकर देवी को सम्बोधन करें। साधक जिस रूप में सम्बोधन करेगा देवी तदनुरूप आचरण करके साधक को सन्तुष्ट करती हैं। मातृसम्बोधन करने पर देवी अन्नादि भोजन द्रव्यादि प्रदान करके साधक को पुत्रवत् पालन करती हैं। एवं प्रतिदिन शत सुवर्ण मुद्रा तथा नानाविध अभिलषित द्रव्य प्रदान करती हैं। भगिनी सम्बोधन करने पर देवकन्या, नागकन्या तथा राजकन्या लाकर प्रदान करती हैं। इससे साधक भूत, भविष्यत् तथा वर्त्तमान समस्त विषय जान सकता है।

भार्या सम्बोधन करने पर विपुल धन तथा अन्नादि अभिलषित भोजन द्रव्य तथा शत सुवर्ण प्रदान करती हैं॥ १० ॥

महाविद्यां प्रवक्ष्यामि सावधानावधारय।
कुंकुमेन समालिख्य भूर्जपत्रे स्त्रियं मुदा॥
ततोऽष्टदलमालिख्य कुर्यान्न्यासादिकं प्रिये।
जीवन्यासं ततः कृत्वा ध्यायेत्तत्र प्रसन्नधीः॥
शुद्धस्फटिकसङ्काशां नानारत्नविभूषिताम्।
मञ्जीरहारकेयूररत्न कुण्डलमण्डिताम्॥
एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं सहस्रन्तु दिने दिने।
प्रतिपदि समारभ्य पूजयेत् कुसुमादिभिः॥
धूपदीपविधानैश्च त्रिसन्ध्यं पूजयेन्मुदा।
पूर्णिमां प्राप्य गन्धाद्यैः पूजयेत् साधकोत्तमः॥
घृतदीपं तथा धूपं नैवेद्यञ्च मनोहरम्।
रात्रौ च दिवसे जापं कुर्याच्च सुसमाहितः॥

प्रभात समये याति साधकस्यान्तिकं ध्रुवम् ।
प्रसन्न वदना भूत्वा तोषयेद्रतिभोजनैः ॥
देवदानवगन्धर्वविद्या धृग्यक्षरक्षसाम् ।
कन्याभि रत्न भूषाभिः साधकेन्द्रं मुहुर्मुहुः ॥
चर्य्यचोष्यादिकं सर्वं द्रव्यं ददाति सा ध्रुवम् ।
स्वर्गे मर्त्यं च पाताले यद्वस्तु विद्यते प्रिये ॥
आनीय दीयते सापि साधकाज्ञानुरूपतः ।
स्वर्णशतं यदा तस्मै ददाति सा दिने दिने ॥
साधकाय वरं दत्वा याति सा निजमन्दिरम् ।
तस्या वर प्रदानेन चिरजीवी निरामयः ॥
सर्वज्ञः सुन्दरः श्रीमान् सर्वशो भवति ध्रुवम् ।
येन सार्द्धं तया देवि साधकेन्द्रो दिने दिने ॥
तारं मायां तथागच्छानुरागिणि मैथुनप्रिये ।
वह्नि भार्या मनुः प्रोक्तः सर्वसिद्धि प्रदायकः ॥
एषामधुमती तुल्या सर्वसिद्धिप्रदा प्रिये ।
गुह्याद् गुह्यतरा विद्या तव स्नेहात् प्रकीर्तिता ॥ ११ ॥

तदनन्तर अन्य महाविद्या साधना कह रहा हूँ। भोजपत्र पर कुंकुम द्वारा स्त्री की प्रतिमूर्त्ति लिखकर अष्टदल पद्म अङ्कित करे। उसके बाद न्यासादि करके उस प्रतिमूर्त्ति पर प्राणप्रतिष्ठा करके ध्यान करे। शुद्ध स्फटिक के समान देहकान्ति, विभिन्न प्रकार के रत्नों से विभूषिता, नूपुर, हार, केयूर तथा रत्नकुण्डलादि के द्वारा मण्डिता, इस प्रकाश रूप को चिन्ता करके ध्यान करे तथा प्रतिदिन एक हजार मन्त्र का जप करे। प्रतिपत् तिथि से आरम्भ करके पुष्प, धूपादि विविध उपहार से त्रिसन्ध्या पूजा करे। पूर्णिमा तिथि में गन्धादि के द्वारा पूजा करके घृतप्रदीप, धूप तथा मनोहर नैवेद्य निवेदन करे। इस प्रकार अर्चना करके सारी दिवारात्रि मूलमन्त्र का जप करते रहना चाहिए। प्रभात के समय देवी साधक के निकट आती हैं फिर साधक के प्रति प्रसन्न होकर रति तथा भोज्यद्रव्य द्वारा परितुष्ट करती हैं। देवकन्या, दानवकन्या, गन्धर्वकन्या, विद्याधरकन्या, यक्षकन्या, राक्षसकन्या ये सब चर्व्य चोष्यादि विभिन्न प्रकार के द्रव्य लाकर प्रदान करती है। स्वर्ग में, मर्त्य में तथा पाताल में जो सब वस्तु विद्यमान हैं। साधक के आज्ञानुसार उन सब द्रव्य को लाकर देती है। प्रतिदिन शत सुवर्ण साधक को प्रदान करके तथा वर प्रदान करके अपने मन्दिर में प्रस्थान

करती है। इस वर के प्रसाद से साधक चिरञ्जीवी, नीरोग, श्रीमान्, सर्वज्ञ, सुन्दर तथा सभी के अधिपति होता है।

'ॐ ह्रीं गन्धानुरागिणी मैथुन प्रिये स्वाहा' यह मन्त्र सर्वसिद्धिप्रद है। मधुमती मन्त्र साधन प्रणालीवत् यह मन्त्र साधन करे। यह मन्त्र अति गोपनीय है, यह तुम्हारे स्नेह से प्रकाशित हुआ है ॥ ११ ॥

देव्युवाच ।

श्रुतञ्च साधनं पुण्यं यक्षिणीनां सुखप्रदम् ।
कस्मिन् काले प्रकर्त्तव्यां विधिना केन वा प्रभो ।
अत्राधिकारिण: के वा समासेन वदस्व मे ॥

ईश्वर उवाच ।

वसन्ते साधयेद्धीमान् हविष्याशो जितेन्द्रिय: ।
सदा ध्यान परो भूत्वा तद्दर्शन महोत्सुक: ॥
उटजेपान्तरे वापि कामरूपे विशेषत: ।
स्थाने स्वेकतमं प्राप्य साधयेत् सुसमाहित: ॥
अनेन विधिना साक्षाद्भविष्यति न संशय: ।
देव्यश्च सेवका: सर्वपञ्चरात्राधिकारिण: ।
तारको ब्रह्मणो भृत्यं विनाप्यत्राधिकारिण: ।

भैरवी बोली, सुखप्रद यक्षिणी साधना सुन लिया। उन सब साधना को किस समय में, किस विधान से करना होगा तथा किस प्रकार व्यक्ति यह साधन कार्य के यथार्थ अधिकारी हैं वह मेरे समक्ष कहें।

भैरव कहने लगे, हे देवि ! श्रीमान् साधक हविष्याशी तथा जितेन्द्रिय होकर वसन्तकाल में यह साधना करे। सर्वदा ध्यान परायण तथा देवी के दर्शन में समुत्सुक होकर चत्वर, प्रान्तर, अथवा कामरूप इसका किसी एक स्थान पर संयत होकर यह साधना करनी चाहिए। पूर्वोक्त प्रणाली से कार्य करने पर निश्चय ही देवी का साक्षात्कार होता है। जो लोग देवी के सेवक हैं वे लोग ही इस कार्य के अधिकारी हैं। जो लोग पर ब्रह्म के उपासक हैं, उन सभी का इस साधना में अधिकार नहीं है।

इति श्रीभूतडामरे महातन्त्रराजे योगिनी साधनं नाम
षोडश: पटल: सम्पूर्ण: ।

भूतडामर: समाप्त:

हमारे प्रमुख प्रकाशन

१. मन्त्रमहोदधिः (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य २७५/-
२. मन्त्रमहोदधि Eng. I Rs. 250/- Eng. II Rs. 300/-
३. हिन्दी मन्त्रमहार्णव (मूल एवं हिन्दी अनुवाद)
देवी खण्ड २७५/-, देवता खण्ड २५०/-, मिश्र खण्ड १२५/-
४. श्रीविद्यार्णवतन्त्रम् (मूलमात्र)
पूर्वार्धम् १७५/- उत्तरा०प्रथम १७५/- उत्तरा०द्वितीय १७५/-
५. कुलार्णव तन्त्र (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद) १००.००
६. नारदपाञ्चरात्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य : १२५/-
७. श्रीकृष्णयामलमहातन्त्रम् (मूलमात्र) १५०/
८. धनदारतिप्रिया तन्त्र (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य : ५/-
९. मातृकाभेद तन्त्र (मूल एवं संस्कृत टिप्पणी सहित) १५/-
१०. त्रिपुरासार समुच्चय (नागभट्टकृत एवं गोविन्दाचार्य की संस्कृत टीका) १०/
११. बृहत् तन्त्रसार (मूलमात्र) मूल्य : १००
१२. सप्तशतीसर्वस्वम् मूल्य : ७५
१३. त्रिपुरातापिन्युपनिषद् एवं त्रिपुरोपनिषद् मूल्य : ५
१४. हनुमद्वडवानल स्तोत्र, हनुमल्लाङ्गूलास्त्र स्तोत्र एवं हनुमान साठिका मूल्य : २/-
१५. शिवस्वरोदय (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद सहित) २०/-
१६. शनिस्तोत्रावलि ४/-
१७. वामकेश्वरीमतम् (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद सहित) १५/-
१८. कौलज्ञाननिर्णय (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद सहित) ५०/-
१९. डामर तन्त्र (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद) ४५/-
२०. डामर तन्त्र (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) ३५/-
२१. मन्त्र रामायण (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) १५/-
२२. कामरत्नतन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य पेपर बैक ४०/- सजिल्द मूल्य ४५/-
२३. अद्भुत रामायण (महर्षि वाल्मीकि कृत) सजिल्द ३५.००
पेपर बैक ३०.००
२४. वङ्गसेन संहिता (मूल हिन्दी अनुवाद एवं परिशिष्ट सहित) मूल्य २००.००
२५. हारीत संहिता (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य : ८५/-